रूपेश ठाकुर प्रसाद पंचाङ्ग

जनवरी 1 2025 JANUARY

ISBN 978-93-85596-73-5

विक्रम संवत् 2081	श्रीशालिवाहन शाके 1946	फसली सन् 1432	इस्लामी हिजरी सन् 1446	बंगला संवत् 1431	नेपाली संवत् 1145
पौष शुक्ल 2 से माघ शुक्ल 2 तक। ता.14 से माघ मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय पौष 11 से माघ 11 तक। ता. 21 से माघ मास प्रारम्भ।	प्र. पूस 17 से प्र. माह 18 तक। ता. 14 से प्र. माघ मास प्रारम्भ।	जमादि उस्सानी 30 से सावान 1 तक। ता. 2 से रज्जब व ता. 31 से सावान माह शुरू।	पौष 16 से माघ 17 तक। ता.15 से माघ मास प्रारम्भ।	पौष 17 गते से माघ 18 गते तक। ता.14 से माघ मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			31		
16			योग		

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	31

भद्रा-विचार

ता.3 दिन 1:22 से रात 12:37 तक। ता.6 सायं 6:30 से रा.शे.5:21 तक। ता.9 रात 10:26 से ता.10 दिन 9:22 तक। ता.12 रा.शे.4:32 से ता.13 सा.4:7 तक। ता.16 दिन 3:50 से रात 4:11 तक। ता.20 दिन 8:50 से रात 9:54 तक। ता.23 रात 4:1 से ता.24 सायं 4:53 तक। ता.27 रात 7:21 से ता.28 प्रातः 7:16 तक।

तेजी-मंदी

गेहूँ, चना, जौ, चावल, सूतीवस्त्र गल्ला, रस पदार्थ तथा धातु व सोना-चाँदी में तेजी रहेगी। रूई, तिल, साग-सब्जी मन्दे होंगे।

मूल विचार

ता.6 को रेवती रात 7:36 से ता.8 को अश्विनी सायं 4:17 तक।

ता.15 को श्लेषा दिन 10:50 से ता.17 को मघा दिन 1:6 तक।

ता.24 को ज्येष्ठा रा.शे.5:14 से ता.27 को मूल प्रातः 7:56 तक।

सूर्य नक्षत्र

ता.11 को उ.षा. दिन 9:13 से।
ता.14 को मकर राशि दिन 3:26 से।
ता.24 को श्रवण दिन 10:22 से।

पंचक विचार

ता.3 को दि.12:6 से।
ता.7 को सायं 5:57 तक।

वार					
रवि SUN		पौष शुक्ल षष्ठी रात 8:45 तक **5** मु. 4 बंग. 20 / रा.15 नै. पौष 21 गते मीन चं. दिन 3:32 से, पू.भा. रात 9:11 तक	पौष शुक्ल चतुर्दशी रात 4:32 तक भद्रा **12** मु. 11 बंग. 27 / रा.22 नै. पौष 28 गते मिथुन चं. मृगशिरा दिन 11:7 तक	माघ कृष्ण पंचमी प्रातः 6:55 तक **19** मु. 18 बंग. 5 / रा. 29 नै. माघ 6 गते कन्या चं. उ.फा. सायं 5:10 तक	माघ कृष्ण द्वादशी रात 7:3 तक **26** गणतन्त्र दिवस मु. 25 बंग. 12 / रा.6 नै. माघ 13 गते धनु चं. प्रातः 6:49 से, ज्येष्ठा प्रा.6:49 तक
सोम MON		पौष शुक्ल सप्तमी सायं 6:30 तक भद्रा **6** मु. 5 बंग. 21 / रा.16 नै. पौष 22 गते मीन चं. उ.भा. रात 7:36 तक	पौष शुक्ल पूर्णिमा रात 3:42 तक भद्रा **13** पूर्णिमा मु. 12 बंग. 28 / रा.23 नै. पौष 29 गते कर्क चं. रात 4:30 से, आर्द्रा दिन 10:35 तक	माघ कृष्ण षष्ठी दिन 8:50 तक भद्रा **20** मु. 19 बंग. 6 / रा. 30 नै. माघ 7 गते कन्या चं. हस्त रात 7:38 तक	माघ कृष्ण त्रयोदशी रात 7:21 तक भद्रा **27** प्रदोष व्रत मु. 26 बंग. 13 / रा.7 नै. माघ 14 गते धनु चं. मूल प्रातः 7:56 तक
मंगल TUE		पौष शुक्ल अष्टमी सायं 4:11 तक **7** मु. 6 बंग. 22 / रा. 17 नै. पौष 23 गते मेष चं. सायं 5:57 से, रेवती सायं 5:57 तक	माघ कृष्ण प्रतिपदा रात 3:20 तक **14** मकर संक्रान्ति, खिचड़ी पर्व मु. 13 बंग. 29 / रा. 24 नै. माघ 1 गते कर्क चं. पुनर्वसु दिन 10:29 तक	माघ कृष्ण सप्तमी दिन 10:58 तक **21** मु. 20 बंग. 7 / रा. 1 नै. माघ 8 गते तुला चं. दिन 8:57 से, चित्रा रात 10:16 तक	माघ कृष्ण चतुर्दशी रात 7:10 तक भद्रा **28** मु. 27 बंग. 14 / रा.8 नै. माघ 15 गते मकर चं. दिन 2:35 से, पू.षा. दिन 8:33 तक
बुध WED	पौष शुक्ल द्वितीया रात 3:11 तक **1** चन्द्रदर्शन मुस्लिम 30 बंगला 16 / राष्ट्रीय 11 नेपाली पौष 17 गते मकर चं. प्रा.6:56 से, उ.षा. रात 12:57 तक	पौष शुक्ल नवमी दिन 1:49 तक **8** मु. 7 बंग. 23 / रा. 18 नै. पौष 24 गते मेष चं. अश्विनी सायं 4:17 तक	माघ कृष्ण द्वितीया रात 3:29 तक **15** मु. 14 बंग. 1 / रा. 25 नै. माघ 2 गते कर्क चं. पुष्य दिन 10:50 तक	माघ कृष्ण अष्टमी दिन 1:8 तक **22** मु. 21 बंग. 8 / रा. 2 नै. माघ 9 गते तुला चं. स्वाती रात 12:49 तक	माघ कृष्ण अमावस्या सायं 6:28 तक **29** अमावस्या मु. 28 बंग. 15 / रा. 9 नै. माघ 16 गते मकर चं. उ.षा. दिन 8:40 तक
गुरु THU	पौष शुक्ल तृतीया रात 2:6 तक **2** मु. 1 बंग. 17 / रा. 12 नै. पौष 18 गते मकर चं. श्रवण रात 12:30 तक	पौष शुक्ल दशमी दिन 11:31 तक भद्रा **9** मु. 8 बंग. 24 / रा. 19 नै. पौष 25 गते वृष चं. रात 8:18 से, भरणी दिन 2:39 तक	माघ कृष्ण तृतीया रात 4:11 तक भद्रा **16** मु. 15 बंग. 2 / रा. 26 नै. माघ 3 गते सिंह चं. दिन 11:43 से, श्लेषा दिन 11:43 तक	माघ कृष्ण नवमी दिन 3:9 तक भद्रा **23** सुभाष जयन्ती मु. 22 बंग. 9 / रा. 3 नै. माघ 10 गते वृश्चिक चं. रात 8:36 से, विशाखा रात 3:12 तक	माघ शुक्ल प्रतिपदा सायं 5:21 तक **30** चन्द्रदर्शन मु. 29 बंग. 16 / रा. 10 नै. माघ 17 गते कुम्भ चं. रात 7:59 से, श्रवण दिन 8:21 तक
शुक्र FRI	पौष शुक्ल चतुर्थी रात 12:37 तक भद्रा **3** मु. 2 बंग. 18 / रा. 13 नै. पौष 19 गते कुम्भ चं. दिन 12:6 से, धनिष्ठा रात 11:42 तक	पौष शुक्ल एकादशी दिन 9:22 तक भद्रा **10** एकादशी व्रत मु. 9 बंग. 25 / रा. 20 नै. पौष 26 गते वृष चं. कृत्तिका दिन 1:13 तक	माघ कृष्ण चतुर्थी रा.शे. 5:18 तक **17** माघ गणेश चतुर्थी व्रत मु. 16 बंग. 3 / रा. 27 नै. माघ 4 गते सिंह चं. मघा दिन 1:6 तक	माघ कृष्ण दशमी सायं 4:53 तक भद्रा **24** मु. 23 बंग. 10 / रा. 4 नै. माघ 11 गते वृश्चिक चं. अनुराधा रा.शे. 5:14 तक	माघ शुक्ल द्वितीया दिन 3:50 तक **31** मु. 1 बंग. 17 / रा. 11 नै. माघ 18 गते कुम्भ चं. धनिष्ठा प्रातः 7:36 तक / शतभिषा रा.शे. 6:32 तक
शनि SAT	पौष शुक्ल पंचमी रात 10:49 तक **4** मु. 3 बंग. 19 / रा. 14 नै. पौष 20 गते कुम्भ चं. शतभिषा रात 10:35 तक	पौष शुक्ल द्वादशी प्रातः 7:26 तक / त्रयोदशी रा.शे. 5:49 तक **11** प्रदोष व्रत मु. 10 बंग. 26 / रा. 21 नै. पौष 27 गते मिथुन चं. रात 11:34 से, रोहिणी दिन 12:0 तक	माघ कृष्ण पंचमी समस्त **18** मु. 17 बंग. 4 / रा. 28 नै. माघ 5 गते कन्या चं. रात 9:30 से, पू.फा. दिन 2:56 तक	माघ कृष्ण एकादशी सायं 6:11 तक **25** एकादशी व्रत मु. 24 बंग. 11 / रा. 5 नै. माघ 12 गते वृश्चिक चं. ज्येष्ठा समस्त	**विवाह-मुहूर्त** ता.16,17,18,19, 20, 21,22,23,24,26।

तारीख :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
सूर्योदय :	6:46	46	46	46	46	45	45	45	44	44	44	43	43	43	42	42	41	41	41	40	40	39	39	38	38	37	36	36	35	35	34
सूर्यास्त :	5:14	14	14	14	14	15	15	15	16	16	16	17	17	17	18	18	19	19	19	20	20	21	21	22	22	23	24	24	25	25	26

व्रत-त्यौहार

1.बुध-ईसाई नववर्ष आरम्भ, चन्द्रदर्शन।
3.शुक्र-वैना.गणेश चतुर्थी व्रत।
5.रवि-स्कन्द षष्ठी व्रत, गुरु गोविन्द सिंह जयंती-नवीन मत।
6.सोम-गुरु गोविन्द सिंह जयंती-प्राचीन मत।
10.शुक्र-पुत्रदा एकादशी व्रत-सबका।
11.शनि-शनि प्रदोष व्रत, उ.षा. के सूर्य दिन 9:13।
12.रवि-स्वा.विवेकानन्द जयंती।
13.सोम-स्नान दान व्रत की पूर्णिमा, लोहड़ी-पंजाब, भोगी-द.भा.।
14.मंगल-मकर संक्रांति दिन 3:26 खिचड़ी पर्व पु.काल, खरमास समाप्त, महाकुंभ प्रयाग मेला आरंभ।
16.गुरु-सौभाग्य सुन्दरी तीज व्रत।
17.शुक्र-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रात 8:47।
21.मंगल-स्वा.विवेकानन्द जयंती-प्राचीन मत।
23.गुरु-सुभाषचन्द्र बोस जयंती।
24.शुक्र-श्रवण के सूर्य दिन 10:22।
25.शनि-षट्तिला एकादशी व्रत।
26.रवि-तिल द्वादशी, गणतन्त्र दिवस।
27.सोम-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, मेरु त्रयोदशी-जैन।
28.मंगल-मु.पर्व शबे मिराज।
29.बुध-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, मौनी अमावस्या, कुंभ पर्व स्नान।
30.गुरु-चन्द्रदर्शन, गुप्त नवरात्रारम्भ।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि - फल

मेष- झगड़ा-विवाद से दूर रहे, खर्च में वृद्धि होगी, मानसिक व्यथा हो सकती है।
वृष- कष्टदायक यात्रा करनी पड़ेगी, व्यवहार में कमी आयेगी।
मिथुन-स्वास्थ्य में बाधा, अधिक खर्च से मानसिक तनाव उत्पन्न होगा।
कर्क- स्वजनों तथा मित्रों से वियोग होगा, शनि के ढैया के कारण शत्रु प्रबल होंगे।
सिंह- स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, महत्त्वपूर्ण कार्यों में अवरोध होगा।
कन्या- कार्यों में बाधा अथवा विलम्ब होगा, व्यर्थ विवाद से अशांति रहेगी।
तुला- आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, कृषि क्षेत्र में अच्छा लाभ होगा।
वृश्चिक-शनि की ढैया के कारण संघर्ष करना पड़ेगा, प्रगतिपूर्ण कार्य में विघ्न पड़ेगा।
धनु- यह माह उत्तम रहेगा, व्यवसाय तथा रोजगार में वृद्धि होगी।
मकर- शनि का साढ़े साती का प्रभाव उग्र रहेगा, वाहन दुर्घटना, अनावश्यक विवाद सम्भव।
कुम्भ- शनि की साढ़े साती का प्रभाव रहेगा, स्वास्थ्य संबंधी परेशानी बढ़ेगी।
मीन- इस राशि वालों को हृदय, पर शनि की साढ़े साती का प्रभाव रहेगा।

आकाशी-लक्षण

मासारम्भ में घना कुहरा, पहाड़ों पर वर्फबारी, पूर्व-पश्चिम व दक्षिण प्रान्तों में अच्छी वर्षा, उत्तर भारत व कश्मीर में शीत लहर एवं उ.प्र., बिहार, उत्तराखण्ड कोहरा, धुंध की चपेट में रहेगा। तुषार पाला से फसल की हानि होगी।

दिसम्बर-2024

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18		
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

फरवरी-2025

रवि		2	9	16	23
सोम			10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5		19	
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	

पंचांग पर अपना नाम छपवाकर बाँटने वाले इच्छुक व्यक्ति (100 प्रति से अधिक) प्रकाशक से सम्पर्क करें 07233013544

पूजा-पाठ, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, वेद-पुराण के प्रकाशक एवं विक्रेता
रूपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन
कचौड़ीगली, वाराणसी-1
फोन : 2392543, 2392471
E-Mail : rupeshpanchang@gmail.co

स्व० बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त

एक परिचय

(1)

जन्म जिला आरा शुभ सुन्दर चेनारी ग्राम,
सम्प्रति परिवार काशी धाम में आबाद है।
अग्रवाल कुल के दिवाकर प्रकाशक हैं,
भक्तों में जैसे सुन्दर भक्त प्रह्लाद हैं।
भोजपुरी भाषा के सच्चे समुद्धारक,
दर्शन से जिनके सदा मिटते विषाद हैं।
ऐसे धर्म-प्राण सहकारिता उदारता के,
अमर स्वर्गीय बाबू ठाकुर प्रसाद हैं॥

(2)

धन्य हैं पिताजी बाबू श्रीरामधनी लाल,
जिनके प्रसाद-रूप ठाकुर प्रसाद हैं।
जिनकी प्रथम पत्नी से चार रत्न प्राप्त हुए,
गणेश, पुरुषोत्तम, मुकुन्द और कैलाश हैं।
पत्नी द्वितीया जिनकी उनसे भी चार पुत्र,
द्वारिका, कन्हैया, नारायण, दिनेश हैं।
छोड़ गये पीछे भरा-पूरा परिवार सुन्दर,
पिता के प्रशिक्षण निर्देशन में लीन हैं॥

(3)

ऐसे पितृ-भक्त सभी सेवा-परायण हैं,
ठाकुर प्रसादजी की महिमा दिखाई है।
बड़े-बड़े पण्डित मनीषियों का वरद हस्त,
जिनकी कृपा से आज कीर्ति छवि छायी है।
जब तक रहेंगे सूर्य-चन्द्र नभ-मण्डल में,
तब तक रहेगा नाम बजती बधाई है।
ठाकुर प्रसादजी का सुन्दर परिवार देखि,
हर्षित शिवदेवगण दुन्दुभि बजाई है॥

दोहा

अनुदिन नित बढ़ता रहे, श्री ठाकुर परिवार।
प्रभु से 'श्रीशिवदत्त' यह बिनवत बारहिं बार॥

धर्मप्राण स्वर्गीय बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त

औद्योगिक संस्थानों की समुन्नति के सन्दर्भ में जिस प्रकार यशस्वी उद्योगपतियों के नाम अविस्मरणीय हैं, ठीक उसी प्रकार जन-साहित्य के प्रशस्त प्रकाशन से सम्बन्धित विमल व्यवसाय में स्व. बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त का नाम शिक्षित-समुदाय के हृदय-पटल पर अंकित है।

भोजपुरी भाषा के सरस प्रकाशन को जन-जन तक पहुँचाने का एक मात्र श्रेय बाबू साहब को ही है। इनके समान सम्पूर्ण भारत का कोई दूसरा भोजपुरी साहित्य का प्रकाशक दृष्टिगोचर नहीं होता। अतः इस सन्दर्भ में स्व0 बाबू साहब को यदि भोजपुरी साहित्य का समुद्धारक कहा जाये, तो सम्भवतः कोई अति-शयोक्ति न होगी। व्यावहारिकता, उदारता एवं सौजन्यता की तो आप प्रतिमूर्ति ही थे।

आप अपने पीछे पुत्रों एवं पौत्रों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गये। आप ही के पूर्व प्रशिक्षण एवं निर्देशानुसार आपके द्वारा संस्थापित व्यापारिक संस्थान को उत्तराधिकारी कुशलता के साथ संचालित कर रहे हैं। हम इस परिवार तथा संस्थान की सुख-समृद्धि हेतु जगज्जननी माँ से अनवरत प्रार्थना करते हैं।

-सम्पादक

वर्ष में पड़ने वाले विभिन्न योगों के फल

1. **सर्वार्थसिद्धि योग**–ये समस्त कार्यों के लिए सिद्ध माने गये हैं।
2. **अमृत सिद्धि योग**–ये वार और नक्षत्र के योग से बनते हैं, ये सभी कार्यों के लिए प्रशस्त हैं किंतु रविवार को पंचमी, सोमवार को षष्ठी, मंगल को सप्तमी, बुधवार को अष्टमी, गुरुवार को नवमी, शुक्रवार को दशमी, शनिवार को एकादशी से ये अमृत सिद्धि योग, "**विषयोग**" हो जाते हैं।
3. **द्विपुष्कर योग**–ये भी तिथि-नक्षत्र एवं वार के संयोग से बनते हैं, ये योग लाभ और हानि में दो गुना फल देते हैं।
4. **त्रिपुष्कर योग**–ये भी द्विपुष्कर के अनुसार बनते हैं तथा लाभ और हानि में तिगुना फल देते हैं।
5. **राजयोग**–ये भी वार, तिथि, नक्षत्र के योग से बनते हैं। ये धार्मिक, मांगलिक एवं पौष्टिक कार्यों के लिए प्रशस्त माने गये हैं।
6. **व्यतिपात योग**–ये सभी शुभ कार्यों के लिए वर्जित हैं।
7. **रवि योग**–यह समस्त कार्यों के लिए प्रशस्त माने गये हैं। ये सूर्य नक्षत्र एवं दैनिक नक्षत्र के योग से बनते हैं।

शुभ कार्यों में वर्जित समय विचार

देवशयन–आषाढ़ शुक्ल 11 से कार्तिक शुक्ल 11 तक देवता शयन करते हैं। इन्हें देवशयन या चातुर्मास कहते हैं, इन दिनों में विवाह, उपनयन, गृहारम्भ, शान्ति, पौष्टिक कर्म, देव-स्थापना आदि का निषेध है।

होलाष्टक–होली से 8 दिन पूर्व (फाल्गुन शुक्ल अष्टमी) से होलाष्टक माना गया है। इसमें कुछ क्षेत्रों में (सतलज, रावी, व्यास नदियों के तथा पुष्कर सरोवर के तटवर्ती भाग में) विवाहादि मांगलिक कार्य वर्जित है। अन्य क्षेत्रों में वर्जित नहीं है।

गुरु एवं शुक्र के अस्त तथा खरमास में वर्जित कार्य–विवाह, मुण्डन (चौल), उपनयन, कर्णछेदन, दीक्षा ग्रहण, गृह प्रवेश, द्विरागमन, वधू प्रवेश, देव प्रतिष्ठा, कुँआ, जलाशय खोदना, चातुर्मास उत्सर्ग इत्यादि कृत्य वर्जित हैं।

भद्रा दोष–विवाह, गृहारम्भ, गृह प्रवेश तथा मांगलिक कार्य वर्जित हैं, पूर्वार्ध दिन की भद्रा रात में तथा उत्तरार्ध की भद्रा दिन में शुभ कार्य के लिए मान्य है।

महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ

1. पूजागृह में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शङ्ख, दो सूर्य प्रतिमा, तीन देवी प्रतिमा, दो गोमती-चक्र और दो शालिग्राम का पूजन नहीं करना चाहिये।
2. घर में 9 इंच (22 सेंटीमीटर) से छोटी देव-प्रतिमा होनी चाहिये। इससे बड़ी प्रतिमा घर में शुभ नहीं होती है, उसे मंदिर में रखना चाहिये।
3. परिक्रमा देवी की एक बार, सूर्य की सात बार, गणेश की तीन बार, विष्णु की चार बार तथा शिव की आधी परिक्रमा करनी चाहिए।
4. आरती करते समय भगवान् विष्णु के समक्ष बारह बार, सूर्य के समक्ष सात, दुर्गा के समक्ष नौ, शंकर के समक्ष ग्यारह और गणेश के समक्ष चार बार आरती घुमानी चाहिए।
5. पूजा करते समय केवल भूमि पर न बैठें। आसन जरूर बिछावें।
6. शिलान्यास सर्वप्रथम आग्नेय दिशा में होना चाहिये। शेष निर्माण प्रदक्षिण-क्रम से करना चाहिये। मध्याह्न, मध्य रात्रि और सन्ध्याकाल में नींव न रखें।
7. पूर्व, उत्तर और ईशान दिशा में नीची भूमि सबके लिये अत्यंत लाभप्रद होती है। अन्य दिशाओं में नीची भूमि सबके लिये हानिकारक होती है।
8. घर के उत्तर प्लक्ष (पाकड़), पूर्व में वटवृक्ष, दक्षिण में गुलर और पश्चिम में पीपल का वृक्ष शुभप्रद होता है। पेड़ की छाया घर पर नहीं पड़नी चाहिये।
9. ईंट, लोहा, पत्थर, मिट्टी और लकड़ी-ये नये मकान में नये ही लगाने चाहिये। एक मकान की सामग्री को दूसरे मकान में लगाना अत्यंत हानिकारक है।
10. सोने के समय सदा पूर्व अथवा दक्षिण दिशा की ओर सिर रखना चाहिये।
11. प्रतिदिन माथे पर तिलक, चंदन लगाकर ही कार्य के लिये निकलें।

विक्रम संवत् के अनुसार बारह मासों के नाम

1.चैत्र, 2. वैशाख, 3. ज्येष्ठ, 4.आषाढ़, 5. श्रावण, 6. भाद्रपद (भादों), 7.आश्विन (कुवार), 8.कार्तिक, 9. मार्गशीर्ष (अगहन), 10.पौष, 11. माघ, 12.फाल्गुन।

पक्ष क्या है

विक्रम संवत् के हर मास (चंद्रमास) में दो पक्ष होते हैं—

(1) **शुक्ल पक्ष (सुदी)**–अमावस्या के बाद प्रतिपदा से पूर्णिमा तक की तिथियों को शुक्ल पक्ष कहते हैं। यानि अमावस्या के बाद बढ़ता हुआ चन्द्रमा पूर्णिमा तक शुक्ल पक्ष का सूचक है।

(2) **कृष्ण पक्ष (बदी)**–पूर्णिमा के बाद से अमावस्या तक की तिथियों को कृष्ण पक्ष कहते हैं। यानि पूर्णिमा के बाद घटता हुआ चन्द्रमा अमाव- स्या तक कृष्ण पक्ष का सूचक है।

पूरे मास की तिथियों के नाम

(1) प्रतिपदा, (2) द्वितीया, (3) तृतीया, (4) चतुर्थी, (5) पंचमी, (6) षष्ठी, (7) सप्तमी, (8) अष्टमी, (9) नवमी, (10) दशमी, (11) एकादशी, (12) द्वादशी, (13) त्रयोदशी, (14) चतुर्दशी, (15) पूर्णिमा एवं (30) अमावस्या।

नोट–पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा से चतुर्दशी तक पूर्वानुसार तिथियों के नाम एवं अंक चलते हैं। अमावस्या को 30 लिखते हैं।

राशियों के आराध्य देव

मेष-श्री गजानन। **वृष**-कुलस्वामिनी।
मिथुन-कुबेर। **कर्क**-शंकर जी।
सिंह-सूर्य। **कन्या**-कुबेर।
तुला-कुलस्वामिनी। **वृश्चिक**-गणपति।
धनु-दत्तात्रेय। **मकर**-शनि, हनुमान्।
कुंभ-शनि, हनुमान्। **मीन**-दत्तात्रेय।

राशिबोधक चक्र

मेष	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ
वृष	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
मिथुन	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा
कर्क	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
सिंह	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
कन्या	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
तुला	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
वृश्चिक	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
धनु	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फ	ढ	भे
मकर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
कुम्भ	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
मीन	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची

नोट : जिसके नाम के पहले अक्षर जिन वर्गों में मिलेंगे वही उनकी राशि होगी।

स्मार्त एवं वैष्णव

स्मार्त कौन–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, गृहस्थ जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक हैं, ये सभी स्मार्त हैं। पंचदेव विष्णु, शिव, गणेश, शक्ति तथा सूर्य कहलाते हैं।

वैष्णव कौन–जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्त मुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख, चक्र अंकित करवाये हैं, साधु संन्यासी, विधवा स्त्री, विष्णु उपासक को ही शास्त्र में वैष्णव कहा गया है।

चार अनबूझ मुहूर्त

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 2. अक्षय तृतीया, 3. दशहरा, 4. दीपावली (सायंकाल के बाद दीप प्रकाश में)। उपरोक्त मुहूर्तों को बोल चाल की भाषा में अनबूझ मुहूर्त कहते हैं। इन मुहूर्तों में कोई भी काम शुरू करने पर विजय प्राप्त होती है। लेकिन विवाह आदि कार्य के लिए पञ्चाङ्ग में दिये मुहूर्तों को ही स्वीकार करें।

किस माला से जाप करें

रुद्राक्ष की माला–श्रीगायत्री, श्रीदुर्गा, श्रीशिव जी, श्रीगणेश जी, श्रीकार्तिकेय, पार्वती जी।

तुलसी की माला–श्रीराम, श्रीकृष्ण, सूर्यनारायण, वामन, श्रीनृसिंह जी।

स्फटिक की माला–श्रीदुर्गा जी, श्रीसर-स्वती, श्रीगणेश जी।

सफेद चन्दन की माला–सभी देवी-देवताओं का जाप कर सकते हैं।

लाल चन्दन–श्रीदुर्गा जी।

कमलगट्टे की माला–श्रीलक्ष्मी जी।

हल्दी माला–श्रीबगलामुखी जी।

- **भगवान् को चढ़ने वाला पूजा अवशेष सामान-गंगा, आदि पवित्र नदियों में नहीं डालना चाहिए। ऐसा करने से वे देवी देवता रुष्ट होते हैं।**
- **भगवती लक्ष्मी आदि देवताओं का वास वहीं होता है जहाँ स्वच्छता व श्रद्धा होती है, अतः अपनी उन्नति व सुख के लिये अपने आस-पास पेड़-पौधे लगाये व सफाई का ध्यान रखें।**
- **व्यापारिक उन्नति के लिये अपने व्यवसाय में कुछ नयापन व गुणवत्ता पर ध्यान दें।**
- **किसी भी प्रकार के सट्टा-जुआ व्यापार व बेइमानी से पूँजी, बुद्धि विवेक व व्यापार को नष्ट कर देता है।**

Thakurprasad.com

रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

पंचांग पर अपना नाम छपवाकर बाँटने वाले इच्छुक (100 प्रति से अधिक) कीटि, क्लब, संस्था व व्यापारिक वर्ग प्रकाशक से सम्पर्क करें 07233013544, उन्हें पंचांग उचित मूल्य पर दिया जायेगा।

कचौड़ीगली, वाराणसी, फोन नं. : 0542-2392543, 2392471

फरवरी 2 2025 FEBRUARY

विक्रम संवत् 2081	श्रीशालिवाहन शाके 1946	फसली सन् 1432	इस्लामी हिजरी सन् 1446	बंगला संवत् 1431	नेपाली संवत् 1145
माघ शुक्ल 3 से फाल्गुन शुक्ल 1 तक। ता. 13 से फाल्गुन मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय माघ 12 से फाल्गुन 9 तक। ता. 20 से फाल्गुन मास प्रारम्भ।	प्र. माह 19 से प्र. फागन 16 तक। ता. 13 से प्र. फागन मास प्रारम्भ।	सावान 2 से सावान 29 तक।	माघ 18 से फाल्गुन 16 तक। ता. 13 से फाल्गुन मास प्रारम्भ।	माघ 19 गते से फाल्गुन 16 गते तक। ता. 13 से फाल्गुन मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			योग		
14					
15					
16					

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28			

भद्रा-विचार

ता.1 रात 12:56 से ता.2 दिन 11:53 तक। ता.4 रा.शे. 4:54 से ता.5 दिन 3:45 तक। ता.8 दिन 9:43 से रात 8:55 तक। ता.11 सायं 6:30 से ता.12 प्रातः 6:36 तक। ता.15 दिन 9:24 से रात 10:13 तक। ता.18 रा.शे.4:25 से ता.19 सायं 5:23 तक। ता.22 रात 9:42 से ता.23 दिन 10:5 तक। ता.26 दिन 9:19 से रात 8:44 तक।

तेजी-मंदी

धान्य-गल्ला, शक्कर, गुड़, तेल, घी में तेजी के बाद मन्दी आयेगी। सोना, चाँदी में तेजी, गेहूँ, चावल, रुई, वस्त्र में तेजी के बाद मंदी रहेगी।

मूल विचार

ता.2 को रेवती रात 3:39 से ता.4 को अश्विनी रात 12:20 तक। ता.11 को श्लेषा सायं 6:23 से ता.13 को मघा रात 8:27 तक। ता.21 को ज्येष्ठा दिन 12:30 से ता.23 को मूल दिन 3:26 तक।

सूर्य नक्षत्र

ता.6 को धनिष्ठा दिन 12:35 से। ता.12 को कुम्भ राशि रा.शे. 2:11 से। ता.19 को शतभिषा सायं 4:12 से।

पंचक विचार

मासारम्भ से ता.3 को रात 2:0 तक। ता.26 को रात 3:50 से मासान्त तक।

वार				
रवि SUN		माघ शुक्ल चतुर्थी दिन 11:53 तक, भद्रा, **2**, मीन चं. उ.भा. रात 3:39 तक	माघ शुक्ल द्वादशी रात 7:41 तक, **9**, मिथुन चं. आर्द्रा सायं 6:21 तक	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी रात 12:9 तक, **16**, गणेश चतुर्थी व्रत, कन्या चं. हस्त रात 2:46 तक	फाल्गुन कृष्ण दशमी दिन 10:5 तक, भद्रा, **23**, धनु चं. मूल दिन 3:26 तक
सोम MON		माघ शुक्ल पंचमी दिन 9:36 तक, **3**, वसंत पंचमी, सरस्वती पूजा, मेष चं. रात 2:0 से, रेवती रात 2:0 तक	माघ शुक्ल त्रयोदशी सायं 6:51 तक, **10**, प्रदोष व्रत, कर्क चं. दि. 12:11 से, पुनर्वसु सा. 6:8 तक	फाल्गुन कृष्ण पंचमी रात 2:16 तक, **17**, तुला चं. सायं 4:3 से, चित्रा रा.शे. 5:22 तक	फाल्गुन कृष्ण एकादशी दिन 10:20 तक, **24**, एकादशी व्रत, मकर चं. रात 10:14 से, पू.षा. सायं 4:10 तक
मंगल TUE		माघ शुक्ल षष्ठी, भद्रा, **4**, मेष चं. अश्विनी रात 12:20 तक	माघ शुक्ल चतुर्दशी सायं 6:30 तक, भद्रा, **11**, कर्क चं. पुष्य सायं 6:23 तक	फाल्गुन कृष्ण षष्ठी रात 4:25 तक, भद्रा, **18**, तुला चं. स्वाती समस्त	फाल्गुन कृष्ण द्वादशी दिन 10:5 तक, **25**, प्रदोष व्रत, मकर चं. उ.षा. सायं 4:25 तक
बुध WED		माघ शुक्ल अष्टमी रात 2:36 तक, भद्रा, **5**, वृष चं. दिन 4:20 से, भरणी रात 10:42 तक	माघ शुक्ल पूर्णिमा सायं 6:42 तक, भद्रा, **12**, रविदास जयन्ती, कुम्भ संक्रान्ति, सिंह चं. रात 7:10 से, श्लेषा रात 7:10 तक	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी समस्त, **19**, वृश्चिक चं. रात 3:46 से, स्वाती प्रातः 7:57 तक	फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी दिन 9:19 तक, भद्रा, **26**, महाशिवरात्रि व्रत, कुम्भ चं. रात 3:50 से, श्रवण सायं 4:10 तक
गुरु THU		माघ शुक्ल नवमी रात 12:28 तक, **6**, वृष चं. कृत्तिका रात 9:13 तक	फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा रात 7:25 तक, **13**, सिंह चं. मघा रात 8:27 तक	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी प्रातः 6:22 तक, **20**, वृश्चिक चं. विशाखा दिन 10:22 तक	फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी दिन 8:9 तक, **27**, अमावस्या, कुम्भ चं. धनिष्ठा दिन 3:29 तक
शुक्र FRI		माघ शुक्ल दशमी रात 10:32 तक, **7**, वृष चं. रोहिणी रात 7:56 तक	फाल्गुन कृष्ण द्वितीया रात 8:35 तक, **14**, कन्या चं. रात 4:43 से, पू.फा. रात 10:10 तक	फाल्गुन कृष्ण अष्टमी दिन 8:2 तक, **21**, वृश्चिक चं. अनुराधा दिन 12:30 तक	फाल्गुन कृ. अमावस्या, **28**, अमावस्या, कुम्भ चं. शतभिषा दिन 2:30 तक
शनि SAT	माघ शुक्ल तृतीया दिन 1:59 तक, भद्रा, **1**, मीन चं. रात 11:16 से, पू.भा. रा.शे. 5:12 तक	माघ शुक्ल एकादशी रात 8:55 तक, भद्रा, **8**, एकादशी व्रत, मिथुन चं. प्रातः 7:27 से, मृगशिरा सायं 6:59 तक	फाल्गुन कृष्ण तृतीया रात 10:13 तक, भद्रा, **15**, कन्या चं. उ.फा. रात 12:20 तक	फाल्गुन कृष्ण नवमी दिन 9:17 तक, भद्रा, **22**, धनु चं. दिन 2:12 से, ज्येष्ठा दिन 2:12 तक	**विवाह मुहूर्त** ता.1,2,3,6,7,8,12, 13,14,15,16, 17,18,19,20, 21,22,23,24, 25।

तारीख :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
सूर्योदय :	6:34	33	32	32	31	31	30	29	29	28	27	27	26	25	25	24	23	23	22	21	20	20	19	18	18	17	16	15
सूर्यास्त :	5:26	27	28	28	29	29	30	31	31	32	33	33	34	35	35	36	37	37	38	39	40	40	41	42	42	43	44	45

व्रत-त्यौहार

1.शनि-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, तिल चौथ, वरद चतुर्थी।
3.सोम-वसंत पंचमी, सरस्वती पूजा, वागीश्वरी देवी प्राकट्योत्सव।
4.मंगल-अचला सप्तमी व्रत, रथ सप्तमी, सूर्य पूजा।
6.गुरु-महानन्दा नवमी, धनिष्ठा के सूर्य दिन 12:35, हरसू ब्रह्मदेव जयंती-चैनपुर।
8.शनि-जया एकादशी व्रत-सबका।
9.रवि-आमलकी द्वादशी, तिल द्वादशी।
10.सोम-सोम प्रदोष व्रत।
12.बुध-स्नान दान व्रत की माघी पूर्णिमा, कुम्भ संक्राति रा.शे. 2:11, संत रविदास जयंती।
13.गुरु-मु.पर्व शबेबरात।
16.रवि-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 9:12।
19.बुध-शतभिषा के सूर्य सा. 4:12।
21.शुक्र-सीताष्टमी व्रत, जानकी प्राकट्योत्सव।
23.रवि-स्वा.दयानन्द सरस्वती जयंती।
24.सोम-विजया एकादशी व्रत सबका।
25.मंगल-भौम प्रदोष व्रत।
26.बुध-महाशिवरात्रि व्रत, वैद्यनाथ प्राकट्योत्सव, काशी विश्वनाथ दर्शन-पूजन।
27.गुरु-श्राद्ध की अमावस्या।
28.शुक्र-स्नान दान की अमावस्या।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

मेष- बौद्धिक क्षमता में कमी आयेगी, जीवन में कई काम बन जायेंगे।
वृष- बना बनाया काम प्रभावित होगा, नौकरी व व्यवसाय में परिवर्तन होगा।
मिथुन-नेत्र विकार से कष्ट, भूमि-सम्पत्ति-वाहन क्रय-विक्रय में प्रगति होगी।
कर्क- कुटुम्ब में कलह बढ़ेगा, कार्यों में बाधायें, मानसिक अशांति रहेगी।
सिंह- सामाजिक कार्यों में अरुचि होगी, माता-पिता के स्वास्थ्य में बाधा होगी।
कन्या- व्यवसाय में हानि हो सकती है, स्वजनों तथा मित्रों से सहयोग मिलेगा।
तुला- वित्तीय लेन-देन में सतर्क रहें, नौकरी में उन्नति का योग है।
वृश्चिक-स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा, दुर्घटना तथा अनावश्यक विवाद से कष्ट होगा।
धनु- पदोन्नति सम्भव है, कारोबार में मंदी, सरकारी कर्मचारियों की व्यस्तता रहेगी।
मकर- यह माह संघर्षपूर्ण रहेगा, उन्नति पूर्ण कार्यों एवं व्यवसाय में बाधा सम्भव है।
कुम्भ- श्वाँस व उदर रोग से कष्ट होगा, अन्य स्त्रोत से आकस्मिक लाभ होगा।
मीन- हृदय व पेट की बीमारी बढ़ सकती है, कारोबार में मंदी, यात्रा में कष्ट सम्भव है।

आकाशी-लक्षण

पर्वतों पर बर्फबारी, उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रों में तेज हवा के साथ वर्षा, उत्तर व मध्य भारत में हाड़ कपाऊँ सर्दी, कोहरा-पाला से फसल की हानि, उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रों में वर्षा का अभाव होगा।

जनवरी-2025

रवि		5	12	19	
सोम		6	13	20	27
मंगल		7		21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16		30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

विज्ञापन 2025

← विज्ञापन हेतु स्थान-10½" × 2"

पंचांग पर नाम पता छपवाकर बाँटने वाले इच्छुक कीटि, क्लब, संस्था व व्यापारिक वर्ग प्रकाशक से सम्पर्क करें पंचांग साइज 11"×17" चार रंग में छपा हुआ। मो. नं. 07233013544 0542-2392543,2392471

मार्च-2025

रवि		2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6		20	27
शुक्र		7		21	28
शनि	1	8		22	29

Joint pains — सुबह की धूप, अण्डा, मछली, कालातिल, मशरूम, दही

जोड़ों के दर्द का घरेलू उपचार

विस्तृत रोग + दवा दिसम्बर के पीछे देखें।

कीवी, सन्तरा, शकरकन्द, शिमलामिर्च

जोड़ों का दर्द विटामिन D3 और कैल्शियम की कमी से होता है।

नवग्रह पीड़ा (रोग) निवारणार्थ यन्त्र-मन्त्र-रत्न एवं जड़ी धारण तथा व्यावसायिक वस्तुएँ

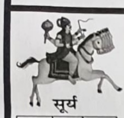

सूर्य

6	1	8
7	5	3
2	9	4

सूर्य की पीड़ा से – बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट सम्बन्धी बिमारियाँ, आँखों की बिमारी, चर्मरोग, घाव लगना, दौरे पड़ना तथा हिस्टीरिया आदि।

वैदिक जप मन्त्र—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

तांन्त्रिक मन्त्र— ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।

जप संख्या—7 हजार। कलियुग में जप संख्या—28 हजार।

मध्य भाग्य, वर्तुल मण्डल, अंगुल 12, कलिंग देश, कश्यप गोत्र, रक्त वर्ण सिंह राशि का स्वामी।

वाहन—सप्ताश्व। समिधा—मदार।

दान-द्रव्य—माणिक्य, सोना, ताँबा, गेहूँ, घी, गुड़, केशर, लाल कपड़ा, लाल फूल, मूँगा लाल, गौ लाल तथा चन्दन लाल।

दान का समय—रविवार को अरुणोदय (सूर्योदय) काल।

धारण रत्न—माणिक्य 3 या 4 रत्ती।

उपरत्न—तामड़ा या कण्टकिज धारण करें। इसके अभाव में सूर्य का यन्त्र अथवा बिल्व वृक्ष की जड़ गले या बाहु में धारण करें।

व्यावसायिक पदार्थ—राज्य प्रशासनिक कार्य, इमारती लकड़ी, सोना, रूई, अनाज।

व्रत उपवास— सूर्यदेव की प्रसन्नता हेतु रविवार का व्रत करें तथा इसमें लाल फूल अर्पित करना चाहिए।

विशेष जानकारी के लिए 'रविवार व्रत कथा' मँगाकर पढ़ें।

चन्द्र

7	2	9
8	6	4
3	10	5

चन्द्र की पीड़ा से—अनिद्रा, कफ सम्बन्धी, पाचन संस्थान का बिगड़ना, अजीर्ण, ठंढक, बुखार, गठिया, मानसिक असन्तुलन, पेट की बिमारियाँ, जलघात तथा जानवरों का हमला इत्यादि।

वैदिक जप मन्त्र—ॐ इमं देवा ऽअसपत्न ठं.सुवध्वं महते क्षत्राय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्यै पुत्रम मुस्यै विष एष वोऽमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ठं. राजा॥

तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः।

जप संख्या— 11 हजार। कलियुग में जप संख्या— 44 हजार।

अग्निकोण, चतुरस्त्र मण्डल, अंगुल 4, यमुना तटवर्ती देश, अत्रि गोत्र, श्वेत वर्ण। कर्क राशि का स्वामी। वाहन—हरिण। समिधा—पलास।

दान-द्रव्य—मोती, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, बांस की डलिया, सफेद बैल तथा सफेद चन्दन।

दान का समय— सोमवार को प्रदोष (संध्या) काल।

धारण रत्न— मोती 4-5 रत्ती।

अभाव में उपरत्न— गोदन्ती या चन्द्रकान्त मणि धारण करें अथवा चन्द्रमा का यन्त्र तथा खिरनी की जड़ को सफेद वस्त्र में बाँधकर बाहु या गले में धारण करें।

व्यावसायिक पदार्थ— जल से सम्बन्धित व्यवसाय, कांच के बने सामान।

व्रत-उपवास- चन्द्रपीड़ा निवृत्ति हेतु सोमवार व्रत या बत्तीस पूर्णिमा व्रत करना चाहिए। श्वेत पदार्थ, श्वेत पुष्प चढ़ावें।

विशेष जानकारी हेतु 'सोमवार व्रत कथा' एवं पूर्णिमा व्रत' मँगावें।

मंगल

8	3	10
9	7	5
4	11	6

मंगल की पीड़ा से—गले की बिमारी, कण्ठ रोग, फोड़ा, फुन्सी, रक्त विकार, गठिया के बुखार, आँखों की बिमारी, दौरे पड़ना, सिर दर्द तथा रक्त सम्बन्धी रोग इत्यादि।

वैदिक जप मंत्र— ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपा ठं. रेता ठं.सि जिन्वति॥

तांत्रिक मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं मङ्गलाय नमः।

जप संख्या- 10 हजार।

कलियुग में जप संख्या— 40 हजार।

दक्षिण दिशा, त्रिकोण मण्डल, अंगुल 3, अवन्ति देश, भारद्वाज गोत्र, रक्त वर्ण। मेष-वृश्चिक राशि का स्वामी।

वाहन— भेंड़ा। समिधा—खदिर (खैर)।

दान-द्रव्य— मूँगा, सोना, ताँबा, मसूर, गुड़, गेहूँ, घी, लाल कपड़ा, लाल फूल, कस्तूरी, केशर, लाल बैल तथा लाल चन्दन।

दान का समय— मंगलवार को सबेरे 2 घटी तक।

धारण रत्न— मूँगा 6-7 रत्ती।

उपरत्न— विद्रुम मणि या संगमूँगी अथवा अकीक एवं मंगल का यंत्र या अनन्तमूल वृक्ष की जड़ को लाल कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।

व्यावसायिक पदार्थ— औषधि, घड़ी, ईंट, गेहूँ, भूमि।

व्रत उपवास— मंगल देवता अथवा हनुमान्जी का व्रत करना शुभप्रद है। लाल फूल अर्पण करें। विशेष—'मंगलवार व्रत कथा' पढ़ें।

बुध

9	4	11
10	8	6
5	12	7

बुध की पीड़ा से— दिमागी फितूर, नाक-कान की बिमारी, वात सम्बन्धी बिमारी, पित्तभेद, चर्म रोग, कोढ़, विष तथा ऊँचाइयों से गिरना इत्यादि।

वैदिक जप मन्त्र— ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ठं. सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे-अध्युत्तरस्मिन्। विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।

जप संख्या—9 हजार।

कलियुग में जप संख्या—36 हजार।

ईशान कोण, बाणाकार मण्डल, अंगुल 4, मगध देश, अत्रि गोत्र, हरित वर्ण। मिथुन-कन्या राशि का स्वामी।

वाहन— सिंह। समिधा— अपामार्ग।

दान-द्रव्य— पन्ना, सोना, काँसे का बर्तन, मूँग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सब फूल, हाथी दाँत, कपूर, शस्त्र तथा फल।

दान का समय— बुधवार को सबेरे 5 घटी तक।

धारण रत्न— पन्ना 3 या 4 रत्ती।

उपरत्न— हरा मरगज अथवा बुध-यन्त्र या विधारा की जड़ हरे डोरे या कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।

व्यावसायिक वस्तुएँ— मूँग, रेशम, सूत, कापी, लेखन सामग्री (स्टेशनरी)।

व्रत उपवास— बुध देव की पीड़ा निवृत्ति हेतु 27 या 108 बुधवार का व्रत करना चाहिए। पुष्प में हरा फूल ग्रहण करें। गौमाता की सेवा, हरा चारा (दूब, पालक आदि) खिलाना लाभदायक होता है।

विशेष जानकारी—'बुधवार व्रत कथा' पढ़िए।

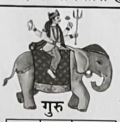

गुरु

10	5	12
11	9	7
6	13	8

गुरु की पीड़ा से— पेट में गैस रहना, बुखार, कान से मवाद गिरना तथा वायुयान दुर्घटना इत्यादि।

वैदिक जप मन्त्र— ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्योऽअर्हा-द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदीदयच्छ वस ऽऋतप्रजा तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।

जप संख्या— 19 हजार।

कलियुग में जप संख्या— 76 हजार।

उत्तर दिशा, दीर्घ चतुरस्त्र मण्डल, अंगुल 6, सिन्धु देश, अंगिरा गोत्र, पीत वर्ण। धनु-मीन राशि का स्वामी।

वाहन— हाथी। समिधा—पीपल।

दान-द्रव्य— पुखराज, सोना, काँसा, चने की दाल, खाँड़, घी, पीला फूल, पीला कपड़ा, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, भूमि तथा पीला फल।

दान का समय— बृहस्पतिवार को संध्या काल।

धारण रत्न— पुखराज 5-6 रत्ती।

उपरत्न— सुनेहला धारण करें अथवा बृहस्पति का यन्त्र या बभनेठी (भारंगी) की जड़ पीले कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।

व्यावसायिक सामग्री— किराना, वकालत, ब्याज पर पैसा।

व्रत-उपवास— गुरु (बृहस्पति) की पीड़ा निवृत्ति हेतु गुरुवार का व्रत करना चाहिए। इसमें पीली वस्तु, पुष्प से पूजन-अर्चन करना लाभदायक होता है। विशेष—'बृहस्पतिवार व्रत कथा' पढ़ें।

शुक्र

11	6	13
12	10	8
7	14	9

शुक्र की पीड़ा— कोढ़, वात-पित्त-कफ सम्बन्धी, वीर्य विकार, नेत्र पीड़ा, मूत्र पीड़ा, गुदा रोग, गर्भाशय की कमजोरी, पेट का दर्द तथा अण्डकोश की सूजन इत्यादि।

वैदिक जप मन्त्र— ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानठं. शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥

तांत्रिक मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

जप संख्या—16 हजार।

कलियुग में जप संख्या— 64 हजार।

पूर्व दिशा, षट्कोण मण्डल, अंगुल 9, भोजकट देश, भृगु गोत्र, श्वेत वर्ण। वृष-तुला राशि का स्वामी।

वाहन— अश्व। समिधा- उदुम्बर (गूलर)।

दान-द्रव्य— हीरा, सोना, चाँदी, मिश्री, दूध, चावल, सफेद एवं चित्रित कपड़ा, सफेद फूल, सुगन्ध, दही, सफेद घोड़ा, भूमि तथा सफेद चन्दन।

दान का समय—शुक्रवार को (सूर्योदयकाल)।

धारण रत्न— हीरा 4-5 रत्ती।

उपरत्न-सफेद पुखराज, स्फटिक या जरकन धारण करें। अथवा शुक्र का यन्त्र या मजीठ की जड़ को सफेद कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।

व्यावसायिक सामग्री—प्रसाधन सामग्री,फूल,वाहनों की खरीद-बिक्री।

व्रत उपवास— शुक्र ग्रह पीड़ा निवारणार्थ शुक्रवार को व्रत रहना शुभ है। सफेद वस्तुएँ तथा सफेद पुष्प चढ़ाना चाहिए।

शनि

12	7	14
13	11	9
8	15	10

शनि की पीड़ा से— पेट और पैरों की बिमारियाँ, गैस, पेड़ से गिरना, पत्थर से चोट लगना, वाहन दुर्घटना इत्यादि।

वैदिक जप मन्त्र—ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं यो रभिस्त्रवन्तु नः॥

तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

जप संख्या— 23 हजार।

कलियुग में जप संख्या—92 हजार।

पश्चिम दिशा, धनुषाकार मण्डल, अंगुल 2, सौराष्ट्र देश, कश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ण। मकर-कुम्भ राशि का स्वामी।

वाहन— गीध। समिधा— शमी।

दान-द्रव्य—नीलम, सोना, लोहा, काला उड़द, काली तिल, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, कस्तूरी, महिषी, काली गौ तथा काला खड़ाऊ (जूता-चप्पल इत्यादि)।

दान का समय— शनिवार को मध्याह्नकाल।

धारण रत्न- नीलम 4-5 रत्ती।

उपरत्न-कटैला, काले घोड़े के नाल या नाव के कांटे की अँगूठी, शनि यंत्र काले कपड़े या धागे में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।

व्यावसायिक वस्तुएँ— लकड़ी, लोहा, जूता, कोयला।

व्रत-उपवास— शनि की पीड़ा निवृत्ति हेतु 33 तैंतीस शनिवार का व्रत करना चाहिए। पुष्प काला अर्पण करें। नैवेद्य (प्रसाद) में काले तिल के लड्डू, उरद के बड़े आदि अर्पित करना चाहिए।

विशेष—हनुमानजी एवं शिवजी की उपासना से भी शनि-पीड़ा का शमन होता है।

राहु

13	8	15
14	12	10
9	16	11

राहु की पीड़ा से- दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, जहर (विष) देना व लेना, आत्म-हत्या, पाचन संस्थान के रोग इत्यादि।

वैदिक जप मंत्र— ॐ कयानश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठयाऽवृता॥

तांत्रिक मन्त्र— ॐ ह्रीं राहवे नमः।

जप संख्या— 18 हजार।

कलियुग में जप संख्या— 72 हजार।

नैऋत्य कोण, सूर्पाकार मण्डल, अंगुल 12, राठीनापुर (मलय) देश, पैठीनस गोत्र, कृष्ण वर्ण। कन्या राशि का स्वामी।

वाहन— व्याघ्र। समिधा— दूर्वा।

दान-द्रव्य—गोमेद, सोना, रत्न, सीसा, तिल, सरसों का तेल, सप्त धान्य, उरद, कम्बल, नीला कपड़ा, तलवार, घोड़ा एवं सूप, काला फूल, लौह उपकरण, तिल भरा ताम्रपत्र।

दान-समय— रात्रि में।

धारण रत्न— गोमेद 6-7 रत्ती।

उपरत्न— तुरसावा धारण करें अथवा राहु का यन्त्र या सफेद चन्दन की जड़ काले कपड़े में बाँधकर धारण करें।

व्यावसायिक वस्तु— तेल, अलसी, चना, हड्डी के सामान।

व्रत उपवास— शनिवार को व्रत में नीला पुष्प अर्पण करना चाहिए।

केतु

14	9	16
15	13	11
10	17	12

केतु की पीड़ा से— घाव होना, दाँत का सड़ जाना, जल जाना और पसदायक सारी बिमारियाँ एवं गर्भपात केतु से ही होता है।

वैदिक जप मंत्र— ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

तांत्रिक मन्त्र— ॐ ऐं ह्रीं केतवे नमः।

जप संख्या— 17 हजार।

कलियुग में जप संख्या— 68 हजार।

वायव्य कोण, ध्वजाकार मण्डल, अंगुल 6, अन्तर्वेदी (कुश) देश, जैमिनी गोत्र, धूम्र वर्ण। मीन राशि का स्वामी।

वाहन— कबूतर। समिधा— शमी या दूर्वा।

दान-द्रव्य— लहसुनिया, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, काला कपड़ा, धूमिल तेल, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा।

दान का समय— रात्रि में।

धारण रत्न— लहसुनिया 7, 9 रत्ती।

उपरत्न- गोदन्ती या लाजावर्त धारण करें अथवा केतु का यन्त्र या असगन्ध वृक्ष की जड़ को काले कपड़े में बाँधकर गले या भुजा में धारण करें।

व्यावसायिक वस्तुएँ— अभ्रक, चावल, फिल्म उद्योग, राजनीति।

व्रत उपवास— काला फूल अर्पित करें।

मेषादि राशियों के लिए रत्न धारण विधान

राशि	स्वामी	रत्न	उपरत्न	वजन	धारणदिन
मेष	मंगल	मूँगा	लाल अफीक	6 रत्ती	मंगलवार
वृष	शुक्र	हीरा	स्फटिक	4 रत्ती	शुक्रवार
मिथुन	बुध	पन्ना	हरा मरगज	3 रत्ती	बुधवार
कर्क	चन्द्रमा	मोती	गोंदन्ती	4 रत्ती	सोमवार
सिंह	सूर्य	माणिक्य	तामड़ा, कंटकिज	3 रत्ती	रविवार
कन्या	बुध	पन्ना	हरा मरगज	3 रत्ती	बुधवार
तुला	शुक्र	हीरा	स्फटिक	4 रत्ती	शुक्रवार
वृश्चिक	मंगल	मूँगा	लाल अफीक	6 रत्ती	मंगलवार
धनु	बृहस्पति	पुखराज	सुनेहला	5 रत्ती	गुरुवार
मकर	शनि	नीलम	कटैला या काले घोड़े के नाल की अंगूठी	4 रत्ती	शनिवार
कुम्भ	शनि	नीलम	"	4 रत्ती	शनिवार
मीन	बृहस्पति	पुखराज	सुनेहला	3 रत्ती	गुरुवार
राहु	कन्या	गोमेद	तुरसावा	8 रत्ती	शनि, बुध
केतु	मीन	लहसुनिया	गोदन्ती या लाजावर्त	4 रत्ती	शनि, बुध

राशियों के गुण

राशि	राशितत्व	दिशा	रंग	अंक	स्वरूप
मेष	अग्नि	पूर्व	लाल	9	चर
वृष	पृथ्वी	दक्षिण	श्वेत	6	स्थिर
मिथुन	वायु	पश्चिम	हरा	5	द्विस्वभाव
कर्क	जल	उत्तर	श्वेत	2	चर
सिंह	अग्नि	पूर्व	पीला	1	स्थिर
कन्या	पृथ्वी	दक्षिण	हरा	5	द्विस्वभाव
तुला	वायु	पश्चिम	श्वेत	6	चर
वृश्चिक	जल	उत्तर	लाल	9	स्थिर
धनु	अग्नि	पूर्व	पीला	3	द्विस्वभाव
मकर	पृथ्वी	दक्षिण	नीला	8	चर
कुंभ	वायु	पश्चिम	नीला	8	स्थिर
मीन	जल	उत्तर	पीला	3	द्विस्वभाव

नक्षत्रों से कष्ट या पीड़ा

1. **अश्विनी**–सोमवार को होने से 21 दिन पीड़ा उपरांत आराम मिलेगा।
2. **भरणी**–बुधवार को भरणी नक्षत्र के समय रोगी होने पर 21 दिन पीड़ा एवं महाकष्ट होगा।
3. **कृत्तिका**–गुरुवार को यह नक्षत्र होने पर 18 दिन के बाद ही आराम प्राप्त होगा।
4. **रोहिणी**–शनिवार को होने से रोगी को 7 दिन पीड़ा होगी।
5. **मृगशिरा**–जब यह नक्षत्र शनि, रवि या सोमवार को पड़े तो अत्यधिक कष्ट एवं पीड़ा होती है। देर से आराम मिलता है। अतः नक्षत्र शांति करा लेना चाहिये।
6. **आर्द्रा**–मंगलवार या शुक्रवार को होने से महाकष्ट होता है। शांति करावें।
7. **पुनर्वसु**–बुधवार या शनिवार को होने से 25 दिन के बाद आराम होता है।
8. **पुष्य**–शनिवार को पुष्य रहने से 13 दिन कष्टप्रद होते हैं।
9. **श्लेषा**–सोमवार या शुक्रवार को पड़ने से अत्यन्त कष्ट होता है। शांति अवश्य करावें।
10. **मघा**–रवि, बुध या शनि को पड़ने से 11 दिन पीड़ा के बाद ही आराम होता है।
11. **पूर्वा फाल्गुनी**–सोम या गुरु को पड़ने से 11 दिन की पीड़ा के बाद लाभ होता है।
12. **उत्तरा फाल्गुनी**–सोम या गुरु को पड़ने से 11 दिन की पीड़ा के उपरांत लाभ होता है।
13. **हस्त**–रवि, शनि या बुध को पड़ने से 15 दिन रोग पीड़ा रहेगी।
14. **चित्रा**–सोम या गुरु को पड़ने से 7 दिन बाद स्वास्थ्य लाभ होगा।
15. **स्वाती**–रवि, शनि या बुध को पड़ने से 20 दिन रोग रहेगा।
16. **विशाखा**–रवि, सोम या शनि को पड़ने से अति कष्ट होता है। शांति अवश्य करावें।
17. **अनुराधा**–बुधवार को पड़ने से 8 दिन पीड़ादायक रहेंगे।
18. **ज्येष्ठा**–गुरुवार को पड़ने से 20 दिन रोगग्रस्त रहेंगे।
19. **मूल**–रवि, सोम या शनि को पड़ने से अतिकष्ट है। अतएव शांति करावें।
20. **पूर्वाषाढ़ा**–सोम या बुध को पड़ने से 8 दिन पीड़ा होगी।
21. **उत्तराषाढ़ा**–गुरु को पड़ने से 9 दिन बाद स्वास्थ्य लाभ होगा।
22. **श्रवण**–रवि या शनि को पड़ने से 5 दिन पीड़ा होगी।
23. **धनिष्ठा**–रवि या मंगलवार को पड़ने से कष्ट है। अतः शांति करावें।
24. **शतभिषा**–गुरु या शुक्र को पड़ने से 40 दिन रोग ग्रस्त रहेंगे।
25. **पूर्वा भाद्रपद**–रवि, सोम या शनि को पड़ने से अत्यन्त कष्टदायक है, शांति आवश्यक है।
26. **उत्तरा भाद्रपद**–सोम या बुध को होने से 10 दिन पीड़ादायक हैं।
27. **रेवती**–गुरु या शुक्रवार को पड़ने से 18 दिन बाद ही स्वास्थ्य लाभ होगा।

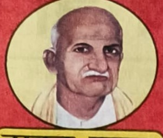

ठाकुर प्रसाद

रूपेश पंचाङ्ग

हिन्दू नववर्षारम्भ

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् 2082
रविवार, 30 मार्च 2025 ई.

मार्च 3 2025 MARCH

विक्रम संवत् 2081-82	श्रीशालिवाहन शाके 1946-47	फसली सन् 1432	इस्लामी हिजरी सन् 1446	बंगला संवत् 1431	नेपाली संवत् 1145
फाल्गुन शुक्ल 2 से चैत्र शुक्ल 2 तक। ता.15 से चैत्र मास व ता. 30 से संवत् 2082 प्रारम्भ।	राष्ट्रीय फाल्गुन 10 से चैत्र 10 तक। ता. 22 से राष्ट्रीय नववर्ष चैत्र शक 1947 प्रारम्भ।	प्र. फागन 17 से प्र. चेतर 17 तक। ता. 15 से प्र. चेतर मास प्रारम्भ।	साबान 30 से सव्वाल 1 तक। ता. 2 से रमजान-रोजा व 31 सव्वाल माह शुरू।	फाल्गुन 17 से चैत्र 17 तक। ता. 15 से चैत्र मास प्रारम्भ।	फाल्गुन 17 गते से चैत्र 18 गते तक। ता. 14 से चैत्र मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			31		
16			योग		

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	31

भद्रा-विचार

ता.3 दिन 11:6 से रात 9:55 तक।
ता.6 दिन 3:3 से रात 2:5 तक।
ता.9 रात 9:51 से ता.10 दिन 9:26 तक।
ता.13 दिन 10:2 से रात 10:37 तक।
ता.16 रात 3:48 से ता.17 सायं 4:50 तक।
ता.20 रात 10:30 से ता.21 दिन 11:5 तक।
ता.24 दिन 12:27 से रात 12:18 तक।
ता.27 रात 8:39 से ता.28 प्रातः 7:40 तक।

तेजी-मंदी

अनाज, गुड़, रूई, वस्त्र, औषधि, धातु सोना-चाँदी, सोयाबीन, सरसों में तेजी, गेहूँ, चावल, चना, मूँग-ज्वार में मंदी का योग है।

मूल विचार

ता.2 को रेवती दिन 11:44 से ता.4 को अश्विनी दिन 8:24 तक।
ता.10 को श्लेषा रात 2:3 से ता.12 को मघा रात 3:52 तक।
ता.20 को ज्येष्ठा रात 7:49 से ता.22 को मूल रात 10:59 तक।
ता.29 को रेवती रात 7:51 से ता.31 को अश्विनी सायं 4:34 तक।

सूर्यनक्षत्र

ता.4 को पू.भा. रात 9:44 से।
ता.14 को मीन राशि रात 9:24 से।
ता.17 को उ.भा. रा.शे. 5:36 से।
ता.31 को रेवती सायं 4:8 से।

पंचक विचार

मासारम्भ से ता.3 को दिन 10:5 तक।
ता.26 को दिन 11:43 से ता.30 को सायं 6:14 तक।

विवाह मुहूर्त

ता.1, 2, 3, 6, 7, 11, 12, 13, 14।
आगे खरमास दोष है।

वार					
रवि SUN	30 — चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिन 2:14 तक; हिन्दू नववर्ष, वासंतीय नवरात्र; मेष चं. दिन 6:14 से, रेवती सायं 6:14 तक	2 — फाल्गुन शुक्ल तृतीया रात 12:18 तक; मीन चं. उ.भा. दिन 11:44 तक	9 — फाल्गुन शुक्ल दशमी दिन 10:15 तक; भद्रा; कर्क चं. रात 7:58 से, पुनर्वसु रात 1:53 तक	16 — चैत्र कृष्ण द्वितीया दिन 2:44 तक; भद्रा; तुला चं. रात 11:15 से, हस्त दिन 9:57 तक	23 — चैत्र कृष्ण नवमी रात 12:37 तक; मकर चं. रा.शे. 5:54 से, पू.षा. रात 11:49 तक
सोम MON	31 — चैत्र शुक्ल द्वितीया दिन 11:51 तक; ईद; मेष चं. अश्विनी सायं 4:34 तक	3 — फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी रात 9:55 तक; भद्रा; मेष चं. दिन 10:5 से, रेवती दिन 10:5 तक	10 — फाल्गुन शुक्ल एकादशी दिन 9:26 तक; भद्रा; एकादशी व्रत; कर्क चं. पुष्य रात 2:3 तक	17 — चैत्र कृष्ण तृतीया सायं 4:50 तक; भद्रा; गणेश चतुर्थी व्रत; तुला चं. चित्रा दिन 12:31 तक	24 — चैत्र कृष्ण दशमी दिन 12:18 तक; भद्रा; मकर चं. उ.षा. रात 12:9 तक
मं TUE		4 — फाल्गुन शुक्ल पंचमी रात 7:31 तक; मेष चं. अश्विनी दिन 8:24 तक	11 — फाल्गुन शुक्ल द्वादशी दिन 9:6 तक; प्रदोष व्रत; सिंह चं. रात 2:43 से, श्लेषा रात 2:43 तक	18 — चैत्र कृष्ण चतुर्थी सायं 6:58 तक; तुला चं. स्वाती दिन 3:9 तक	25 — चैत्र कृष्ण एकादशी रात 11:30 तक; एकादशी व्रत; मकर चं. श्रवण रात 12:1 तक
बु WED		5 — फाल्गुन शुक्ल षष्ठी सायं 5:12 तक; वृष चं.दि.12:24; भरणी प्रातः 6:46 तक, कृत्तिका रा.शे. 5:16 तक	12 — फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी दिन 9:17 तक; सिंह चं. मघा रात 3:52 तक	19 — चैत्र कृष्ण पंचमी रात 8:53 तक; वृश्चिक चं. दिन 11:0 से, विशाखा सायं 5:37 तक	26 — चैत्र कृष्ण द्वादशी रात 10:16 तक; कुम्भ चं. दिन 11:43 से, धनिष्ठा रात 11:26 तक
गु THU		6 — फाल्गुन शुक्ल सप्तमी दिन 3:3 तक; भद्रा; वृष चं. रोहिणी रात 3:57 तक	13 — फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी दिन 10:2 तक; भद्रा; पूर्णिमा व्रत; होलिका दहन; सिंह चं. पू.फा. रा.शे. 5:30 तक	20 — चैत्र कृष्ण षष्ठी रात 10:30 तक; भद्रा; वृश्चिक चं. अनुराधा रात 7:49 तक	27 — चैत्र कृष्ण त्रयोदशी रात 8:39 तक; भद्रा; प्रदोष व्रत; कुम्भ चं. शतभिषा रात 10:32 तक
शु FRI		7 — फाल्गुन शुक्ल अष्टमी दिन 1:6 तक; मिथुन चं. दिन 3:25 से, मृगशिरा रात 2:54 तक	14 — फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा दिन 11:12 तक; होली काशी में; मीन संक्रान्ति; कन्या चं. दिन 12:1 से, उ.फा. समस्त	21 — चैत्र कृष्ण सप्तमी रात 11:41 तक; भद्रा; धनु चं.रा.9:37 ज्येष्ठा रात 9:37 तक	28 — चैत्र कृष्ण चतुर्दशी सायं 6:43 तक; भद्रा; मीन चं. दिन 3:36 से, पू.भा. रात 9:17 तक
श SAT	1 — फाल्गुन शुक्ल द्वितीया रात 2:35 तक; चन्द्रदर्शन; मीन चं. प्रातः 7:33 से, पू.भा. दिन 1:13 तक	8 — फाल्गुन शुक्ल नवमी दिन 11:30 तक; महिला दिवस; मिथुन चं. आर्द्रा रात 2:11 तक	15 — चैत्र कृष्ण प्रतिपदा दिन 12:39 तक; होली; कन्या चं. उ.फा. प्रातः 7:34 तक	22 — चैत्र कृष्ण अष्टमी रात 12:26 तक; धनु चं. मूल रात 10:59 तक	29 — चैत्र कृष्ण अमावस्या सायं 4:34 तक; अमावस्या; मीन चं. उ.भा. रात 7:51 तक

तारीख	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
सूर्योदय	6:15	14	13	12	12	11	10	9	9	8	7	6	6	5	4	3	2	2	1	6:0	5:59	59	58	57	57	56	55	54	54	53	53
सूर्यास्त	5:45	46	47	48	48	49	50	51	51	52	53	54	54	55	56	57	58	58	59	6:0	6:1	1	2	3	3	4	5	6	6	7	7

व्रत-त्यौहार

1.शनि-चन्द्रदर्शन, रामकृष्ण परमहंस जयंती।
3.सोम-वैना. गणेश चतुर्थी व्रत।
4.मंगल-पू.भा.के सूर्य रा. 9:44।
6.गुरु-कामदा सप्तमी व्रत।
7.शुक्र-होलाष्टक आरंभ।
8.शनि-महिला दिवस।
10.सोम-आमलकी रंगभरी एकादशी व्रत, श्रीकाशीविश्वनाथ श्रृंगार दि.।
11.मंगल-प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी।
13.गुरु-व्रत की पूर्णिमा, होलिका दहन रात 10:37, चौमासी चौदस-जैन।
14.शुक्र-स्नान दान पूर्णिमा, होली काशी में, मीन संक्रांति रा.9:24, चैतन्य महाप्रभु जयंती।
15.शनि-होली काशी में अन्यत्र, वसन्तोत्सव।
17.सोम-सं. गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रा.8:49, उ.भा.के सूर्य रा.शे.5:36।
19.बुध-शुक्रास्त पश्चिम में दि.1:5।
21.शुक्र-शीतला सप्तमी व्रत।
22.शनि-शीतलाष्टमी व्रत-बसिअउरा।
23.रवि-शुक्रोदय पूर्व में दि. 2:55।
25.मंगल-पापमोचिनी एकादशी व्रत-सबका, बुढ़वा मंगल पर्व।
27.गुरु-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, महावारुणी पर्व।
28.शुक्र-मु.आखिरी जुमा।
29.शनि-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या।
30.रवि-वासंतीय नवरात्र प्रारम्भ, कलश स्थापन, हिन्दू नववर्ष आरम्भ, वि.सं.2082, चैती चांद, चन्द्रदर्शन, श्रीझूलेलाल जयंती।
31.सोम-रेवती के सूर्य सा.4:8, ईद।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

मेष- स्त्री पक्ष से लाभ होगा, पद-प्रतिष्ठा नौकरी व्यवसाय में उन्नति होगी।
वृष- स्थिर सम्पत्ति हाथ से निकल सकती है, शुभ कार्य का अवसर मिलेगा।
मिथुन-कार्य क्षेत्र में परिश्रम होगा, सहयोगियों से सहयोग नहीं मिलेगा।
कर्क- संतान के प्रति चिंता होगी, 29 मार्च तक शनि की ढैया कष्टदायक है।
सिंह- सहयोगी से मतभेद, 29 मार्च से शनि ढैया के कारण शत्रु प्रबल होंगे।
कन्या- स्वास्थ्य में सुधार होगा, परिश्रम व प्रयासों से सफलता मिलेगी।
तुला- माता-पिता के स्वास्थ्य में बाधा होगी, संतान सुख मिलेगा।
वृश्चिक-व्यवसाय क्षेत्र में अल्प आय, वैवाहिक जीवन में कलह से अशांति रहेगी।
धनु- शिक्षा क्षेत्र से जुड़े जातक, पत्रकार, बुद्धजीवियों को यश मिलेगा।
मकर- 29 मार्च से शनि के राशि परिवर्तन से अस्थि रोग सम्भव है।
कुम्भ- 29 मार्च से पैर पर साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा, विवाद सम्भव है।
मीन- आकस्मिक घरेलू समस्या हो सकती है, स्थानांतरण में सफलता मिलेगी।

आकाशी-लक्षण

पहाड़ों पर बर्फबारी, मैदानी क्षेत्रों में वर्षा शीतलहर बढ़ेगी। उत्तर-पश्चिमी में वर्षा का अभाव रहेगा, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात, में वर्षा का योग, मासान्त में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा।

फरवरी-2025

रवि		2	9	16	23
सोम			10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5		19	
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	

अप्रैल-2025

रवि			13	20	27
सोम		7		21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3		17	24	
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

Heart, बादाम, अखरोट, तीसी (Flax-seeds), कालातिल, लहसुन, दालचीनी, ग्रीन-टी, सेब, संतरा, केला

कॉलेस्ट्रोल कन्ट्रोल हार्ट की बीमारी को दूर रखे

विस्तृत रोग + दवा दिसम्बर के पीछे देखें।

अबोकाडो, तरबूज, प्याज, लालमिर्च, शिमलामिर्च, खीरा, पत्तागोभी, गाजर, टमाटर

दैवज्ञ पं० रामनरेश त्रिपाठी 'ज्योतिष-सम्राट्'

विवाह के समय विचारणीय बातें

सुन्दर विचार, शिष्टाचारवाली स्त्री धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देनेवाली होती है। ऐसा आचरण जन्म-लग्न, नक्षत्र, ग्रह के वश में होता है। इसलिए विवाह-समय में इसका विचार कर लेना आवश्यक है। क्योंकि पुत्र (सन्तान), स्वभाव, आचरण, धर्म ये गृहलक्ष्मी पर निर्भर करता है।

विवाह-योग का प्रश्न-विचार :

स्वस्थ-चित्त बैठे ज्योतिषी की धनादि से पूजा करके प्रश्न करना चाहिए। प्रश्नकाल में यदि चन्द्रमा 10/11/3/7 या 5वें स्थान में-से किसी एक स्थान में हो और गुरु से देखा जाता हो अथवा प्रश्न-लग्न में वृष, तुला या कर्क लग्न हो और शुभ ग्रह से देखा जाता हो, तो शीघ्र विवाह का योग समझना चाहिए। प्रश्नकाल में चन्द्रमा और शुक्र यदि विषम राशि या विषम राशि के नवांश में बली होकर लग्न को देखता हो तो वर को स्त्री तथा कन्या को पति शीघ्र प्राप्त होगा शुक्र, चन्द्रमा यदि सम राशि नवांश में हो और बली होकर लग्न को देखता हो तो वर को शीघ्र स्त्री-लाभ कराता है।

विवाह भंग योग : कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा यदि प्रश्न लग्न से समसंख्यक राशि में हो; पाप-ग्रह से देखा जाता हो अथवा छठें या आठवें स्थान में हो तो विवाह पक्का नहीं होने देता।

बाल-विधवा योग परिहार : जन्म-काल या प्रश्न-काल से विधवा-योग देखकर कन्या को सावित्री या पीपल व्रत कराकर, शुभ लग्न में विष्णु भगवान् की मूर्ति या पीपल वृक्ष, कदली या कुम्भ-विवाह कराकर किसी चिरंजीवि वर के साथ व्याह दें। इसमें पुनर्विवाह का दोष नहीं लगता है। यह धर्मशास्त्र का कथन है। कुम्भादि विवाह गुप्त करना चाहिए।

सन्तान-भेद से जन्म-मासादि फल : जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि में प्रथम सन्तान (पुत्र, अथवा कन्या) का विवाह शुभ नहीं होता है। द्वितीय गर्भ से उत्पन्न सन्तान का विवाह उक्त समय में सन्तति देने वाला होता है। ऐसा विद्वानों का विचार है।

विवाह में विशेष विचार : लड़के के विवाह के बाद छः महीने के भीतर लड़की का विवाह नहीं करना चाहिए। लड़की के विवाह के बाद छः महीने तक अपने कुल में किसी का मुण्डन नहीं कराना चाहिए। दो सहोदरों को, दो सहोदर कन्या नहीं व्याहनी चाहिए। छः माह के भीतर दो सहोदर या दो सहोदर कन्याओं का विवाह शास्त्र वर्जित है।

गणना क्यों देखी जाती है ?

प्राचीन युग के लोग शास्त्र पर आँख मूँद कर विश्वास कर लेते थे। लेकिन आधुनिक युग में मेलापक विषय का वैज्ञानिक रहस्य बतलाना आवश्यक है। तभी इस पर संसार विश्वास कर सकता है। भारत आर्यों का निवास-स्थान और पुण्य-भूमि है। प्राचीनकाल में यहाँ का मानव-समाज ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास इन्हीं चार आश्रमों में विभक्त था। अन्य तीन आश्रम गृहस्थाश्रम पर ही निर्भर रहते थे। गृहस्थाश्रम का प्रथम सोपान विवाह ही है। यह विवाह मंगलदायक हो तो गृहस्थाश्रम सुखपूर्वक व्यतीत हो जाता है। दाम्पत्य-जीवन के सुखपूर्वक निर्वाह होने की जानकारी के लिए ही नक्षत्र और ग्रह मेलापक किया जाता है।

नवग्रह और दसवाँ ग्रह पृथ्वी एक-दूसरे के आकर्षण से शून्य में टिके हुए हैं। मनुष्य पृथ्वी पर है। अतः अन्य नवग्रहों के आकर्षण का प्रभाव मनुष्यों पर भिन्न-भिन्न रूप से पड़ता है। मनुष्य स्वयं कुछ भी नहीं करते हैं, वरन् यह ग्रहों के आकर्षण का प्रभाव ही उन्हें प्रभावित करता है और मनुष्य उसी के अनुसार कार्य भी करते हैं। मनुष्य का शरीर जिससे बना है उन तत्त्वों के साथ ग्रहों का सम्बन्ध है। अतः जो ग्रह बुरा प्रभाव वाला होता है तो मनुष्य भी बुरा काम कर बैठता है और उन तत्त्वों में बड़बड़ी हो जाती है। वर-वधू के नक्षत्र और ग्रहों में कैसा आकर्ष है तथा इसका प्रभाव क्या होता है, इसको जानने के लिए ही नक्षत्र और ग्रह मिलाये जाते हैं।

कुण्डली मिलाने की रीति :

स्त्री-नाशक या पति नाशक जो योग हैं, उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है। कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पाप-ग्रह का होना प्रायः पति-नाशक या पत्नी-नाशक है। इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते हैं। इसके लिए पण्डितों का अनुभव है कि, सबसे अधिक दोषकारक मंगल, उससे कम बाकी पाप-ग्रह होते हैं। इस योग को चन्द्रमा, शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए। द्वितीय, सप्तम भावों में भी पाप योग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम, अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभायवर्द्धक है। सप्तमेश-अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश का सप्तमेश में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धक योग भी प्रायः वैधव्य-सूचक होते हैं। एकादश या पञ्चम में भी विशेष पाप योग वैधव्यसूचक होता है। इन योगों के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो वह विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु, सन्तान और भाग्य योग को देखना युक्तिसंगत है।

प्रश्न-लग्न या जन्म-लग्न से स्त्री की कुण्डली में छठें या आठवें चन्द्रमा हों, लग्न में चन्द्रमा और सातवें पाप ग्रह हों, लग्न में चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो भी वैधव्य कारक योग होता है। यदि कन्या का प्रबल वैधव्य योग हो तो अश्वत्थ विवाह, कुम्भ विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवि वर के साथ विवाह किया जाय तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता। परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ, सप्तम, नवम, अष्टम, द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिए अनिष्टप्रद होता है। सप्तमेश का पञ्चम भाव में होना भी अच्छा नहीं होता। ज्योतिष-फलित शास्त्र में दो ही वस्तुओं की अधिक प्रधानता है-लग्न और चन्द्रमा। लग्न को शरीर और चन्द्रमा को मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्म-राशि के वश मेलापक विचार किया जाता है। गणना जन्म नाम से देखी जाती है। विवाह, यात्रा, उपनयन, चूड़ाकरण (मुण्डन), गोचर-विचार, मंगल-कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्म-नाम ही प्रधान है। जन्म-नाम न मिलने पर प्रसिद्ध नाम से गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हों तो अन्तिम नाम ग्रहण कर गणना देखने का विधान है। किसी का जन्म और प्रसिद्ध दोनों नाम हो और दूसरे का केवल प्रसिद्ध ही नाम हो तो मेलापक प्रसिद्ध नाम से और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्म-नाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम और दूसरे का जन्म-नाम ग्रहण कर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर-कन्या यदि एक ही गोत्र के हों तो विवाह नहीं करना चाहिए।

विवाह के मास : मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष, मेष इन राशियों के सूर्य में विवाह शुभ होता है। मिथुन का सूर्य आषाढ़ शुक्ल 10 तक शुभ है। वृश्चिक के सूर्य होने पर कार्तिक में, मेष का सूर्य होने से चैत्र में, मकर का सूर्य होने पर पौष में विवाह शुभ होता है।

विवाह-मुहूर्त : नक्षत्र—तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, मूल, अनुराधा, हस्त एवं स्वाती। **लग्न**—कन्या, तुला, और मिथुन। **मास**—फाल्गुन, माघ, मार्गशीर्ष, आषाढ़, ज्येष्ठ और वैशाख। **दिन**—भौम तथा शनि को छोड़कर शेष शुभ दिन। **तिथि**—रिक्ता तथा अमावस्या को छोड़कर विवाह शुभ है।

नौ ताराओं के नाम : जन्म-नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक संख्या गिनकर 9 का भाग देने से शेष 1. जन्म, 2. सम्पत्, 3. विपत्, 4. क्षेम, 5. प्रत्यरि, 6. साधक, 7. वध, 8. मैत्र, 9. अतिमैत्र। ये नौ ताराओं के नाम हैं।

दुष्टतारा दान : वध में स्वर्ण तथा तिल, विपत् में गुड़, जन्म में शाक तथा प्रत्यरि में लवण (नमक) दान करना चाहिए।

नोट : प्रत्येक तारा की तीन आवृति होती है। पहली आवृत्ति में विपत् का प्रथम, प्रत्यरि का चतुर्थ, वध का तृतीय चरण शुभ होता है, बाकी सब अशुभ। तीसरी आवृत्ति में सभी ताराएँ शुभ होती है।

रवि-चन्द्र-गुरु शुद्धि

रवि : जन्म राशि से 3/6/10/11वें रवि शुभ हैं। यदि रवि 13 अंश से अधिक हो तो 2/5/9 राशि में भी शुभ है।

चन्द्र : 1/3/6/7/10/11 वें स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है। 2/5/9 शुक्लपक्ष में शुभ होता है। 4/8/12 अशुभ है।

गुरु : 2/5/7/9/11 वें स्थान में शुभ होता है। 10/6/3/1 इनमें शान्ति करने पर शुभ तथा 4/8/12 में अशुभ होता है। बालक का यज्ञोपवीत, कन्या तथा वर के विवाह में शुभ-अशुभ विचार करना आवश्यक है। गुरु अपने उच्च राशि, मित्र गृह तथा अपने नवांश में रहे तो अशुभ भी शुभ होता है। नीच राशि या शत्रु गृह में शुभ भी अशुभ होता है। बाकी सब ग्रह रवि, चन्द्र आदि अपने उच्च स्थान पर रहने पर अनिष्ट स्थान में भी शुभ फल देते हैं।

वर्ण-विचार : कर्क, मीन, वृश्चिक, ब्राह्मण वर्ण। मेष, सिंह, धनु, क्षत्रिय। कन्या, वृष, मकर वैश्य। मिथुन, तुला, कुम्भ शूद्र वर्ण होते हैं। वर-कन्या का वर्ण एक होवे या वर का वर्ण कन्या के वर्ण से हमेशा श्रेष्ठ होना चाहिए।

गणादि-दोष-परिहार : राशि स्वामियों में मैत्री हो या अंश-स्वामी में मैत्री हो, तो गणादि दुष्ट रहने पर विवाह पुत्र-पौत्र को बढ़ाने वाला होता है।

राशि-कूट : वर की राशि से कन्या की राशि तक और कन्या की राशि से वर की राशि तक गिनने पर 6/8 में दोनों की मृत्यु, 9/5 में सन्तान-हानि और 2/12 में दरिद्रता होती है।

दुष्ट-भकूट-परिहार : वर कन्या की राशि के स्वामी एक ही ग्रह हों अथवा दोनों राशियों में मैत्री हो, नाड़ी, नक्षत्र शुद्ध होने पर दुष्ट भकूट ग्रह नहीं होता है।

नाड़ी-विचार : वर-कन्या की एक नाड़ी में विवाह वर्जित है। मध्य नाड़ी मृत्यु तथा भिन्न नाड़ी शुभ होता है।

विशेष : ब्राह्मण को नाड़ी-दोष, क्षत्रियों को वर्णदोष, वैश्यों को गण-दोष और शूद्रों को योनि-दोष विचार करना चाहिए।

किसी आचार्य ने नक्षत्र-मेलापक के दस, किसी ने बारह और किसी अठारह भेद माने हैं, परन्तु सर्व-प्रसिद्ध निम्नलिखित ये ही आठ भेद हैं—1. वर्ण, 2. वश्य, 3. तारा नक्षत्र, 4. योनि, 5. ग्रहमैत्री, 6. गण, 7. भकूट या राशिकूट, 8. नाड़ी। इन आठों में शास्त्रकारों ने नाड़ी पर अधिक जोर दिया है। इस तथ्य का पता आगे नाड़ी-विवेचन में लगेगा।

वर्ण : सामाजिक वर्णों की तरह इसमें ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये ही चार वर्ण होते हैं। उच्च वर्ण में ऊँचे होने का भाव रहता है जैसे, क्षत्रिय वर्ण के मनुष्य पर यदि शूद्र वर्ण का मनुष्य प्रभाव दिखाना चाहे तो वह क्षत्रिय उसका शीघ्र शमन कर देगा। इसी प्रकार यदि ब्राह्मण या क्षत्रिय वर्ण की कन्या हो और शूद्र वर्ण का वर हो तो वह कन्या उच्च वर्ण की होने से सदा वर को दबाती रहेगी। इस तरह स्त्री-पुरुष का जीवन गृहस्थाश्रम में सुखपूर्वक व्यतीत नहीं हो सकता। इसी झगड़े से बचने के लिए 'वर्ण' का विचार किया जाता है।

वश्य : वश्य से विचार किया जाता है कि, स्त्री पति के अधीन में रहने वाली है या नहीं। वास्तव में स्त्री का पति के अधीन रहना भी आवश्यक है। शास्त्र में लिखा है कि बचपन में देख-रेख पिता, यौवन में पति और वृद्धावस्था में पति के जीवित न रहने पर पुत्र ही करे। क्योंकि स्वतन्त्र स्त्री को अनर्थ से बचने तथा सुखपूर्वक गृहस्थाश्रम व्यतीत करने के लिए 'वश्य' का विचार किया जाना आवश्यक है।

तारा : पूर्व वर्णित ग्रहों की तरह तारा का प्रभाव होता है। चन्द्र-ग्रह शास्त्रानुसार मनुष्य का मन है। इसका विचार भकूट या राशि के नाम से होता है। चन्द्र तारा पति कहलाता है। जब चन्द्रमा का विचार होता है तो ताराओं का भी विचार आवश्यक है। कृष्णपक्ष में चन्द्र की क्षीणावस्था का विचार किया जाता है।

योनि : योनि शब्द का अर्थ तो सरल ही है। इससे स्त्री-पुरुष की प्रीति की जानकारी की जाती है। जैसे-गज और गज योनि में परस्पर प्रेम एवं गज और सिंह योनि में परस्पर वैर होता है। अन्य योनियों में भी इसी तरह प्रीति और वैर होता है। अतः दम्पति में प्रेम रहने की जानकारी के लिए वैर-योनि को छोड़कर प्रीति योनि को ही ग्रहण करना चाहिए।

ग्रह-मैत्री : ग्रहों में भी परस्पर स्वाभाविक मित्रता, समता और शत्रुता होती है। इसी तरह वर-वधू के राशि स्वामियों में भी मित्रता हो तो दोनों का जीवन मित्रवत् बीत जाता है। यदि समता हुई तो कभी प्रसन्नता और कभी लड़ाई होती है और शत्रुता होने से दोनों में शत्रुता उत्पन्न होती है। अतः मित्रवत् जीवन व्यतीत होने की जानकारी होने के लिए ग्रह-मैत्री देखनी आवश्यक है।

गण : गण तीन होते हैं-देव, मनुष्य और राक्षस। मनुष्य को यह पता लग जाय कि वर मनुष्य और कन्या राक्षस गण की है, तो वह अनायास ही राक्षस प्रकृति याद कर बोल उठेगा कि तब तो कन्या वर को निगल जायेगी अर्थात् लड़का काल के गाल में चला जायेगा। यदि देव और राक्षस गण हों तो देव और राक्षस की लड़ाई होती रहेगी। मनुष्य को देवता में जिस तरह की प्रीति होती है, वैसी ही प्रीति इन गणों में भी होगी और समान गण हों, तो प्रेम होता ही है। इसलिए राक्षस गण की दृष्टि से बचने और प्रीति के लिए गण का विचार होता है।

भकूट या राशिकूट : वर-वधू के जन्म-समय में चन्द्रमा जिन राशियों पर होता है, वे ही उनकी राशियाँ होती हैं। ग्रहों की तरह इन राशियों में भी मित्रता, शत्रुता आदि होती है। इनमें मित्रता होने से दम्पति प्रसन्नतापूर्वक रहते हैं। शत्रु षडष्टक और विषम सप्तम में मृत्यु, नव-पञ्चम में अनपत्यता, अशुभ द्विर्द्वादश में निर्धनता एवं अशुभ, दशम-चतुर्थ में दौर्भाग्य और दैन्य होता है। राशियों के विचार करने से ही मनुष्य के मन में चन्द्रमा का विचार हो जाता है। इसलिए दोनों की राशियों का विचार कर लेना चाहिए।

नाड़ी : 'नाड़ी' के नाम से समझना चाहिए कि यह वह नाड़ी है जिसे देखकर वैद्य, हकीम या डॉक्टर रोग का पता लगाते हैं। इसी नाड़ी को अंग्रेजी में 'पुल्स' भी कहते हैं। ज्योतिष में तीन नाड़ियाँ मानी गयी हैं—आदि, मध्य, अन्त्य। ये तीन नाड़ियाँ वैद्यक के अनुसार क्रम से वात, पित्त और कफ की नाड़ियाँ हैं। यदि वर-वधू दोनों की आदि (वायु) नाड़ी हो तो दोनों के संयोग से वात का आधिक्य होने से पति की हानि होगी। यदि दोनों के मध्य (पित्त) नाड़ी हो, तो दोनों के संयोग से पित्त का आधिक्य होने से पति की हानि होगी। और यदि दोनों की अन्त्य (कफ) नाड़ी होगी तो कफ का आधिक्य दोनों की मृत्यु करा देगा। शरीर की क्रिया नाड़ी पर अवलम्बित है। इसलिए शास्त्रकारों ने नाड़ी पर अधिक जोर देकर कहा है—

'सदा नाशयत्येकनाड़ी समाजो
भकूटादिकान् सप्तभेदास्तथा च।'

अर्थ : वर्णादि सातों ठीक हों और नाड़ी एक हों तो भी विवाह नहीं करना चाहिये। परन्तु साथ-साथ उन्होंने सूक्ष्म विचार करके परिहार भी लिखे हैं।

अब मंगल ग्रह की विशेषता पर विचार किया जाता है। सभी ग्रहों के अंशों के मेल से यह शरीर बनता है। और रक्त संचालन क्रिया पर निर्भर करता है। यह रक्त ज्योतिष का मंगल ग्रह माना गया है। यदि दोनों का मंगल (रक्त) ठीक मिल गया अर्थात् दोनों का रक्त एक-दूसरे के उपयुक्त हुआ तो उनका जीवन आधी-व्याधि से व्यथित नहीं होगा। इसके विपरीत दोनों का मंगल (रक्त) उपयुक्त नहीं है तो जिस तरह दूध में विकार हो जाने से वह फट जाता है और बरबाद हो जाता है। इसी तरह एक-दूसरे के रक्त भी अनुपयोगी हो जाता है और रक्त पर निर्भर करने वाला मनुष्य का शरीर टिक नहीं सकता। इसलिए रक्त की उपयुक्तता जानने के लिए मंगल मिलाना आवश्यक है।

इन सब बातों पर विचार करने से यही पता लगता है नक्षत्र और ग्रह गणना न करने से मनुष्य की, समाज और देश की बड़ी हानि होती है।

सिंहस्थ-गुरु व्यवस्था :

सामान्य रूप से गुरु की राशि पर सूर्य और सूर्य की राशि में गुरु के आने पर गुर्वादित्य नामक दोष होता है।

गुरुक्षेत्रगते भानौ भानुक्षेत्रगते गुरौ।
गुर्वादित्यः स विज्ञेयो गर्हितः सर्वकर्मसु॥

इसी प्रकार सामान्य रूप से लगभग 12 वर्षों के बाद सिंह राशि पर गुरु के आने से गुर्वादित्य दोष, विवाहादि शुभ कार्य में वर्जित है।

'अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे।
गुर्वादित्ये विश्वघस्रेऽपि पक्षे प्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम्॥1॥
सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत्।
भागीरथी-याम्यतटं हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे॥2॥
मघादि-पञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः।
गंगागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत्॥3॥
मेषेऽर्के सन् व्रतोद्वाहो गंगा-गोदान्तरेऽपि च।
सर्वः सिंहे गुरुर्वर्ज्यः कलिंगे गौडगुर्जरे॥4॥

(मुहूर्त चिन्तामणि, शु०प्र०)

'सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः।
सर्वदेशे स्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः॥

(राज० मा०)

श्रीलल्ल के वचनानुसार सिंह राशि के गुरु में गोदावरी के उत्तर तट से भागीरथी के दक्षिण के स्थलों में विवाहादि शुभ कार्य वर्जित हैं।

यथा- **'गोदावर्युत्तरतो यावद् भागीरथीतटं याम्यं, यत्र विवाहो नेष्टः सिंहस्थे देव पतिं पूज्यः'॥**
'भागीरथ्युत्तरे कुले गौतम्याः दक्षिणे तथा।
विवाहो व्रतबन्धो वा सिंहस्थेज्ये न दुष्यति॥(व.सं.)

सबका सारांश अधोलिखित है—

1. सिंह राशि का गुरु कलिंग, गौड़ और गुर्जर देशों में शुभ कार्य के लिए वर्जित है। 2. सिंह राशि में सिंह नवांश का, गौतमी के दक्षिण तटवासी नगरों में सिंहस्थ गुरु होने पर व्रतबन्ध, विवाहादि शुभ होता है। अतः मेष के सूर्य में समस्त देश में विवाहादि शुभ कार्य नहीं किये जा सकेंगे।

*

कर्मकाण्ड की सर्वोत्तम पुस्तक

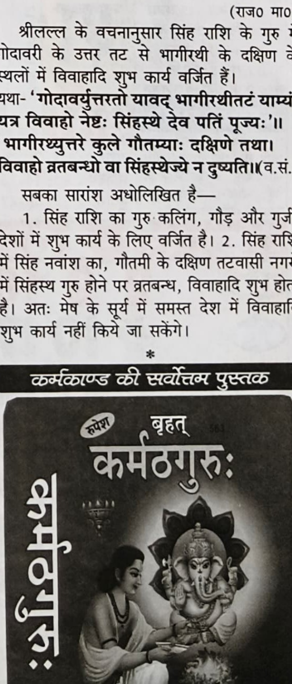

अपने नजदीकी पुस्तक विक्रेता या
On Line खरीदें।

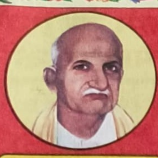

ठाकुर प्रसाद

रूपेश पंचाङ्ग

अप्रैल 4

2025 APRIL

विक्रम संवत् 2082	श्रीशालिवाहन शाके 1947	फसली सन् 1432	इस्लामी हिजरी सन् 1446	बंगला संवत् 1431-32	नेपाली संवत् 1145
चैत्र शुक्ल 3 से वैशाख शुक्ल 3 तक। ता. 14 से वैशाख मास प्रारंभ।	राष्ट्रीय चैत्र 11 से वैशाख 10 तक। ता. 21 से वैशाख मास प्रारम्भ।	प्र. चेतर 18 से प्र. विसाख 18 तक। ता. 13 से प्र. विसाख मास प्रारम्भ।	सव्वाल 2 से जिल्काद 1 तक। ता. 30 से जिल्काद माह शुरू।	चैत्र 18 से वैशाख 17 तक। ता. 14 से वैशाख सं. 1432 प्रारम्भ।	चैत्र 19 गते से वैशाख 17 गते तक। ता. 14 से वैशाख मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			योग		
16					

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	

भद्रा-विचार

ता.1 रात 8:16 से
ता.2 प्रातः 7:6 तक।
ता.4 रात 1:21 से
ता.5 दिन 12:43 तक।
ता.8 दिन 10:59 से
रात 11:4 तक।
ता.11 रात 2:32 से
ता.12 दिन 3:29 तक।
ता.15 रात 9:30 से
ता.16 दिन 10:26 तक।
ता.19 दिन 1:52 से
रात 1:57 तक।
ता.22 रात 12:11 से
ता.23 दिन 11:33 तक।
ता.26 प्रातः 5:45 से
सायं 4:34 तक।
ता.30 रा.शे.4:58 से।

तेजी-मंदी

गल्ला, तेल, दलहन, गुड़, शक्कर, रुई, वस्त्र, सोना-चाँदी, औषधि, लौहे के सामान में तेजी रहेगी। मोती, फल-फूल में घटाबढ़ी रहेगी।

मूल विचार

ता.7 को श्लेषा दिन 9:46 से।
ता.9 को मघा दिन 11:22 तक।
ता.16 को ज्येष्ठा रात 3:8 से।
ता.19 को मूल प्रातः 6:50 तक।
ता.25 को रेवती रात 3:56 से।
ता.27 को अश्विनी रात 12:42 तक।

वार					
रवि SUN		चैत्र शुक्ल नवमी रात 11:15 तक; **6**; मु.7 बंग.23; रा.16 नै.चैत्र 24 गते; श्रीरामनवमी व्रत; कर्क चं. पुनर्वसु दिन 9:42 तक	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा समस्त; **13**; मु.14 बंग.30; रा.23 नै.चैत्र 31 गते; मेष संक्रान्ति; तुला चं. सा.6:27 से, चित्रा रात 7:43 तक	वैशाख कृष्ण सप्तमी दिन 2:0 तक; **20**; मु.21 बंग.7; रा.30 नै.वैशाख 7 गते; मकर चं. दिन 1:32 से, पू.षा. प्रातः 7:26 तक	वैशाख कृष्ण अमावस्या रात 12:59 तक; **27**; मु.28 बंग.14; रा.7 नै.वैशाख 14 गते; अमावस्या; मेष चं. अश्विनी रात 12:42 तक
सोम MON		चैत्र शुक्ल दशमी रात 10:55 तक; **7**; मु.8 बंग.24; रा.17 नै.चैत्र 25 गते; कर्क चं. पुष्य दिन 9:46 तक	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा प्रातः 6:30 तक; **14**; मु.15 बंग.1; वैशाखी पर्व; रा.24 नै.वैशाख 1 गते; अम्बेडकर जयन्ती; तुला चं. स्वाती रात 10:20 तक	वैशाख कृष्ण अष्टमी दिन 1:40 तक; **21**; मु.22 बंग.8; रा.1 नै.वैशाख 8 गते; मकर चं. उ.षा. प्रातः 7:52 तक	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा रात 10:31 तक; **28**; मु.29 बंग.15; रा.8 नै.वैशाख 15 गते; वृष चं. रात 4:38 से, भरणी रात 11:1 तक
मं TUE	चैत्र शुक्ल तृतीया दिन 9:26 तक; भद्रा; **1**; मुस्लिम 2 बंगला 18; राष्ट्रीय 11 नेपाली चैत्र 19 गते; वृष चं. रात 8:32 से, भरणी दिन 2:55 तक	चैत्र शुक्ल एकादशी रात 11:4 तक; भद्रा; **8**; मु.9 बंग.25; रा.18 नै.चैत्र 26 गते; एकादशी व्रत; सिंह चं.दिन 10:18 से, श्लेषा दिन 10:18 तक	वैशाख कृष्ण द्वितीया दिन 8:33 तक; **15**; मु.16 बंग.2; रा.25 नै.वैशाख 2 गते; वृश्चिक चं. सायं 6:15 से, विशाखा रात 12:53 तक	वैशाख कृष्ण नवमी दिन 12:49 तक; भद्रा; **22**; मु.23 बंग.9; रा.2 नै.वैशाख 9 गते; कुम्भ चं. रात 7:35 से, श्रवण प्रातः 7:49 तक	वैशाख शुक्ल द्वितीया रात 8:9 तक; **29**; मु.30 बंग.16; रा.9 नै.वैशाख 16 गते; चन्द्रदर्शन; वृष चं. कृत्तिका रात 9:26 तक	
बु WED	चैत्र शुक्ल चतुर्थी प्रातः 7:6 तक, पंचमी रा.शे. 4:56 तक; भद्रा; **2**; मु.3 बंग.19; रा.12 नै.चैत्र 20 गते; वृष चं. कृत्तिका दिन 1:21 तक	चैत्र शुक्ल द्वादशी रात 11:48 तक; **9**; मु.10 बंग.26; रा.19 नै.चैत्र 27 गते; सिंह चं. मघा दिन 11:22 तक	वैशाख कृष्ण तृतीया दिन 10:26 तक; भद्रा; **16**; मु.17 बंग.3; रा.26 नै.वैशाख 3 गते; गणेश चतुर्थी व्रत; वृश्चिक चं. अनुराधा रात 3:8 तक	वैशाख कृष्ण दशमी दिन 11:33 तक; भद्रा; **23**; मु.24 बंग.10; रा.3 नै.वैशाख 10 गते; कुम्भ चं. धनिष्ठा प्रातः 7:20 तक	वैशाख शुक्ल तृतीया सायं 5:57 तक; भद्रा; **30**; मु.1 बंग.17; रा.10 नै.वैशाख 17 गते; वृष चं. रोहिणी रात 8:2 तक	
गु THU	चैत्र शुक्ल षष्ठी रात 2:58 तक; **3**; मु.4 बंग.20; रा.13 नै.चैत्र 21 गते; मिथुन चं. रा. 11:26 से, रोहिणी दि. 11:58 तक	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी रात 12:55 तक; **10**; मु.11 बंग.27; प्रदोष व्रत; रा.20 नै.चैत्र 28 गते; महावीर जयंती; कन्या चं. रात 7:24 से, पू.फा. दिन 12:54 तक	वैशाख कृष्ण चतुर्थी दिन 12:0 तक; भद्रा; **17**; मु.18 बंग.4; रा.27 नै.वैशाख 4 गते; धनु चं. रा.शे.5:1 से, ज्येष्ठा रा.शे. 5:1 तक	वैशाख कृष्ण एकादशी दिन 9:55 तक; **24**; मु.25 बंग.11; रा.4 नै.वैशाख 11 गते; एकादशी व्रत; मीन चं. रात 11:39 शतभिषा प्रा.6:31 तक, पू.भा. रा.शे.5:21 तक		
शु FRI	चैत्र शुक्ल सप्तमी रात 1:21 तक; भद्रा; **4**; मु.5 बंग.21; रा.14 नै.चैत्र 22 गते; मिथुन चं. मृगशिरा दिन 10:52 तक	चैत्र शुक्ल चतुर्दशी रात 2:32 तक; भद्रा; **11**; मु.12 बंग.28; रा.21 नै.चैत्र 29 गते; कन्या चं. उ.फा. दिन 2:53 तक	वैशाख कृष्ण पंचमी दिन 1:9 तक; **18**; मु.19 बंग.5; रा.28 नै.वैशाख 5 गते; धनु चं. मूल समस्त	वैशाख कृष्ण द्वादशी प्रातः 7:56 तक; **25**; मु.26 बंग.12; रा.5 नै.वैशाख 12 गते; प्रदोष व्रत; मीन चं. उ.भा. रात 3:56 तक		
श SAT	चैत्र शुक्ल अष्टमी रात 12:5 तक; भद्रा; **5**; मु.6 बंग.22; रा.15 नै. चैत्र 23 गते; कर्क चं.रात 3:49 से, आर्द्रा दिन 10:7 तक	चैत्र शुक्ल पूर्णिमा रा.शे. 4:27 तक; भद्रा; **12**; मु.13 बंग.29; रा.22 नै.चैत्र 30 गते; पूर्णिमा; कन्या चं. हस्त सायं 5:13 तक	वैशाख कृष्ण षष्ठी दिन 1:52 तक; भद्रा; **19**; मु.20 बंग.6; रा.29 नै.वैशाख 6 गते; धनु चं. मूल प्रातः 6:50 तक	वैशाख कृष्ण त्रयोदशी प्रातः 5:45 तक, चतुर्दशी रात 3:24 तक; भद्रा; **26**; मु.27 बंग.13; रा.6 नै.वैशाख 13 गते; मेष चं. रात 2:20 से, रेवती रात 2:20 तक		

सूर्य नक्षत्र

ता.13 को अश्विनी मेष राशि रा.शे.5:29 से।
ता.27 को भरणी रात 9:45 से।

पंचक विचार

ता.22 को रात 7:35 से ता.26 को रात 2:20 तक।

विवाह मुहूर्त

ता.14, 15, 16, 18, 19, 20, 21, 25, 29, 30।

तारीख :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
सूर्योदय :	5:52	51	50	50	49	48	48	47	46	45	45	44	43	42	42	41	40	40	39	38	38	37	36	36	35	34	34	33	32	32
सूर्यास्त :	6:8	9	10	10	11	12	12	13	14	15	15	16	17	18	18	19	20	20	21	22	22	23	24	24	25	26	26	27	28	28

व्रत-त्यौहार

1. मंगल-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, सरहुल-बिहार, सौभाग्य सुन्दरी तीज व्रत, मूर्ख दिवस।
3. गुरु-स्कन्द षष्ठी व्रत, सूर्यषष्ठी व्रत-बिहार।
4. शुक्र-अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रारम्भ रात 1:21 से।
5. शनि-महाष्टमी व्रत, महानिशा पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा रात्रि 12:5 तक।
6. रवि-महानवमी व्रत, दुर्गानवमी, श्रीरामनवमी व्रत।
7. सोम-नवरात्र व्रत पारण।
8. मंगल-कामदा एकादशी व्रत-सबका।
10. गुरु-प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी-जैन, महावीर जयंती-जैन।।
12. शनि-स्नान-दान-व्रत की चैत्र पूर्णिमा, हनुमान प्राकट्योत्सव।
13. रवि-वैशाख-स्नान-दान आरम्भ, अश्विनी-मेष संक्रांति रा.शे.5:29।
14. सोम-मेष-सतुआ संक्रांति पुण्य काल, खरमास समाप्त।
16. बुध-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत च.उ.रा. 9:27।
18. शुक्र-गुड फ्राइडे।
21. सोम-शीतलाष्टमी व्रत।
24. गुरु-वरूथिनी एकादशी व्रत।
25. शुक्र-प्रदोष व्रत।
26. शनि-मास शिवरात्रि व्रत।
27. रवि-स्नान-श्राद्ध की अमा., भरणी के सूर्य रात 9:45।
29. मंगल-चन्द्रदर्शन, परशुराम जयंती।
30. बुध-अक्षय तृतीया व्रत।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

मेष- शरीर स्वस्थ रहेगा, कोई स्थायी लाभ हो सकता है, कारोबार में मंदी।
वृष- घर से दूर रहना पड़ सकता है, क्षमता के अनुकूल परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।
मिथुन- स्त्री से कुछ मनमुटाव सम्भव है, दाम्पत्य जीवन में सुख शांति रहेगी।
कर्क- यात्रा में कष्ट, हानि का योग है, कानूनी कार्यों में असफला प्राप्त होगी।
सिंह- कार्यों में अवरोध होगा, मानसिक अशांति रहेगी, अस्थि रोग से कष्ट होगा।
कन्या- बौद्धिक प्रगति तथा मान-सम्मान बढ़ेगा, आकस्मिक धन लाभ सम्भव है।
तुला- विद्यार्थियों के लिए यह मास उन्नति कारक है, दाम्पत्य जीवन में कटुता सम्भव है।
वृश्चिक- नौकरी में स्थानान्तरण सम्भव है, समाज में मान-सम्मान यश मिलेगा।
धनु- दूरस्थ यात्रा कष्टदायक होगी, धार्मिक कार्यों में अभिरूचि बढ़ेगी, शत्रु प्रबल होंगे।
मकर- पूँजी का अपव्यय, मानसिक तनाव से बचें, व्यवसाय क्षेत्र में लाभ होगा।
कुम्भ- मास का पूर्वार्द्ध अत्यधिक संघर्षपूर्ण रहेगा, सम्पत्ति के विक्रय से हानि होगी।
मीन- शत्रु प्रबल होंगे, उदर रोग से कष्ट होगा, स्त्री पक्ष से मनमुटाव संभव है।

आकाशी-लक्षण

उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली व पंजाब में वर्षा कारक योग है। कहीं-कहीं ओलावृष्टि होने से फसलों की हानि होगी, दक्षिण-पूर्वी प्रान्तों में तूफानी चक्रवात का भय हो सकता है।

मार्च-2025

रवि	2	9	16	23
सोम	3	10	17	24
मंगल	4	11	18	25
बुध	5	12	19	26
गुरु	6		20	27
शुक्र	7		21	28
शनि 1	8		22	29

मई-2025

रवि		4	11	18	25
सोम		5		19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

होड़ा चक्र–इसके द्वारा जन्म–समय के नक्षत्र से या जन्म–समय के रखे नाम के प्रथम अक्षर से अपनी राशि, वर्ण, वश्य, योनि, राशि–स्वामी, गण तथा नाड़ी मालूम करें।

नामाक्षर	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.इ. उ.ए.	ओ.वा. वी.वू.	वे.वो. का.की.	कु.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.	मा.मी. मु.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रु.रे. रो.ता.	ती.तू. ते.तो.	ना.नी. नू.ने.	नो.या. यि.यू.	ये.यो. भा.भी.	भू.ध. फ.ढ.	भे.भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. दा.दी.	दू.थ. झ.ञ.	दे.दो. चा.ची.
नक्षत्र	अश्व.	भर.	कृति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा.	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
राशि	मेष	मेष	मे. १ वृ. ३	वृष	वृ. २ मि. २	मिथुन	मि. ३ कर्क. १	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं. १ क. ३	कन्या	कन्या २ तु. २	तुला	तु. ३ वृश्चि. १	वृश्चि.	वृश्चि.	धनु	धनु	धनु १ मकर ३	मकर	मकर २ कुम्भ २	कुम्भ	कुं. ३ मी. १	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्री	क्षत्री	क्ष. १ वै. ३	वैश्य	वै. २ शू. २	शूद्र	शू. ३ ब्रा. १	विप्र	विप्र	क्षत्री	क्षत्री	क्ष. ३ वै. ३	वैश्य	वै. २ शू. २	शूद्र	शू. ३ ब्रा. १	विप्र	विप्र	क्षत्री	क्षत्री	क्ष. १ वै. ३	वैश्य	वै. २ शू. २	शूद्र	शू. ३ ब्रा. १	विप्र	विप्र
वश्य	चतुष्प.	चतुष्प.	चतुष्प.	चतुष्प.	चतु. २ मा. २	मानव	मा. ३ जल. १	जल.	जल.	चतुष्प.	चतुष्प.	चतु. १ मा. ३	मानव	मानव	मानव	मा. ३ कीट १	कीट	कीट	मानव	मा.॥ चतु. ३॥	चतु.	चतु. १॥ जल. २॥	जल २ मा. २	मानव	मा. ३ जल. १	जल.	जल.
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जा	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
योनिवैर	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग.	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशिश	मंगल	मंगल	मं. १ शु. ३	शुक्र	शु. २ बु. २	बुध	बु. ३ च. १	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सू. १ बु. ३	बुध	बु. २ शु. २	शुक्र	शु. ३ म. १	मंगल	मंगल	गुरु.	गुरु.	गु. १ श. ३	शनि	शनि	शनि	श. ३ गु. १	गुरु.	गुरु.
गण	देव	मनु.	राक्ष.	मनु.	देव	मनु.	देव	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु.	मनु.	देव	राक्ष.	देव	राक्ष.	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु.	मनु.	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु.	मनु.	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	अध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

१ वर्ण गुण ज्ञान चक्र

वर → कन्या ↓	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

६ गण मैत्री ज्ञान चक्र

वर → कन्या ↓	देव	मानव	राक्ष.
देवता	६	५	१
मानव	६	६	०
राक्षस	०	०	६

२ वश्य गुण ज्ञान चक्र

वर → कन्या ↓	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	॥	०	१
जलचर	१	॥	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

८ नाड़ी गुण ज्ञान चक्र

वर → कन्या ↓	आदि	मध्य	अंत्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त	८	८	०

जन्म पत्री मिलान में ३६ गुण होते हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ २७ गुण के ऊपर अत्यन्त शुभ मानते हैं। अन्य बातों का भी विचार किया जाता हैं।

भकूट के गुण ७

वर → कन्या ↓ राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथु.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चि.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नैसर्गिक ग्रह मैत्री चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु.	शुक्र	शनि	ग्रह
चन्द्र मं.गु.	सूर्य बुध	सूर्य चं. गु.	सूर्य शुक्र	सूर्य चं. मं.	बुध शनि	बुध शुक्र	मित्र
बुध	मं. बु. शु. श.	शुक्र शनि	मंगल गु. श.	शनि	मंगल गुरु	गुरु	सम
शुक्र शनि	०	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चं. मं.	शत्रु

तारा के गुण ३

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति- कन्या के नक्षत्र से वर नक्षत्र तक, वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर अलग अलग दोनों में ९ के भाग से शेष ३, ५, ७ बचे तो तारा।

५ ग्रह मैत्री गुण बोधक चक्र

वर → कन्या ↓	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

४ योनि गुण ज्ञान चक्र

वर → कन्या ↓	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	२	३	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	१	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	२	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	३	२	२	२	२	४

कुण्डली में मंगल आदि का विचार

१, ४, ७, ८ व १२वें स्थानों में मंगल होने से मंगली कहलाती हैं। वर की कुण्डली हो तो स्त्री को और स्त्री की हो, तो पति को हानि। यदि दोनों की कुण्डली में मंगल हो, तो दोष नहीं। इसी प्रकार हम इन स्थानों में शनि, राहु, केतु और सूर्य का भी विचार किया जाता है। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चंद्र कुण्डली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

गुणबोधक चक्र– वर नक्षत्र के नीचे तथा कन्या नक्षत्र के सामने जितने अंक मिलेंगे, वर–कन्या के गुणों का योग फल होगा। जैसे कन्या का नक्षत्र भरणी और वर का अश्विनी है तो अश्विनी के नीचे भरणी के सामने ३४ गुण है।

नक्षत्र वर →	अ.	भ.	कृति	कृति	रो.	मृग	मृग	आ.	पुन.	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा.	पूफा.	उफा.	उफा.	हस्त.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मूल.	पू.षा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	श्रव.	धनि.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
नक्षत्र कन्या ↓			१	३		२	२		३	१					१	३		२	२		३	१				॥	३॥	१	३	१॥	२॥	२	२		३	१		
अश्विनी	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१८	२२॥	३१॥	२७	२२	२६	१७॥	११	९	१३	२२॥	२६॥	२२॥	११॥	२६॥	१५	१३	२६	२७	२४॥	२६	२७	२६	११	११	१५	१६	१४॥	२६	२४॥
भरणी	३४	२८	२९	१९	२२॥	१४॥	१९	२६	२६	३०॥	२३॥	२४॥	२१	१९	२८	२२॥	२०	६	१४॥	२१॥	२२॥	११॥	१७॥	११॥	२०	१९	२०	२७	२८॥	२८	२७	१०	१०	२०	२४	२२॥	१७॥	२९॥
कृतिका१	२७॥	२६॥	२८	१६॥	११	१७॥	१९	२०	२२	२५॥	२६॥	२३॥	१७॥	२१	२२	१५॥	१५॥	१८	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	२०॥	२६॥	२४॥	१८	१९	१४	१५॥	१२॥	११॥	२५	२५	२७	१९	२४	१९॥	११॥
कृतिका३	१८॥	१८॥	१९	२८	२०	२६॥	१६॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१९॥	२३	२४	२१	२१॥	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२०	१२	१३॥	९॥	१४	११	१०	२३॥	२१॥	३१॥	२३॥	२०	२२	१४
रोहिणी	२३॥	२३॥	१०	११	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२८	१३	२२॥	२६॥	२८	२५	२६	२०	११	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	२०	२१	१२॥	१७	१९	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१९
मृगशिरा२	२३॥	१३॥	१८॥	२८॥	३४	२८	१९	२५	२३॥	२७	२०	२२	२१॥	१७॥	२५॥	२२॥	२६	१३	१३	२५	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	१२	१२	१८	२१॥	२७	२६	१३	१९	२७	२९॥	२६	१७	२७
मृगशिरा२	२७	१८	२१	१८॥	२७	२०	२८	३३	३२॥	२०	१३	१५॥	२४॥	२०॥	२८॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	१९॥	१४	११	१५	२३	१९	१८	१४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२६	१६॥	२६॥
आर्द्रा	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥	२३॥	२१॥	२२॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	२३॥	१७	४	१६	२८	२७	२७	२३॥	२३॥	२३॥	१८	१९	१२	१७	१९॥	२६॥	२६॥
पुनर्वसु३	१९	२६	३२	२०॥	२३॥	२४॥	३२॥	३४	२८	१५	२३	१६	२३॥	२७॥	२१॥	२३॥	२४॥	२५॥	१८॥	२७	२१	१३॥	२०॥	५	१३	२७	२६	२६	२२॥	२३॥	२३॥	१६॥	१८॥	१२॥	१७	१९॥	२७	२६॥
पुनर्वसु१	२१॥	२८॥	२३॥	२०	२५	२६	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२१॥	१६॥	२०॥	१४॥	१७॥	१८	२०॥	२०	२७	२१	१९	२५	१०॥	८	२१	२१॥	२१॥	२६॥	२६	२७	२१	१३	६॥	११	१७	२५	२४॥
पुष्य	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	२७	१०	१८	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६॥	२७	१२	१२	२६॥	२१	२०	२८	२२	१७	११	११॥	२२॥	२६	२४	२५	१२	३॥	१४॥	१८	२४	११	२७
आश्लेषा	२५	२३॥	२२॥	१९	१२	२०	१३	१२	१५	२८॥	२१	२८	१५	१५॥	१७॥	२०॥	२०	२५	२५	११॥	१६॥	१५॥	११	२५	२२॥	१६	१६॥	८॥	१२	१३	१३	२७	१९	१९॥	१२॥	१८॥	२०	१२
मघा	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१९॥	२२॥	२२॥	२१॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१६॥	१६॥	२२॥	२५॥	११॥	१७॥	२४॥	२६॥	३४	२४	२०	२१	११॥	५॥	५॥	४॥	१७॥	२४॥	२६॥	१८॥	१७॥	१८॥	१२
पू.फा.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१७॥	३०॥	२८॥	२७॥	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४	२४	२२॥	८॥	११॥	१५॥	१९॥	२९॥	२३॥	२६॥	१९	१८	१९	२७	२१	१९॥	१८॥	३॥	१०॥	२०॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ.फा.१	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८॥	२१॥	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१८	१७	१४॥	१७॥	२६॥	१७॥	२४॥	३२॥	१९॥	१०॥	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११॥	१८॥	१२॥	१६॥	१५॥	२६॥	२१॥
उ.फा.३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	९॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१९	२८	२७	३४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१८	२७	१३	१५॥	२९॥	२८॥	२९॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८॥	३१॥	२६॥
हस्त	१०	२०	१६॥	२१	२५	२६	३३	२२॥	२३॥	१९॥	२८॥	२२	१८॥	२२॥	१७	२६	२८	२८	२०	२६॥	१७॥	१९॥	२६	१३	१४	२७	२६	२७॥	२४	२५	२५	१८	१९	८॥	१५॥	१८॥	२९॥	२७॥
चित्रा२	१३	६	१९	२५॥	२०	१२	१९	२६	२४॥	२०॥	१२॥	२६॥	२३॥	९॥	१५॥	२४॥	२७	२८	२०	१९	२६॥	२८	१९	२५	२८	१४	१३	२१	१७॥	१९	१९	१७	१६	२४	१७॥	२०॥	१०॥	१३॥
चित्रा२	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	[illegible]	१८॥	२०	१२॥	२६	२६॥	९॥	१८॥	१७॥	२०	२१	२८	२७	३४॥	२१	७॥	२१॥	२८	१४	१३	२१	२४॥	२७	२७	२५	१९	२६	१९॥	१३॥	१०॥	१३॥
स्वाती	२७॥	२१॥	१७॥	१२॥	१५॥	२६	२७	२६	२६	२८॥	२८	१३॥	१३॥	२५॥	२६॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	२३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३॥	२१	२३	२०	२७	२१	१९॥	१३॥
विशाखा३	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	३०॥	१८॥	१९॥	२०	१८॥	२२॥	२१॥	१७॥	१८॥	२०॥	१८॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१९	२८	१८	१७	२०॥	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७॥	१७॥	३१॥	२५॥	२६	२१	१५	१३	५॥
विशाखा१	१६॥	१६॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	१३	१३	१२	१८	१८	१४॥	२२॥	२४॥	२२॥	१८	१९	२८	२३॥	६	२४	२८	२८	३१॥	२३॥	१६॥	१७॥	९॥	१२	१२	१२	२६	२६	२६॥	१९॥	१८	१८	१०॥
अनुराधा	२४॥	१४॥	११॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	१९	२५	१८	२०	२४॥	२१॥	३०॥	२६	२६	१२	६॥	२१॥	१९	२८	२८	३१	१६॥	१४॥	१४॥	२२॥	२५	२६	२६	१३	१३	२२	२६॥	२५	१८	२६
ज्येष्ठा	१३	१८॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	१३	३	५	९॥	२०	२५	३२	२४॥	१७॥	१३	१९	२५	२३॥	१५॥	१९॥	३२॥	३०	२८	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२६	२६	१९	१२	१०॥	२२	२०
मूल	१२	२०	२६॥	१९	१३	१३	२१	१५	१२	८॥	१७॥	२४	२५	१९	१०॥	१३	१३	२७	२६	२१	२६	२४॥	१५॥	२६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२०॥	२८॥	२१॥	१४॥	१९	२५	२६॥
पू.षा.॥	२६	१८	१८	१२॥	१९	११	११	२७	२७	२२॥	१३॥	१७॥	२०	१८	२६	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१५॥	१७॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३॥	८॥	१६॥	२३॥	३०॥	३२	२३	३२
पू.षा.३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२७	२७॥	२६	११	११	२६	१९	१८॥	१७॥	१९॥	२७	२७॥	२८	३४	२४	२४॥	२३॥	८॥	१५॥	२२॥	२९॥	३२	२३॥	३२॥
उ.षा.१	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	२४	२६	२४	२३॥	२३॥	९॥	११॥	२७	२८	२८॥	२७॥	२०	२०	१८	१९	११॥	२५॥	१९॥	२५॥	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उ.षा.३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२२॥	२०॥	२२॥	२२॥	२७	२७	१३	६॥	२२	२३	२६	२५	१७॥	२४॥	२२॥	१६॥	१४	२८	२२	१६॥	२४	२५	१९	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	३०॥	२९॥	३२॥	२३॥
श्रवण १॥	२८	२७	१४॥	१२	१८	२६	२४	२१॥	२२॥	२७	२५	१४	७॥	१९॥	२१	२४	२५	१९	२६	२२॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४॥	१९	२५	२८	२७	३०	२३	१८॥	२३॥	२९॥	३०॥	२९॥
श्रवण २॥	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	२३	२१	२२	२८	२६	१५	६॥	१८॥	२०	२३॥	२४॥	१८॥	२५॥	२३	१९	१४	२८	२३	१९	२३	२३॥	१५	२४	२७	२८	३०	२१॥	१८	२३	३०॥	३१॥	२२॥
धनिष्ठा २	२०॥	११	२६	२३॥	२०	१२	८	१६॥	१७॥	२२	१३	२८	१८॥	४॥	१२॥	१६	१९॥	१६॥	२१	२६	३०	२८	२४	२८	२२	८	८॥	१६॥	२५॥	२७	२८	२८	२०	२३॥	१९	२६॥	१५॥	२२॥
धनिष्ठा २	२०	१०	२६	३०॥	२७॥	११	१०॥	११	१८॥	१४	५	२०	२५॥	११॥	१९॥	१७॥	२१	१८	११	२१	२५॥	२७	१२	२६	२१॥	१६॥	१५॥	२३॥	१८॥	२०	२०	१९	२८	३३	२१॥	१८	७	२४
शतभिषा	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२५	१८॥	११	१३	७॥	१५	२०	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	८॥	२५	२६	१९	२६	२६॥	२१	१९	२२॥	२४॥	२४॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८॥	२५	३३	२८	१९	८॥	१७	२६
पू.भा.३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३२॥	२४॥	१७	१८	१३॥	२०॥	१४	१९॥	२५॥	१७॥	१५॥	१७॥	१८॥	१९॥	२८	२१	२२॥	२७॥	१२	१५॥	३१॥	३०॥	२९॥	२४॥	२५॥	२५॥	२०॥	२८॥	२१	२८	१७॥	२२॥	२०
पू.भा.१	१४॥	१२॥	१६॥	११	२६	२६	२६	१८	१९	१८	२५	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१९॥	१२॥	१८	२४	२१	२७	११॥	१५	३०॥	३१॥	३०॥	२८॥	२९॥	३०॥	२५॥	१७॥	७॥	१७॥	२८	२६	२३॥
उ.भा.	२४॥	२५॥	१८॥	२१	२५	१७	१६॥	२५॥	२७	२६	१९	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६॥	९॥	३॥	११॥	१२	११	२७	२२	२४	२२	२२॥	३१॥	३१॥	२८॥	२९॥	२२॥	१४॥	१९	२२॥	३३	२८	३३
रेवती	२५	२४॥	११॥	१८	१७	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२४॥	२७	१४	१२	२३॥	२३॥	२४	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	५॥	१२॥	२७	२२	२७	३०॥	३०	३१॥	१९॥	२२॥	२३॥	२२॥	१४॥	१९	२०	३१॥	३३	२८

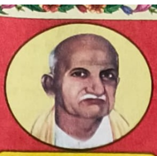

ठाकुर प्रसाद

रूपेश पंचाङ्ग

मई 5 2025 MAY

विक्रम संवत् 2082	श्रीशालिवाहन शाके 1947	फसली सन् 1432	इस्लामी हिजरी सन् 1446	बंगला संवत् 1432	नेपाली संवत् 1145
वैशाख शुक्ल 4 से ज्येष्ठ शुक्ल 5 तक। ता. 13 से ज्येष्ठ मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय वैशाख 11 से ज्येष्ठ 10 तक। ता. 22 से ज्येष्ठ मास प्रारम्भ।	प्र. विसाख 19 से प्र. जेठ 19 तक। ता. 13 से प्र. जेठ मास प्रारम्भ।	जिल्काद 2 से जिलहिज 3 तक। ता. 29 से जिलहिज माह शुरू।	वैशाख 18 से ज्येष्ठ 17 तक। ता. 15 से ज्येष्ठ मास प्रारम्भ।	वैशाख 18 गते से ज्येष्ठ 17 गते तक। ता. 15 से ज्येष्ठ मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			31		
16			योग		

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	31

भद्रा-विचार

ता.1 दिन 3:57 तक।
ता.4 दिन 12:9 से रात 11:58 तक।
ता.7 रात 1:9 से ता.8 दिन 1:42 तक।
ता.11 रात 7:10 से ता.12 दिन 8:11 तक।
ता.15 दिन 1:11 से रात 1:45 तक।
ता.18 रात 2:12 से ता.19 दिन 1:45 तक।
ता.22 दिन 9:24 से रात 8:24 तक।
ता.25 दिन 1:21 से रात 12:8 तक।
ता.30 दिन 1:55 से रात 1:15 तक।

तेजी-मंदी

धातु, गल्ला, धान्य, रस-पदार्थ, रुई, कपास घी, सूत, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, फल-फूल, सोना-चाँदी में तेजी। खाद्यान्न में मंदी रहेगी।

मूल विचार

ता.4 को श्लेषा सायं 5:28 से ता.6 को मघा रात 6:51 तक।
ता.14 को ज्येष्ठा दिन 10:30 से ता.16 को मूल दिन 2:3 तक।
ता.23 को रेवती दिन 12:6 से ता.25 को अश्विनी दिन 8:55 तक।
ता.31 को श्लेषा रात 1:20 से।

सूर्य नक्षत्र

ता.11 को कृत्तिका सायं 4:43 से।
ता.14 को वृष राशि रात 3:52 से।
ता.24 को रोहिणी दिन 2:6 से।

पंचक विचार

ता. 19 को रात 3:33 से ता.24 को दिन 10:34 तक।

विवाह मुहूर्त

ता. 1,5,6,7,8,9,10,11,12,13,14,15,16,17,18,22,23,24,28।

वार					
रवि SUN		वैशाख शुक्ल सप्तमी दिन 12:9 तक भद्रा **4** मु. 5 बंग. 21 रा. 14 नै. वैशाख 21 गते कर्क चं. पुष्य सायं 5:28 तक	वैशाख शुक्ल चतुर्दशी रात 7:9 तक भद्रा **11** मु. 12 बंग. 28 रा. 21 नै. वैशाख 28 गते मातृ दिवस तुला चं. स्वाती समस्त	ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी रात 2:11 तक भद्रा **18** मु. 19 बंग. 4 रा. 28 नै. ज्येष्ठ 4 गते मकर चं. उ.षा. दिन 3:40 तक	ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी दिन 1:21 तक भद्रा **25** मु. 26 बंग. 11 रा. 4 नै. ज्येष्ठ 11 गते मेष चं. अश्विनी दिन 8:55 तक
सो MON		वैशाख शुक्ल अष्टमी दिन 11:47 तक **5** मु. 6 बंग. 22 रा. 15 नै. वैशाख 22 गते सिंह चं. सायं 5:55 से, श्लेषा सायं 5:55 तक	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा रात 9:13 तक भद्रा पूर्णिमा **12** बुद्ध जयंती मु. 13 बंग. 29 रा. 22 नै. वैशाख 29 गते वृश्चिक चं. रात 1:33 से, स्वाती प्रातः 5:37 तक	ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी रात 1:19 तक भद्रा **19** मु. 20 बंग. 5 रा. 29 नै. ज्येष्ठ 5 गते कुम्भ चं. रात 3:33 से, श्रवण दिन 3:44 तक	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी दिन 10:54 तक **26** मु. 27 बंग. 12 रा. 5 नै. ज्येष्ठ 12 गते श्राद्ध की अमावस्या वृष चं. दिन 12:51 से, भरणी प्रातः 7:14 तक
मं TUE		वैशाख शुक्ल नवमी दिन 11:54 तक **6** मु. 7 बंग. 23 रा. 16 नै. वैशाख 23 गते सिंह चं. मघा सायं 6:51 तक	ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा रात 11:4 तक **13** मु. 14 बंग. 30 रा. 23 नै. वैशाख 30 गते वृश्चिक चं. विशाखा दिन 8:10 तक	ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी रात 12:3 तक **20** मु. 21 बंग. 6 रा. 30 नै. ज्येष्ठ 6 गते कुम्भ चं. धनिष्ठा दिन 3:21 तक	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या दिन 8:30 तक **27** मु. 28 बंग. 13 रा. 6 नै. ज्येष्ठ 13 गते स्नान-दान की अमावस्या वृष चं. कृत्तिका प्रातः 5:38 तक रोहिणी रा.शे. 4:12 तक
बु WED		वैशाख शुक्ल दशमी दिन 12:36 तक भद्रा **7** मु. 8 बंग. 24 रा. 17 नै. वैशाख 24 गते कन्या चं. रात 2:47 से, पू.फा. रात 8:19 तक	ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया रात 12:38 तक **14** मु. 15 बंग. 31 रा. 24 नै. वैशाख 31 गते वृष संक्रान्ति वृश्चिक चं. अनुराधा दिन 10:30 तक	ज्येष्ठ कृष्ण नवमी रात 10:23 तक **21** मु. 22 बंग. 7 रा. 31 नै. ज्येष्ठ 7 गते कुम्भ चं. शतभिषा दिन 2:35 तक	ज्येष्ठ शु. प्रतिपदा प्रातः 6:17 तक द्वितीया रा.शे. 4:15 तक **28** मु. 29 बंग. 14 रा. 7 नै. ज्येष्ठ 14 गते चन्द्रदर्शन मिथुन चं. दिन 3:35 से, मृगशिरा रात 2:57 तक
गु THU	वैशाख शुक्ल चतुर्थी दिन 3:57 तक भद्रा **1** मुस्लिम 2 बंगला 18 राष्ट्रीय 11 नेपाली वैशाख 18 गते मिथुन चं. प्रातः 7:26 से, मृगशिरा सायं 6:50 तक	वैशाख शुक्ल एकादशी दिन 1:42 तक भद्रा **8** मु. 9 बंग. 25 रा. 18 नै. वैशाख 25 गते एकादशी व्रत कन्या चं. उ.फा. रात 10:12 तक	ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया रात 1:44 तक भद्रा **15** मु. 16 बंग. 1 रा. 25 नै. ज्येष्ठ 1 गते धनु चं. दिन 12:30 से, ज्येष्ठा दिन 12:30 तक	ज्येष्ठ कृष्ण दशमी रात 8:24 तक भद्रा **22** मु. 23 बंग. 8 रा. 1 नै. ज्येष्ठ 8 गते मीन चं. प्रा. 7:46 से, पू.भा. दिन 1:29 तक	ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया रात 2:34 तक **29** मु. 1 बंग. 15 रा. 8 नै. ज्येष्ठ 15 गते मिथुन चं. आर्द्रा रात 2:4 तक
शु FRI	वैशाख शुक्ल पंचमी दिन 2:19 तक **2** मु. 3 बंग. 19 रा. 12 नै. वैशाख 19 गते मिथुन चं. आर्द्रा सायं 6:1 तक	वैशाख शुक्ल द्वादशी दिन 3:15 तक **9** मु. 10 बंग. 26 रा. 19 नै. वैशाख 26 गते प्रदोष व्रत कन्या चं. हस्त रात 12:28 तक	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी रात 2:25 तक **16** गणेश चतुर्थी व्रत मु. 17 बंग. 2 रा. 26 नै. ज्येष्ठ 2 गते धनु चं. मूल दिन 2:3 तक	ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी सायं 6:11 तक **23** मु. 24 बंग. 9 रा. 2 नै. ज्येष्ठ 9 गते एकादशी व्रत मीन चं. उ.भा. दिन 12:6 तक	ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी रात 1:14 तक भद्रा **30** मु. 2 बंग. 16 रा. 9 नै. ज्येष्ठ 16 गते कर्क चं. रात 7:39 से, पुनर्वसु रात 1:29 तक
श SAT	वैशाख शुक्ल षष्ठी दिन 1:1 तक **3** मु. 4 बंग. 20 रा. 13 नै. वैशाख 20 गते कर्क चं. दिन 11:39 से, पुनर्वसु सायं 5:32 तक	वैशाख शुक्ल त्रयोदशी सायं 5:8 तक **10** मु. 11 बंग. 27 रा. 20 नै. वैशाख 27 गते तुला चं. रात 1:44 से, चित्रा रात 2:59 तक	ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी रात 2:33 तक **17** मु. 18 बंग. 3 रा. 27 नै. ज्येष्ठ 3 गते मकर चं. रात 9:15 से, पू.षा. दिन 3:6 तक	ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी दिन 3:49 तक **24** मु. 25 बंग. 10 रा. 3 नै. ज्येष्ठ 10 गते प्रदोष व्रत मेष चं. दि 10:34 से, रेवती दिन 10:34 तक	ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी रात 12:20 तक **31** मु. 3 बंग. 17 रा. 10 नै. ज्येष्ठ 17 गते कर्क चं. पुष्य रात 1:20 तक

तारीख	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
सूर्योदय	5:31	30	30	29	29	28	27	27	26	26	25	25	24	24	23	23
सूर्यास्त	6:29	30	30	31	31	32	33	33	34	34	35	35	36	36	37	37

तारीख	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
सूर्योदय	22	22	21	21	20	20	19	19	18	18	17	17	17	17	16
सूर्यास्त	38	38	39	39	40	40	41	41	42	42	43	43	43	43	44

व्रत-त्यौहार

1.गुरु-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, श्रमिक दिवस।
2.शुक्र-आद्य शंकराचार्य जयंती
3.शनि-श्रीगंगा सप्तमी, कमला सप्तमी, श्रीरामानुजाचार्य जयंती।
6.मंगल-सीता नवमी व्रत, श्रीजानकी प्राकट्योत्सव-वैष्णव मत।
7.बुध-रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती।
8.गुरु-मोहिनी एकादशी व्रत-सबका।
9.शुक्र-प्रदोष व्रत, परशुराम द्वादशी।
11.रवि-नृसिंह चतुर्दशी व्रत, कृत्तिका के सूर्य सायं 4:43।
12.सोम-स्नान-दान-व्रत की वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध जयंती।
13.मंगल-ज्येष्ठ बड़का मंगल।
14.बुध-वृष संक्रांति रात 3:52।
16.शुक्र-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रात 10:5।
20.मंगल-श्री शीतलाष्टमी व्रत, ज्येष्ठ बड़का मंगल।
23.शुक्र-अचला एकादशी व्रत।
24.शनि-प्रदोष व्रत, वट-सावित्री व्रतारंभ-उ.भा., रोहिणी के सूर्य दिन 2:6।
25.रवि-मास शिवरात्रि व्रत।
26.सोम-श्राद्ध की अमावस्या, वटसावित्री व्रत-उ.भा.।
27.मंगल-स्नान-दान की अमावस्या, शनिदेव प्राकट्यो., बड़का मंगल।
28.बुध-चन्द्रदर्शन, करवीर व्रत।
29.गुरु-रम्भा तीज व्रत, महाराणा प्रताप जयंती।
30.शुक्र-वैना. गणेश चतुर्थी व्रत।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि - फल

मेष- स्वयं को नियंत्रित रखना आपके लिए श्रेयस्कर होगा।
वृष- संतान से उत्तम सुख मिलेगा, न्यायालय कार्यों में सफलता होगी।
मिथुन- बच्चों के शिक्षा में अथक परिश्रम होगा, माता-पिता के तीर्थ का योग है।
कर्क- मित्र वर्ग से सहयोग मिलेगा, मानसिक कष्ट होगा, चिन्ता बढ़ेगी।
सिंह- संतान के प्रति चिंता होगी, यात्रा में कष्ट एवं हानि का योग है।
कन्या- भूमि-मकान के क्रय-विक्रय में लाभ होगा, दाम्पत्य जीवन में मतभेद सम्भव है।
तुला- पारिवारिक सम्पत्ति का लाभ होगा, मास अत्यन्त शुभ फल कारक है।
वृश्चिक- संतान के प्रति चिंता होगी, आय में कमी आयेगी, घरेलू खर्च में वृद्धि होगी।
धनु- मानसिक अशांति रहेगी, सगे-सम्बन्धियों से सहयोग मिलेगा।
मकर- धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, दाम्पत्य जीवन संघर्षमय होगा।
कुम्भ- दाम्पत्य जीवन सुखमय, आर्थिक क्षेत्र में किये गये प्रयासों में सफलता मिलेगी।
मीन- परिवार में स्वजनों से मतभेद सम्भव, न्यायालयीय कार्यों में स्थिति यथावत रहेगी।

आकाशी-लक्षण

भीषण गर्मी के साथ अग्नि भय का योग है। पूर्व-पश्चिम में अच्छी वर्षा होगी। तापमान में अत्यधिक वृद्धि के कारण उत्तर भारत, मध्य भारत, उत्तराखण्ड में गर्मी बढ़ेगी।

अप्रैल - 2025

रवि			13	20	27
सोम		7		21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3		17	24	
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

वृक्षारोपण -

आम की गुठली को धोकर रख लें, जून, जुलाई के महीने में सड़क के किनारे, पार्क या खाली जमीन में लगा दें। एक पेड़ लगाने से असंख्य जीव-जन्तुओं के जीवन का उद्धार होता है और उसका अपार पुण्य सहजता से प्राप्त होता है। वृक्षारोपण करना यज्ञ करने के समान फल देता है। प्राचीन पुस्तकों में भी विवेचन किया गया है कि नीम, आम का वृक्ष लगाने से सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिलती है। अतः अपने नजदीकी स्कूल, ग्राम पंचायत एवं धार्मिक संस्थाओं को भी इस पुनीत कार्य में सहभागी बनावें एवं दूसरों को भी प्रोत्साहित करें।

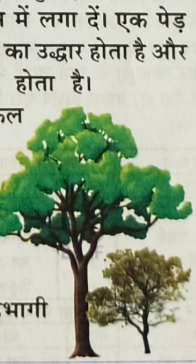

जून - 2025

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3		17	24	
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20		
शनि		14	21	28	

दिमागी ताकत के लिए घरेलू उपचार

Brain

अखरोट

बादाम
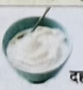
दही

काला व सफेद तिल

कोहड़ा का बीज

अनार
ब्रह्मी

शंखपुष्पी

विस्तृत रोग + दवा दिसम्बर के पीछे देखें।

यात्रा मुहूर्त विचार

यात्रा मुहूर्त के लिए दिशाशूल, नक्षत्रशूल, भद्रा, योगिनी, चन्द्रमा, शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र इत्यादि का विचार किया जाता है।

शुभ-तिथि—भद्रादि दोष रहित 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13 तथा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा।

शुभनक्षत्र—अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती।

मध्यम नक्षत्र—रोहिणी, तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, शतभिषा।

दिशाशूल

सोम शनिचर पूरब न चालू। मंगल बुध उत्तर दिशि कालू।
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय।।
बीफे दक्खिन करे पयाना। फिर नहिं समझो ताको आना।।

दिशाशूल नक्षत्र तथा योगिनी-वास चक्र

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं को सब जानते हैं, लेकिन इनके बीच की अन्य चार दिशायें सबको स्मरण नहीं रहती। अतः आठों दिशाओं तथा उनके नक्षत्र-शूल, दिशाशूल और योगिनीवास, जो तिथियों को सरलतापूर्वक तत्काल जान लेने के लिए हम ऊपर चक्र दे रहे हैं। इसमें प्रत्येक दिशा के नीचे पहले नक्षत्र का नाम है, फिर वार तथा वारों के अन्त में वे तिथियाँ दी हुई हैं, जिन तिथियों को उस दिशा में योगिनी का वास होता है, उन तिथियों को उस दिशा में जाने से स्वभावतः यात्री के सम्मुख पड़ेगी और सम्मुख तथा दाहिने की योगिनी अशुभ होती है। अतः जिन तिथियों की योगिनी सम्मुख तथा दाहिने पड़े, उन तिथियों को तथा जिस दिशा के नीचे जो नक्षत्र और वार लिखे हैं, उन नक्षत्र तथा वारों में उस दिशा की ओर यात्रा नहीं करनी चाहिए।

समयशूल—उषाकाल में पूरब की, गोधूलि में पश्चिम की, अर्धरात्रि में उत्तर की, मध्याह्न काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

दक्षिण यात्रा का निषेध—कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में अर्थात् पंचक में कदापि न जाय। पंचक तथा चन्द्रमा की राशि का उल्लेख प्रतिमास की तिथि, नक्षत्र के साथ ही किया गया है। वहाँ देख लें।

चन्द्रमा की दिशा और उसका शुभाशुभ फल—
मेष, सिंह, धनु, पूरब चन्दा, दक्षिण कन्या वृष मकरन्दा।
पश्चिम कुम्भ, तुलायां मिथुना, उत्तर कर्क, वृश्चिक, मीना।।

अर्थात् मेष, सिंह और धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व में, वृष, कन्या और मकर राशि का दक्षिण में, मिथुन, तुला और कुम्भ का पश्चिम में, कर्क, वृश्चिक, मीन का चन्द्रमा उत्तर में रहता है। यात्रा में चन्द्रमा सम्मुख या दाहिने शुभ होता है। पीछे होने से मृत्यु तुल्य कष्ट,अल्प कष्ट और बायीं ओर होने से हानि होती है।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—कुम्भ या कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है, जिसमें 1,4,5,7,9,10, स्थानों में शुभ ग्रह और 3,6,10,11 में पाप-ग्रह हों। अशुभ लग्न वह है, जिसमें 1,6,8,12वें चन्द्रमा, 10वें शनि, 7वें शुक्र, 7,12,6,8 वें लग्नेश हों।

प्रस्थान विधान—यदि किन्हीं जरूरी कारणों से यात्रा के मुहूर्त में न जा सकें, तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ-माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य शहद, घी, शूद्र फल को अपने वस्त्र में बाँधकर किसी के घर या नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रखें। उपर्युक्त चीजों के बजाय मन की सबसे प्यारी वस्तु को भी प्रस्थान में रख सकते हैं।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तुयें—यात्रा के तीन दिन पहले दूध, पाँच दिन पहले हजामत, तीन दिन पहले तेल, सात दिन पहले मैथुन त्याग देना चाहिए। यदि इतना न हो सके, तो कम से कम एक दिन पहले तो ऊपर की सब वस्तुओं को अवश्य ही छोड़ देना चाहिए।

यात्रा के पहले ग्राह्य वस्तुयें—

रवि को पान, सोम को दर्पन,
मंगल को गुड़ करिये अर्पन।
बुध को धनिया, बीफै जीरा,
शुक्र कहे मोहिं दधि का पीरा।
कहें शनी मैं अदरख पावा,
सुख-सम्पत्ति निश्चय घर लावा।

रवि को पान खाकर, सोम को शीशे में मुँह देखकर, मंगल को गुड़, बुध को धनियाँ, गुरु को जीरा, शुक्र को दही और शनि को अदरख खाकर यात्रा करने से कार्य सफल होता है।

चौघड़िया मुहूर्त

शीघ्रता में कोई भी यात्रा मुहूर्त न बनता हो या एकाएक यात्रा करने का मौका आ पड़े तो विशेषरूप से चौघड़िया मुहूर्त का उपयोग है। लेकिन अब तो प्रायः हर आवश्यक शुभ कार्यारम्भ के लिए चौघड़िया मुहूर्त ने जनता के हृदय पर अपना सिक्का जमा लिया है।

दिन और रात के आठ-आठ बराबर हिस्से का एक-एक चौघड़िया मुहूर्त होता है। जब दिन-रात बराबर, यानी 12 घण्टे का दिन, 12 घण्टे की रात्रि होती है, तब एक चौघड़िया $1\frac{1}{2}$ घण्टा यानी पौने चार घड़ी का होता है, इसलिए इसका नाम चौघड़िया मुहूर्त पड़ा। रविवार, सोमवार आदि प्रत्येक वार सूर्योदय से शुरू होकर अगले सूर्योदय पर समाप्त होता है एवं उसी समय से अगला वार आरम्भ हो जाता है। प्रत्येक वार सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस 'वार' का 'दिनमान' और सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान न्यूनाधिक भी (यानी दिन-रात छोटे-बड़े) हुआ करते हैं। 'वार' हमेशा 24 घण्टे यानी 60 घटी का होता है। अतः जिस रोज का रात्रिमान जानना हो, तो उस रोज के दिनमान को 60 घटी में-से घटा देने पर रात्रिमान निकल आयेगा। अब जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो, तो उस रोज दिनमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनट बनाकर उस रोज के सूर्योदय में जोड़ते जायें तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़िया में-से कौन-सा ग्राह्य और कौन-सा त्याज्य है, यह 'दिन' की चौघड़िया के चक्र में उस दिन के 'वार' के सामने खाने में देखकर जान लें। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात की चौघड़िया के चक्र में उस रोज के वार के सामने खाने में देखकर जान लें।

श्रेष्ठ समय—शुभ, चर, अमृत और लाभ की चौघड़िया का है।

अशुभ समय—उद्वेग, रोग और काल का होता है। इसको त्याग देना चाहिए। $2\frac{1}{2}$ घटी का एक घण्टा तथा $2\frac{1}{2}$ पल का 1 मिनट होता है। अतः घटी-पल का घण्टा-मिनट बनाने के लिए उसमें 5 का भाग देकर लब्धि को दूना कर लें।

दिन की चौघड़िया

दिन	पहली चौघ.	दूसरी चौघ.	तीसरी चौघ.	चौथी चौघ.	पाँचवीं चौघ.	छठवीं चौघ.	सातवीं चौघ.	आठवीं चौघ.
रवि	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग
चन्द्र	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत
मंगल	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग
बुध	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ
गुरु	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ
शुक्र	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर
शनि	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल

रात की चौघड़िया

दिन	पहली चौघ.	दूसरी चौघ.	तीसरी चौघ.	चौथी चौघ.	पाँचवीं चौघ.	छठवीं चौघ.	सातवीं चौघ.	आठवीं चौघ.
रवि	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	शुभ	उद्वेग	शुभ
चन्द्र	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	चर	अमृत	चर
मंगल	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	काल	रोग	काल
बुध	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	उद्वेग	लाभ	उद्वेग
गुरु	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	अमृत	शुभ	अमृत
शुक्र	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	रोग	चर	रोग
शनि	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	लाभ	काल	लाभ

गुरु-शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म

बावड़ी, बगीचा, कुआँ, मकान का प्रारम्भ और प्रतिमा, व्रतारम्भ, व्रतोद्यापन, दान, गोदान, प्रथम उपाकर्म, वृषोत्सर्ग, चौल (मुण्डन), देवता स्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्व देवतीर्थ-दर्शन, संन्यास, अग्न्याधान, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्य, यज्ञ, कर्णवेध, विद्यारम्भ ये कर्म गुरु, शुक्र के अस्त, बाल वृद्धत्व तथा मलमास में करना निषिद्ध है।

गण्डमूल नक्षत्र और उनके फल

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती ये 6 नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक माता-पिता, कुल और अपने शरीर को नष्ट करता है। स्वयं का शरीर नष्ट न हो तो धन, वैभव, ऐश्वर्य तथा घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का मुख 27 दिन तक पिता न देखे। प्रसूति-स्नान के पश्चात् शुभ बेला में बालक का मुख देखना चाहिए। उपरोक्त गण्डमूल के चारों चरणों में-से जिस चरण में बच्चा पैदा हो, उसका विशेष फल निम्न चक्र से मालूम कर लें।

अश्विनी चरण फल		आश्लेषा चरण फल	
चरण	फल	चरण	फल
1	पिता को भय	1	शान्ति से शुभ
2	सुख, ऐश्वर्य	2	धननाश
3	मन्त्री पद	3	मातृनाश
4	राजसम्मान	4	पितृनाश
मघा चरण फल		**ज्येष्ठा चरण फल**	
चरण	फल	चरण	फल
1	माता को कष्ट	1	बड़े भ्राता को कष्ट
2	पितृ-भय	2	छोटे भ्राता को कष्ट
3	सुख	3	मातृ नाश
4	अनेक कष्ट	4	पितृ-नाश
मूल चरण फल		**रेवती चरण फल**	
चरण	फल	चरण	फल
1	पितृ-नाश	1	राजसम्मान, सुख
2	धननाश	2	मंत्रित्व-प्राप्ति
3	मातृनाश	3	धन-सुख
4	शान्ति से सुख	4	अनेक कष्ट

अभुक्त मूल—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम पाँच घटी, किसी के मत से चार घटी, किसी के मत से एक घटी और किसी के मत से आधी घटी एवं मूल नक्षत्र के आदि की आठ घटी, किसी के मत से चार घटी, दो घटी, आधी घटी का समय अभुक्त मूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष तक बच्चे का पिता उसका मुख न देखे। शान्ति करके मुख देखने में शास्त्रीय बाधा नहीं है।

मूल नक्षत्र में गर्भाधान करना उचित नहीं है तथा उक्त नक्षत्रों में रजस्वला स्त्री को स्नान करना वर्जित है।

त्रिखल (तेंतर) जन्म फल—तीन पुत्रों के बाद कन्या हो या तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल नामक दोष होता है। शान्ति के लिए त्रिखल करावें।

दाँत निकालने का फल—बालक के जन्मते ही दाँत निकले हुए हों तो माता-पिता को अरिष्ट, ऊपर पंक्ति में दाँत जमे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दाँत निकले तो मातुल पक्ष को भय हो। पहले मास में दाँत निकले तो शरीर नष्ट, दूसरे में छोटा भ्राता नष्ट, तीसरे में बहन नष्ट, चौथे में भाई नष्ट, पाँचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठें में भोग, सातवें में पिता-सुख, आठवें में पुष्टता, नौवें में धनी, दसवें में सुखी, ग्यारहवें में धनी।

एक नक्षत्र जात फल—पिता-पुत्र, माता-पुत्र व कन्या, दो भ्राता इनका एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों में-से एक को मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। सोना दान, शान्ति हवन आदि करने से अरिष्ट निवारण होता है।

छींक-विचार

छींक प्रायः सभी दिशाओं की खराब होती है। अपनी छींक महा-अशुभ है। गौ की छींक मरण करती है। बायीं ओर छींक हो तो दोषकारक नहीं है।

'सम्मुख छींक लड़ाई भाखे।
छींक दाहिने द्रव्य विनाशे।।
ऊँची छींक कहे जयकारी।
नीची छींक होय भयकारी।।'

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, वेश्या, रजस्वला स्त्री और अन्त्यज की छींक विशेष अशुभ होती है। आसन, शयन, शौच, दान, भोजन, औषधि-सेवन, विद्यारम्भ और बीज बोने के समय, युद्ध या विवाह, सर्दी से होने वाली छींक, बच्चे और बूढ़े की छींक तथा हठ से छींकना विफल होता है, कोशिश करने पर भी यदि छींक न रुके तो मनुष्य जिस काम के लिए जा रहा हो उसमें विघ्न अवश्य होगा। **'एक नाक दो छींक,** काम बने सब ठीक' यह भी लोकोक्ति है।

स्वप्न देखने का शुभाशुभ फल

स्वप्न	फल
आकाश की ओर उड़ना	लम्बी यात्रा हो
सूर्य को देखना	किसी महात्मा के दर्शन हो
बादल देखना	तरक्की हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में उन्नति हो
शीशा में मुँह देखना	स्त्री से प्रेम हो
ऊँचे से गिरना	हानि हो, कष्ट हो
बाग-फुलवारी देखना	खुशी प्राप्त हो
बारात देखना	रंज हो, स्त्री देखे तो दुःखी हो
पानी बरसता देखना	अनाज मन्दा
सिर के कटे बाल देखना	कर्ज से छुटकारा मिले
पाखाना देखना	धन का लाभ हो
सफेद बाल देखना	आयु बढ़े
पहाड़ पर चढ़ना	उन्नति प्राप्त हो
शरीर में पाखाना लगना	काफी धन मिले
पाखाना खाना	पूर्ण धनवान् हो, खजाना पावे
पाखाना करना	धन प्राप्त हो
फूल देखना	प्रेमी मिले
छाती देखना	स्त्री वश हो
पानी पीना	व्यापार में लाभ हो
पान खाना	सुन्दर स्त्री मिले
पानी में डूबना	अच्छे काम करे
हरी तरकारी देखना	प्रसन्नता प्राप्त हो
हँसता देखना	रंज प्राप्त हो
रोते देखना	प्रसन्नता प्राप्त हो
जहाज देखना	दूर की यात्रा हो
झण्डा देखना	धर्म की वृद्धि हो
जवाहरात देखना	आशाएँ पूर्ण हों
स्त्री-प्रसंग	धन की प्राप्ति हो
लड़ाई करना	प्रसन्नता प्राप्त हो
जुआ खेलना	व्यापार में लाभ हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नदी में तैरते देखना	कष्ट दूर हो।

शरीर में तिल होने का शुभाशुभ फल

स्थान	फल
माथे पर	बलवान हो
ठुड्डी में	स्त्री से प्रेम न रहे
दोनों भौंह के बीच	यात्रा होती रहे
दाहिनी आँख पर	स्त्री से प्रेम रहे
बायीं आँख पर	स्त्री से कलह रहे
दाहिने गाल पर	धनवान् हो
बाँयें गाल पर	खर्च बढ़ता जाय
होंठ पर	विषय-वासना में रत रहे
कान पर	दीर्घायु हो
गर्दन पर	आराम मिले
दाहिनी भुजा पर	मान-प्रतिष्ठा मिले
बाँयी भुजा पर	झगड़ालू हो
नाक पर	यात्रा होती रहे
दाहिनी छाती पर	स्त्री से प्रेम रहे
बाँयी छाती पर	स्त्री से झगड़ा रहे
कमर में	आयु परेशानी से गुजरे
दोनों छाती के बीच	जीवन सुखी रहे
पेट पर	उत्तम भोजन का इच्छुक
पीठ पर	प्रायः यात्रा में रहा करे
दाहिनी हथेली पर	बलवान हो
बाँयी हथेली पर	खूब खर्च करे
दाहिने हाथ की पीठ पर	धनवान हो
बाँयें हाथ की पीठ पर	कम खर्च करे
दाहिने पैर में	बड़ा बुद्धिमान् हो
बाँयें पैर में	खर्च अधिक हो।

शरीर पर छिपकली तथा गिरगिट गिरने का फल

सिर पर छिपकली गिरने से राज्य लाभ, ललाट पर बन्धु दर्शन, दोनों भौहों पर बड़े लोगों से मित्रता, ऊपर के ओठ पर धनहानि, नीचे के ओठ पर ऐश्वर्य प्राप्ति, नाक पर रोग, दाहिने कान पर आयु-वृद्धि, बाँये कान पर धन-प्राप्ति, दोनों आँख पर धन लाभ, दाहिनी भुजा पर नृपतुल्यता, बाँयी भुजा पर राज्यभय, कण्ठ पर शत्रुनाश, दोनों स्तनों पर दुर्भाग्य, पेट पर भूषण-लाभ, पीठ पर बुद्धिनाश, घुटने पर शुभ-आगमन, जँघा पर शुभ, दोनों हाथों पर वस्त्रलाभ, कन्धों पर विजय, नासिका (नाक) छिद्रों पर धनप्राप्ति, कमर पर हाथी-घोड़ा आदि की सवारी का लाभ, दायें मणिबन्ध पर कीर्ति-विनाश, हृदय पर धनलाभ, मुख पर मिष्ठान्नभोजन, गुल्फ पर बन्धन-प्राप्ति, दाढ़ी पर मृत्यु, दाहिने पैर पर गमन, बाँये पैर पर नाश, पैर के तलवे पर मृत्यु तुल्य कष्ट।

विशेष : सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार को, प्रतिपदा, द्वितीया,पञ्चमी, षष्ठी, दशमी, एकादशी तथा द्वादशी तिथियों में, पुष्य, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी, पुनर्वसु, हस्त, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिष और रेवती नक्षत्रों में पुरुषों के दाहिने अंग तथा स्त्रियों के बाँयें अंग पर छिपकली का गिरना शुभप्रद होता है। जन्म-नक्षत्र, मृत्यु योग, दग्ध योग तथा भद्रा में, पापग्रह युक्त लग्न हो तथा चन्द्रमा आठवें हों तो छिपकली का गिरना अशुभ फलदायक होता है। इसकी शान्ति के लिए वस्त्र सहित स्नान कर तिल, उड़द का दान, शिव मन्दिर में दीपदान एवं स्वर्ण-दान अथवा मृत्युञ्जय मन्त्र 'ॐ हौं जूं सः' तथा शिव का षडक्षर मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' का जप एक हजार लाभदायक सिद्ध होता है।

नोट—छिपकली गिरने का जो फल होता है, वही फल शरीर पर गिरगिट चढ़ने का भी होता है।

वनस्पति-विज्ञान

रोग निवारण, ग्रहबाधा से मुक्ति, धनलाभ, व्यापार-वृद्धि, सुख-समृद्धि, शान्ति तथा सभी प्रकार के कष्टों के निवारण हेतु घर के बाहर या किसी खुले स्थान पर एक फलदार वृक्ष लगायें और प्रतिदिन या सप्ताह में किसी एक दिन जल चढ़ायें। जिससे शीघ्र ही शुभ फल की प्राप्ति होगी। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, अग्नि और वनस्पति जगत् के प्रत्यक्ष देवी-देवता हैं।

विधि—प्रातः स्नान करके एक लोटे में जल लेकर **'ॐ वनस्पतये नमः'** का ग्यारह बार उच्चारण करते हुए जल चढ़ायें। जैसे आप अपने मित्र से अपना सुख-दुःख खुले मन से कहते हैं, उसी प्रकार आप वृक्ष देवता के सामने सच्ची श्रद्धा से अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए प्रार्थना करें। इस प्रार्थना से आपका सभी कष्ट-रोग, चिन्ता, ग्रह-बाधा जरूर दूर हो जायेगा। साथ ही व्यापार में लाभ, धन की प्राप्ति और सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होकर सुख-समृद्धि बढ़ती है तथा मनुष्य का जीवन सुखमय व्यतीत होता है।

ज्योतिष की सर्वोत्तम पुस्तक

अपने नजदीकी पुस्तक विक्रेता या
On Line खरीदें।

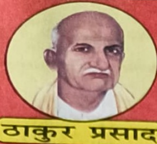

ठाकुर प्रसाद

रूपेश पंचाङ्ग

जून 6 2025 JUNE

विक्रम संवत् 2082	श्रीशालिवाहन शाके 1947	फसली सन् 1432	इस्लामी हिजरी सन् 1446-47	बंगला संवत् 1432	नेपाली संवत् 1145
ज्येष्ठ शुक्ल 6 से आषाढ़ शुक्ल 5 तक। ता. 12 से आषाढ़ मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय ज्येष्ठ 11 से आषाढ़ 9 तक। ता. 22 से आषाढ़ मास प्रारम्भ।	प्र. जेठ 20 से प्र. हाड़ 19 तक। ता. 12 से प्र. हाड़ मास प्रारम्भ।	जिलहिज 4 से मुहर्रम 4 तक। ता. 27 से नववर्ष मुहर्रम 1447 शुरू।	ज्येष्ठ 18 से आषाढ़ 15 तक। ता. 16 से आषाढ़ मास प्रारम्भ।	ज्येष्ठ 18 गते से आषाढ़ 16 गते तक। ता. 15 से आषाढ़ मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			योग		
16					

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	

भद्रा-विचार

ता.2 रात 11:59 से ता.3 दिन 12:18 तक।
ता.6 सायं 4:7 से रा.शे.5:2 तक।
ता.10 दिन 10:55 से रात 11:42 तक।
ता.13 रात 2:21 से ता.14 दिन 2:26 तक।
ता.17 दिन 11:56 से रात 11:7 तक।
ता.20 सायं 4:54 से रात 3:43 तक।
ता.23 रात 8:22 से ता.24 प्रातः 7:14 तक।
ता.28 रात 11:48 से ता.29 दिन 11:33 तक।

तेजी-मंदी

गेहूँ, जौ, जना-मटर, बाजरा-मूँग-मोठ में मंदी, मिर्च-गुड़ सभी अनाज, कपास, तेल, घी, सोना-चाँदी में मंदी के बाद तेजी सम्भव है।

रवि SUN	ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी रात 11:54 तक **1** सिंह चं. रात 1:41 से, श्लेषा रात 1:41 तक	ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी प्रातः 7:12 तक **8** प्रदोष व्रत तुला चं. स्वाती दिन 12:58	आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी दिन 2:13 तक **15** मिथुन संक्रान्ति मकर चं. श्रवण रात 11:40 तक	आषाढ़ कृष्ण द्वादशी रात 10:46 तक **22** एकादशी व्रत वृष चं. रात 9:6 से, भरणी दिन 3:30 तक	आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी दिन 11:33 तक भद्रा **29** सिंह चं. दिन 9:27 से, श्लेषा दिन 9:27 तक
सो MON	ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी रात 11:59 तक भद्रा **2** सिंह चं. मघा रात 2:31 तक	ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी दिन 9:3 तक **9** वृश्चिक चं. दिन 8:55 से, विशाखा दिन 3:33	आषाढ़ कृष्ण पंचमी दिन 1:12 तक **16** कुम्भ चं. दिन 11:32 से, धनिष्ठा रात 11:23 तक	आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी रात 8:21 तक भद्रा **23** प्रदोष व्रत वृष चं. कृत्तिका दिन 1:53 तक	आषाढ़ शुक्ल पंचमी दिन 11:36 तक **30** सिंह चं. मघा दिन 10:9 तक
मं TUE	ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी रात 12:37 तक भद्रा **3** सिंह चं. पू.फा. रात 3:53 तक	ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी दिन 10:55 तक भद्रा **10** पूर्णिमा वटसावित्री व्रत वृश्चिक चं. अनुराधा सायं 5:58 तक	आषाढ़ कृष्ण षष्ठी दिन 11:56 तक भद्रा **17** कुम्भ चं. शतभिषा रात 10:41 तक	आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी सायं 6:6 तक भद्रा **24** मिथुन चं. दि. 11:45 से, रोहिणी दिन 12:23	मूल विचार (see below)
बु WED	ज्येष्ठ शुक्ल नवमी रात 1:41 तक **4** कन्या चं. दिन 10:20 से, उ.फा. समस्त	ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा दिन 12:29 तक **11** स्नान-दान पूर्णिमा धनु चं. रात 8:2 से, ज्येष्ठा रात 8:2 तक	आषाढ़ कृष्ण सप्तमी दिन 10:17 तक **18** मीन चं. दि. 3:55 से, पू.भा. रात 9:39 तक	आषाढ़ कृष्ण अमावस्या सायं 4:4 तक **25** अमावस्या मिथुन चं. मृगशिरा दिन 11:6 तक	
गु THU	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी रात 3:13 तक **5** गंगा दशहरा कन्या चं. उ.फा. प्रातः 5:41 तक	आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा दिन 1:35 तक **12** धनु चं. मूल रात 9:39 तक	आषाढ़ कृष्ण अष्टमी दिन 8:18 तक **19** मीन चं. उ.भा. रात 8:20 तक	आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा दिन 2:21 तक **26** चन्द्रदर्शन कर्क चं. रात 3:37 से, आर्द्रा दिन 10:7 तक	
शु FRI	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी रा.शे. 5:2 तक भद्रा **6** एकादशी व्रत तुला चं. रात 9:8 से, हस्त प्रा. 7:53 तक	आषाढ़ कृष्ण द्वितीया दिन 2:17 तक भद्रा **13** मकर चं. रा.शे. 5:0 से, पू.षा. रात 10:49 तक	आषाढ़ कृष्ण नवमी प्रातः 6:5 तक दशमी रात 3:43 तक भद्रा **20** मेष चं. सायं 6:49 से, रेवती सायं 6:49 तक	आषाढ़ शुक्ल द्वितीया दिन 12:58 तक **27** रथयात्रा कर्क चं. पुनर्वसु दिन 9:27 तक	
श SAT	ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी समस्त **7** बकरीद तुला चं. चित्रा दिन 10:21 तक	आषाढ़ कृष्ण तृतीया दिन 2:26 तक भद्रा **14** गणेश चतुर्थी व्रत मकर चं. उ.षा. रात 11:30 तक	आषाढ़ कृष्ण एकादशी रात 1:14 तक **21** योग दिवस एकादशी व्रत मेष चं. अश्विनी सायं 5:11 तक	आषाढ़ शुक्ल तृतीया दिन 12:1 तक भद्रा **28** कर्क चं. पुष्य दिन 9:12 तक	

मूल विचार

मासारम्भ से ता.2 को **मघा** रात 2:31 तक। ता.10 को **ज्येष्ठा** सायं 5:58 से ता.12 को **मूल** रात 9:39 तक। ता.19 को **रेवती** रात 8:20 से ता.21 को **अश्विनी** सायं 5:11 तक। ता.28 को **श्लेषा** दिन 9:12 से ता.30 को **मघा** दिन 10:9 तक।

सूर्य नक्षत्र

ता.8 को मृगशिरा दिन 1:25 से।
ता.15 को मिथुन राशि दिन 1:39 से।
ता.22 को आर्द्रा दिन 2:12 से।

पंचक विचार

ता.16 को दिन 11:32 से। ता.20 को सायं 6:49 तक।

विवाह मुहूर्त

ता.1,2,4,5,6,7,8। आगे गुरु अस्त व हरिशयन है।

व्रत-त्यौहार

1.रवि-श्रीस्कन्द षष्ठी व्रत।
3.मंगल-ज्येष्ठ बड़का मंगल।
5.गुरु-गंगा दशहरा, श्रीरामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस, बटुक भैरव प्राकट्योत्सव।
6.शुक्र-भीमसेनी निर्जला एकादशी व्रत-स्मार्त।
7.शनि-निर्जला एकादशी व्रत-वैष्णव, मु. पर्व बकरीद।
8.रवि-प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारम्भ-द.भा. मृगशिरा के सूर्य दि.1:25।
10.मंगल-व्रत की पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत-द.भा., बड़का मंगल।
11.बुध-स्नान-दान की पूर्णिमा, गुरु अस्त पश्चिम में सा.6:54, संत कबीरदास जयंती।
12.गुरु-गुरु हर गोविन्द सिंह जयंती।
14.शनि-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 9:36।
15.रवि-मिथुन संक्रांति दि.1:39। राजस संक्रांति।
19.गुरु-शीतलाष्टमी व्रत।
21.शनि-योगिनी एकादशी व्रत-स्मार्त, देवराहा बाबा पुण्य तिथि, योग दिवस।
22.रवि-योगिनी एकादशी व्रत-वै., आर्द्रा के सूर्य दिन 2:12।
23.सोम-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत।
25.बुध-स्नान-श्राद्ध की अमावस्या।
26.गुरु-चन्द्रदर्शन, गुप्त नवरात्रारम्भ।
27.शुक्र-रथयात्रा, श्रीराम-बलराम रथोत्सव।
29-रवि-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

मेष- सहयोगियों के माध्यम से कामों में सफलता मिलेगी, व्यवसाय में लाभ होगा।
वृष- उच्चाधिकारियों से व्यवसाय में लाभ होगा, दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी।
मिथुन-राजनीतिक व्यक्तियों को भ्रम की स्थिति तथा विपक्ष से हानि सम्भव है।
कर्क- भूमि-सम्पत्ति का विवाद बढ़ेगा, स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट होगा।
सिंह- आर्थिक उन्नति का योग है, दाम्पत्य जीवन में सुख मिलेगा।
कन्या- विद्यार्थियों हेतु मास कष्टकारी है, स्त्री एवं परिवार का उत्तम सुख मिलेगा।
तुला- पुत्रादि से वैमनस्यता की स्थिति, पेट सम्बन्धी रोग से परेशानी बढ़ेगी।
वृश्चिक-परिस्थितियाँ अनुकूल रहेंगी, नौकरी व्यवसाय में उन्नति होगी।
धनु- व्यवसाय में विघ्न तथा हानि होगी, अनावश्यक विवाद की सम्भावना है।
मकर- स्वजनों से वाद-विवाद सम्भव है, आकस्मिक दुर्घटना हो सकती है।
कुम्भ- व्यवसाय, कारोबार में लाभ होगा, पूंजी का अनावश्यक दुरुपयोग होगा।
मीन- किसी से विवाद की सम्भावना रहेगी, माता-पिता को रोग से कष्ट होगा।

आकाशी-लक्षण

उत्तर भारत में झुलसाने वाली गर्मी पड़ेगी, पूर्वी पश्चिमी तथा दक्षिण क्षेत्रों में तेज हवा के साथ वर्षा, राजस्थान व महाराष्ट्र में तेज वृष्टि व बूँदा-बूँदी पड़ेगी।

तारीख	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
सूर्योदय	5:16	15	15	15	15	15	14	14	14	14	14	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13
सूर्यास्त	6:44	45	45	45	45	45	46	46	46	46	46	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47

मई-2025

रवि		4	11	18	25
सोम		5		19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

वृक्षारोपण -

आम की गुठली को धोकर रख लें, जून, जुलाई के महीने में सड़क के किनारे, पार्क या खाली जमीन में लगा दें। एक पेड़ लगाने से असंख्य जीव-जन्तुओं के जीवन का उद्धार होता है और उसका अपार पुण्य सहजता से प्राप्त होता है। वृक्षारोपण करना यज्ञ करने के समान फल देता है। प्राचीन पुस्तकों में भी विवेचन किया गया है कि नीम, आम का वृक्ष लगाने से सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिलती है। अतः अपने नजदीकी स्कूल, ग्राम पंचायत एवं धार्मिक संस्थाओं को भी इस पुनीत कार्य में सहभागी बनावें एवं दूसरों को भी प्रोत्साहित करें।

जुलाई-2025

रवि			13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3		17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

सर्वार्थसिद्धि एवं विविध योग सन् 2025 ई.

सभी प्रकार के शुभ कार्यों को सर्वार्थसिद्धि व सर्वार्थामृतसिद्धि योग, द्विपुष्कर योग, त्रिपुष्कर योग, स्थायी जय योग, यायीजय योग, यमघण्ट योग एवं रवियोग—इन योगों में प्रारम्भ करने से कार्य में सफलता की पूर्ण संभावना होती है।

सर्वार्थ व सर्वार्थामृत सिद्धि योग

ता. वार योग

जनवरी
5.रवि-रात 9:11 से
7.मंगल-सा.5:57 से
11.शनि-दि.12:0 से
19.रवि-समस्त दिन।
23.गुरु-रात 3:12 से
24.शुक्र-रा.शे.5:14 तक।
27.सोम-प्रातः5:49 से

फरवरी
2.रवि-रात 3:39 से
4.मंगल-रा.12:20 तक।
5.बुध-रात 10:42 से
10.सोम-रात 6:8 से
11.मंगल-रात 6:23 से
16.रवि-रात 2:46 तक।
17.सोम-रात 2:46 तक (अमृत.)।
20.गुरु-दिन 10:22 तक।
21.शुक्र-दिन 12:30 तक।
23.रवि-दिन 3:26 तक।

मार्च
2.रवि-दिन 11:44 तक।
5.बुध-प्रातः6:47 से
9.रवि-रात 1:53 से
10.सोम-रात 2:3 से
11.मंगल-रात 2:43 तक।
16.रवि-दिन 9:57 तक (अमृत.)।
19.बुध-सा.5:37 से (अमृत.)
20.गुरु-रात 7:49 तक।
23.रवि-रात 11:49 से
24.सोम-रात 12:9 तक।
30.रवि-सायं 6:14 से

अप्रैल
1.मंगल-दिन 2:55 से
2.बुध-दिन 1:21 तक।
6.रवि-दिन 9:42 से
7.सोम-दिन 9:46 तक।
8.मंगल-दिन 10:18 तक।
20.रवि-प्रातः 7:26 से।
21.सोम-प्रातः 7:52 से
27.रवि-रात 12:42 तक।
29.मंगल-रात 9:26 तक।
30.बुध-रात 8:2 तक।

मई
2.शुक्र-सायं 6:1 से
4.रवि-सायं 5:28 तक।
10.शनि-रात 2:59 से
14.बुध-दिन 10:30 तक (अमृत.)।
18.रवि-दिन 3:40 से
19.सोम-दिन 3:44 तक।
23.शुक्र-दिन 12:6 से (अमृत.)।
25.रवि-दिन 8:55 तक।
27.मंगल-प्रातः 5:38 तक।

ता. वार योग
28.बुध-रात 2:57 तक।
29.गुरु-रात 2:4 से
30.शुक्र-रात 1:29 तक।

जून
7.शनि-दिन 10:21 से
9.सोम-दिन 3:33 से
14.शनि-रात 11:30 से
19.गुरु-रात 8:20 से
20.शुक्र-सायं 6:49 से
23.सोम-दिन 1:53 से
25.बुध-दिन 11:6 तक।
26.गुरु-दिन 10:7 से
27.शुक्र-दिन 9:27 तक।

जुलाई
2.बुध-दिन 1:5 से
5.शनि-रात 8:14 तक।
7.सोम-रात 1:17 से
12.शनि-प्रातः 7:17 से
17.गुरु-रात 3:4 तक।
18.शुक्र-रात 1:27 तक।
21.सोम-रात 8:37 तक।
24.गुरु-सायं 5.:27 तक।

अगस्त
4.सोम-दिन 8:39 तक।
8.शुक्र-दिन 3:2 से
12.मंगल-दिन 1:58 से
14.गुरु-दिन 11:20 तक।
15.शुक्र-दिन 9:43 तक।
18.सोम-रात 3:26 तक (अमृत.)।
24.रवि-रात 2:30 से
27.बुध-प्रातः 5:56 तक।

सितम्बर
5.शुक्र-रात 11:12 तक।
9.मंगल-रात 8:51 तक।
11.गुरु-सायं 5:54 तक।
21.रवि-दिन 9:56 से
26.शुक्र-रात 8:28 से
28.रवि-रात 1:24 से

अक्टूबर
3.शुक्र-प्रातः 6:53 से
7.मंगल-रा.3:36 से (अमृत.)।
11.शनि-रा.9:9 तक (अमृत.)।
19.रवि-सायं 6:47 तक।
23.गुरु-रात 3:38 से
24.शुक्र-रा.शे.6:14 से

नवम्बर
2.रवि-दिन 1:58 से
4.मंगल-दि.11:45 तक। (अमृत.)।
7.शुक्र-प्रा.6:57 से (अमृत.)।
10.सोम-रात 1:21 से
11.मंगल-रात 12:37 से
20.गुरु-दिन 10:42 से
21.शुक्र-दिन 1:19 तक।
23.रवि-रात 6:1 तक।
30.रवि-रात 8:57 तक।

दिसम्बर
2.मंगल-सा.6:18 से (अमृत.)।
3.बुध-सायं 4:41 से
8.सोम-दिन 9:14 से
9.मंगल-दिन 8:26 से
14.रवि-दि.10:56 तक (अमृत.)।
17.बुध-सा.5:41से (अमृत.)।
21.रवि-रात 3:5 से
22.सोम-रात 4:36 से
28.रवि-रात 3:44 से
31.बुध-रात 11:7 तक।

ता. वार योग

यमघंट योग

जनवरी
9.गुरु-दिन 2:39 से
10.शुक्र-दिन 1:13 से

फरवरी
6.गुरु-रात 9:13 से
7.शुक्र-रात 7:56 तक।

मार्च
15.शनि-प्रातः 7:34 से

अप्रैल
2.बुध-दिन 1:21 तक।
3.गुरु-दिन 11:58 से
11.शुक्र-दिन 2:53 तक।
14.सोम-रात 10:20 से

जून
9.सोम-दिन 3:33 तक।
29.रवि-दिन 9:27 से

जुलाई
9.बुध-रा.शे.5:11 से
22.मंगल-रात 7:16 से
27.रवि-सायं 5:51 तक।

अगस्त
6.बुध-दिन 12:44 तक।
19.मंगल-रात 2:17 तक।

सितम्बर
16.मंगल-दिन 10:19 तक।

अक्टूबर
10.शुक्र-रात 10:46 से

नवम्बर
6.गुरु-प्रातः 8:37 तक।
7.शुक्र-प्रातः6:57 से
15.शनि-रात 2:8 से

दिसम्बर
4.गुरु-दिन 3:2 से
5.शुक्र-दिन 1:22 तक।

त्रिपुष्कर योग

जनवरी
5.रवि-रात 9:11 से

फरवरी
9.रवि-सायं 6:21 से
25.मंगल-दिन 10:5 तक।

मार्च
1.शनि-दिन 1:13 तक।

अप्रैल
15.मंगल-दिन 8:33 तक।
20.रवि-प्रा.7:26 से
29.मंगल-रात 8:9 तक।

जून
17.मंगल-रात 10:41 से।
22.रवि-दिन 3:30 से

जुलाई
1.मंगल-दिन 12:11 से
6.रवि-रात 1:17 से
12.शनि-प्रातः 7:17 तक।

अगस्त
19.मंगल-रात 2:17 से।
24.रवि-रात 2:30 से
30.शनि-दिन 1:22 तक।

अक्टूबर
28.मंगल-दिन 12:32 से।

नवम्बर
2.रवि-दिन 1:58 तक।

दिसम्बर
16.मंगल-दिन 3:9 से
21.रवि-रात 3:5 से।

द्विपुष्कर योग

मार्च
16.रवि-दिन 9:57 से

ता. वार योग
25.मंगल-रात 12:1 से

जून
7.शनि-दिन10:21 तक।

जुलाई
22.मंगल- प्रातः 5:48 तक।

अगस्त
10.रवि-दिन 12:38 से
14.गुरु-दिन 8:41 तक।

सितम्बर
14.रवि-दिन 8:41 तक।
23.मंगल-दिन 1:10 से

नवम्बर
16.रवि-रात 3:44 से।

दिसम्बर
6.शनि-दिन 11:47 तक।

रवि योग

जनवरी
2.गुरु-रात 12:30 से
3.शुक्र-रात 11:42 तक।
4.शनि-रात 10:35 से
5.रवि-रात 9:11 तक।
7.मंगल-सायं 5:57 से
8.बुध-समस्त दिन।
9.गुरु-दिन 2:39 तक।
12.रवि-दिन 11:7 से
13.सोम-दिन 10:35 तक।
19.रवि-सायं 5:10 से
20.सोम-रात 7:38 तक।
31.शुक्र-प्रातः 6:32 से

फरवरी
1.शनि-रा.शे. 5:12 तक।
2.रवि-रात 3:39 से
3.सोम-रात 2:0 तक।
5.बुध-रात 10:42 से
6.गुरु-रात 9:13 तक।
पुनः दिन 12:35 से
7.शुक्र-रात 7:56 तक।
9.रवि-सायं 6:21 से
10.सोम-सायं 6:8 तक।
17.सोम-रा.शे. 5:22 से
18.मंगल-समस्त दिन।
19.बुध-प्रातः 7:57 तक।
पुनः सायं 4:12 से
20.गुरु-दिन 10:22 तक।

मार्च
2.रवि-दिन 11:44 से
3.सोम-दिन 10:5 तक।
4.मंगल-दिन 8:24 से
5.बुध-प्रातः 6:46 से
रा.शे.5:16 तक।
7.शुक्र-रात 2:54 से
8.शनि-समस्त दिन
9.रवि-रात 1:53 तक।
11.मंगल-रात 2:43 से
12.बुध-रात 3:52 तक।
20.गुरु-रात 7:49 से
21.शुक्र-रात 9:37 तक।

अप्रैल
1.मंगल-दिन 2:55 से
2.बुध-दिन 1:21 तक।
3.गुरु-दिन 11:58 से
4.शुक्र-दिन 10:52 तक।
6.रवि-दिन 9:42 से
7.सोम-समस्त दिन।
8.मंगल-दिन 10:18 तक।
9.बुध-दिन 2:55 से
10.गुरु-दिन 12:54 से

ता. वार योग
11.शुक्र-दिन 2:53 तक।
18.शुक्र-समस्त दिन
19.शनि-प्रातः6:50 से
20.रवि-प्रातः7:26 तक।
30.बुध-रात 8:2 से

मई
1.गुरु-सायं 6:50 तक।
2.शुक्र-सायं 6:1 से
3.शनि-सायं 5:32 तक।
5.सोम-सायं 5:55 से
6.मंगल-समस्त दिन
7.बुध-रात 8:19 तक।
9.शुक्र-रात 12:28 से
10.शनि-रात 2:59 तक।
16.शुक्र-दिन 2:3 तक।
18.रवि-दिन 3:40 से
19.सोम-दिन 3:44 तक।
29.गुरु-रात 2:4 से
30.शुक्र-रात 1:29 तक।
31.शनि-रात 1:20 से

जून
1.रवि-रात 1:41 तक।
3.मंगल-रात 3:53 से
4.बुध-समस्त दिन।
5.गुरु-समस्त दिन।
6.शुक्र-प्रातः 7:53 तक।
9.सोम-दिन 3:33 तक।
10.मंगल-सायं 5:58 तक।
16.सोम-रात 11:23 से
17.मंगल-रात 10:41 तक।
25.बुध-दिन 11:6 से
28.शनि-दिन 9:12 से
29.रवि-दिन 9:27 तक।
30.सोम-दिन 10:9 से

जुलाई
1.मंगल-दिन 11:24 तक।
3.गुरु-दिन 3:13 से
4.शुक्र-समस्त दिन।
5.शनि-रात 8:14 तक।
8.मंगल-रात 3:28 से
9.बुध-रा.शे.5:11 तक।
16.बुध-रा.शे.4:32 से
27.गुरु-सायं 5:51 से
28.सोम-सायं 6:58 तक।
29.मंगल-रात 8:34 से
30.बुध-रात 10:36 तक।

अगस्त
1.शुक्र-रात 3:31 से
2.शनि-समस्त दिन।
3.रवि-प्रातः6:10 तक।
पुनः सायं 5:34 से
4.सोम-समस्त दिन।
5.मंगल-दिन 10:53 तक।
7.गुरु-दिन 2:9 से
8.शुक्र-दिन 3:2 तक।
14.गुरु-दिन 11:20 से
15.शुक्र-दिन 9:43 तक।
25.सोम-रात 4:0 से
26.मंगल-समस्त दिन।
27.बुध-प्रातः 5:56 तक।
28.गुरु-दिन 8:13 से
29.शुक्र-दिन 10:45 तक।
31.रवि-समस्त दिन।

सितम्बर
1.सोम-सायं 6:13 से
2.मंगल-समस्त दिन।
3.बुध-रात 9:41 तक।

ता. वार योग
5.शुक्र-रात 11:12 से
6.शनि-रात 11:13 तक।
12.शुक्र-दिन 4:15 से
13.शनि-दिन 2:34 तक।
24.बुध-दिन 3:22 से
25.गुरु-सायं 5:51 तक।
26.शुक्र-रात 8:28 से
27.शनि-समस्त दिन।
28.रवि-रात 1:24 तक।
30.मंगल-रा.शे. 5:5 से

अक्टूबर
1.बुध-समस्त दिन।
2.गुरु-समस्त दिन।
3.शुक्र-प्रातः 6:53 तक।
5.रवि-प्रातः 6:43 से
रा.शे. 5:59 तक।
11.शनि-रात 9:9 से
12.रवि-रात 7:40 तक।
23.गुरु-रात 3:38 से
24.शुक्र-समस्त दिन।
25.शनि-समस्त दिन।
26.रवि-दिन 8:41 तक।
27.सोम-दिन 10:49 से
28.मंगल-दिन 12:32 तक।
30.गुरु-दिन 2:34 से
31.शुक्र-समस्त दिन।

नवम्बर
1.शनि-दिन 2:37 तक।
3.सोम-दिन 1:1 से
4.मंगल-दिन 11:45 तक।
10.सोम-रात 1:21 से
11.मंगल-रात 12:37 तक।
23.रवि-सायं 6:1 से
24.सोम-रात 7:51 तक।
25.मंगल-रात 9:15 से
26.बुध-रात 10:7 तक।
28.शुक्र-रात 10:22 से
29.शनि-समस्त दिन
30.रवि-रात 8:57 तक।

दिसम्बर
2.मंगल-सायं 6:18 से
3.बुध-सायं 4:41 तक।
10.बुध-प्रातः 7:58 से।
11.गुरु-प्रातः 7:58 तक।
22.सोम-रात 4:36 से
23.मंगल-रात 5:37 तक।
24.बुध-रा.शे. 6:5 से
25.गुरु-रा.शे. 6:7 तक।
27.शनि-रा.शे.4:52।
29.सोम-समस्त दिन।
30.मंगल-12:46 तक।

यायीजय योग

जनवरी
2.गुरु-रात 12:30 से
6.सोम-सायं 6:30 तक।
9.गुरु-दिन 11:31 से
11.शनि-प्रातः7:26 से
13.सोम-दिन 10:35 से
16.गुरु-दिन 11:43 तक।
18.शनि-दिन 2:56 से
19.रवि-प्रातः 6:55 तक।
20.सोम-दिन 8:50 से
30.गुरु-दिन 8:21 से

फरवरी
3.रवि-दिन 9:36 तक।
6.गुरु-रात 9:13 से
10.सोम-रात 6:8 तक।
15.शनि-रात 10:13 तक।

ता. वार योग
16.रवि-रात 12:9 से

मार्च
2.रवि-दिन 11:44 तक।
6.गुरु-दिन 3:3 तक।
15.शनि-प्रातः 7:34 तक।
17.सोम-दिन 12:31 से
23.रवि-रात 11:49 से
30.रवि-दिन 2:14 तक।
31.सोम-सायं 4:34 से

अप्रैल
6.रवि-दिन 9:42 से
10.गुरु-दिन 12:54 से
12.शनि-सायं 5:13 तक।
13.रवि-रात 7:43 से
14.सोम-प्रातः 6:29 तक।
20.रवि-प्रातः 7:26 से
26.शनि-प्रातः 5:45 तक।
28.सोम-रात 10:31 तक।

मई
5.सोम-दिन 11:47 से
8.गुरु-रात 1:42 तक।
10.शनि-रात 2:49 से।
12.सोम-प्रातः 5:37 तक।
17.शनि-दिन 3:6 से
19.सोम-दिन 3:44 तक।
22.गुरु-रात 8:24 से
25.रवि-दिन 8:55 से

जून
1.रवि-रात 11:54 से
8.रवि-प्रातः 7:2 से।
14.शनि-दिन 2:25 तक।
16.सोम-दिन 1:12 तक।
19.गुरु-दिन 8:18 से
21.शनि-सायं 5:11 से
23.सोम-दिन 1:53 से
26.गुरु-दिन 10:7 से
28.शनि-दिन 12:1 तक।

जुलाई
3.गुरु-दिन 2:42 से
5.शनि-सायं 6:28 से
7.सोम-रात 10:20 से
13.रवि-प्रातः 7:33 तक।
17.गुरु-सायं 5:47 तक।
19.शनि-दिन 12:57 तक।
21.सोम-दिन 8:4 तक।
28.सोम-रात 11:42 से
31.गुरु-रात 12:58 से

अगस्त
1.शुक्र-रात 3:31 से
3.रवि-प्रातः 6:10 से
10.रवि-दिन 12:38 तक।
14.गुरु-प्रातः 5:45 तक।
17.रवि-प्रातः 6:25 से।
25.सोम-दिन 11:39 से
28.गुरु-दिन 8:13 से
30.शनि-दिन 1:22 से

सितम्बर
8.सोम-रात 10:0 से
11.गुरु-सायं 5:54 से
13.शनि-दिन 2:34 से
14.रवि-दिन 8:41 तक।
22.सोम-दिन 11:20 तक।
27.शनि-दिन 8:45 तक।

अक्टूबर
6.सोम-दिन 11:25 से
9.गुरु-रात 12:27 तक।
11.शनि-रात 9:8 तक।
16.गुरु-दिन 1:46 से

ता. वार योग
18.शनि-सायं 5:32 से
19.रवि-दिन 1:55 तक।
30.गुरु-दिन 2:34 से

नवम्बर
3.सोम-रात 11:37 तक।
6.गुरु-प्रातः 8:37 तक।
10.सोम-प्रातः 8:2 तक।
15.शनि-रात 2:8 तक।
17.सोम-रा.शे.5:46 से
24.सोम-रात 7:51 से
27.गुरु-रात 7:24 तक।
30.रवि-सायं 4:10 से

दिसम्बर
1.सोम-दिन 2:20 तक।
4.गुरु-दिन 3:2 से
7.रवि-दिन 10:22 से
13.शनि-दिन 9:27 तक।
22.सोम-दिन 9:40 से
27.शनि-प्रातः 8:53 तक।
29.सोम-रात 2:20 से

स्थायीजय योग

जनवरी
10.शुक्र-दिन 9:22 से
17.शुक्र-दिन 1:6 तक।
28.मंगल-दिन 8:33 तक।

फरवरी
11.मंगल-रात 6:23 तक।

मार्च
7.शुक्र-दिन 1:6 तक।
18.मंगल-दिन 3:9 से
25.मंगल-रात 11:30 से
28.शुक्र-सायं 6:43 तक।

अप्रैल
1.मंगल-दिन 2:55 से
8.मंगल-रात 11:4 से

जून
3.मंगल-रात 12:37 तक।
6.शुक्र-रा.शे.5:2 से
24.मंगल-दिन 12:23 से

जुलाई
8.मंगल-रात 11:55 से
18.शुक्र-दिन 3:26 तक।
22.मंगल-प्रातः 5:48 तक।

अगस्त
1.शुक्र-रात 3:31 से
12.मंगल-दिन 9:51 से
19.मंगल-रात 2:17 से

सितम्बर
19.शुक्र-रात 11:46 से
26.शुक्र-प्रातः 6:40 तक।
30.मंगल-दिन 1:44 तक।

अक्टूबर
10.शुक्र-रात 10:46 तक।
17.शुक्र-सायं 4:46 से
24.शुक्र-रा.शे.6:14 से

नवम्बर
4.मंगल-दिन 11:45 तक।

दिसम्बर
2.मंगल-दिन 12:16 तक।
16.मंगल-दिन 3:9 से
23.मंगल-दिन 10:33 से
30.मंगल-रात 12:46 तक।

संधिकर

अप्रैल
23.बुध-प्रातः 7:20 से

मई
28.बुध-रात 2:57 से।

वास्तु सम्बन्धी आवश्यक जानकारी

1. भूमि का आकार आयताकार, वर्गाकार एवं गोमुख सर्वोत्तम होता है। उत्तर-दक्षिण लम्बी भूमि ज्यादा लाभदायक होती है। भूमि पश्चिम-दक्षिण ऊँचा व पूरब-उत्तर नीचा होने पर ज्यादा लाभदायक होती है। छत की ढलान ईशान में शुभ होती है। वृत्ताकार भूखण्ड में निर्माण भी वृत्ताकार ही होना चाहिये।
2. पूरब-उत्तर का कोना (ईशान कोण) में मन्दिर, जलस्रोत, कुआँ, हैण्डपम्प, जलाशय रखना चाहिये। ऐसा नहीं है तो लोहे की पाइप में नल लगा दें या लोटे में जल भरकर रख दें।
3. सिंहमुखी भूखण्ड व्यावसायिक भवन हेतु शुभ होता है।
4. भूखण्ड का उत्तर या पूर्व या ईशान कोण में विस्तार शुभ होता है।
5. भूखण्ड के उत्तर या पूर्व में मार्ग शुभ होता है। दक्षिण या पश्चिम में मार्ग व्यापारिक स्थल के लिये शुभ होते हैं।
6. पूरब-दक्षिण के कोने (अग्निकोण) में रसोई घर, जनरेटर, बिजली का मीटर व गर्म सारी चीजें रख सकते हैं।
7. दक्षिण-पश्चिम के कोने (नैर्ऋत्यकोण) में भवन स्वामी का शयन कक्ष होना चाहिये।
8. उत्तर-पश्चिम के कोने (वायव्य कोण) में कुंवारी कन्या का कमरा होना चाहिये।
9. सीढ़ी (घड़ी अनुसार दाईं तरफ घुमते हुये) पर पहला कदम पूरब या उत्तर चढ़ना उत्तम माना जाता है। एकदम ईशान या अग्नि कोण पर सीढ़ी नहीं बनाना चाहिये। पश्चिम-दक्षिण में सीढ़ी बनाने पर यह दिशा अपने आप भारी हो जाती है। इसलिये सीढ़ी के नीचे शौचालय, स्नानघर स्टोर, मन्दिर नहीं बनाना चाहिये। यह रोग व कष्ट कारक होता है। सीढ़ियों की संख्या विषम (1,3,5,7) होनी चाहिये।
10. हर दिशा में खिड़कियों की संख्या विषम (1,3,5,7) होनी चाहिये। पूरब और उत्तर में खिड़की बनाना व खुला रखना सर्वोत्तम होता है। चूँकि इस दिशा से हल्की धूप व हवा प्राप्त होती रहती है। जो हमारे स्वास्थ्य के लिये लाभकारी होती है। दक्षिण और पश्चिम दिशा में खिड़की व खुलापन कम होना चाहिये। क्योंकि इस दिशा में सूर्य में तेजी व गर्म हवा आती है।
11. यदि आवासीय परिसर में बेसमेन्ट का निर्माण कराना हो तो उसे उत्तर या पूर्व में ब्रह्मस्थान को बचाते हुये बनाना चाहिये। बेसमेन्ट की ऊँचाई कम से कम 9 फीट होनी चाहिये तथा वह तल से 3 फीट ऊपर होना चाहिये, जिससे उसमें प्रकाश व हवा का निर्बाध रूप से आवागमन हो सके।
12. भवन के प्रत्येक मंजिल के छत की ऊँचाई 12 फीट होनी चाहिये; किन्तु यह 10 फीट से कम कदापि नहीं होनी चाहिये।
13. भवन का दक्षिणी भाग हमेशा उत्तरी भाग से ऊँचा होना चाहिये एवं पश्चिमी भाग हमेशा पूर्वी भाग से ऊँचा होना चाहिये। भवन में नैर्ऋत्य सबसे ऊँचा व ईशान सबसे नीचा होना चाहिये।
14. घर में सारे कार्य मनुष्यों को पूरब व उत्तर मुँह होकर करना सर्वोत्तम है। जैसे—आइना देखना, खाना पकाना, बच्चों का पढ़ना, पूजा करना इत्यादि। सोफे पर बैठते समय मुँह पूरब व उत्तर सर्वोत्तम माना जाता है।
15. सोते समय शिर दक्षिण या पूरब होना चाहिये, क्योंकि पूरब में मन्दिर व प्रत्यक्ष देवता सूर्य उदय होते हैं, इसलिये पूरब पैर करके नहीं सोना चाहिये। यदि व्यक्ति पूरब या दक्षिण दिशा में पैर करके सोते हैं तो मन में नकरात्मक विचार और डरावने सपने आते हैं। इसके अलावा व्यक्ति निराशा और भय का शिकार हो जाता है।
16. शौच करते समय आपका मुँह दक्षिण या उत्तर दिशा में होना चाहिये।
17. पूरब या उत्तर दिशा में ड्राइंग रूम, डाइनिंग रूम व बच्चों की पढ़ाई के लिये उत्तम स्थान है तथा पूरब-उत्तर दिशा सबसे हल्का होना चाहिये। इस दिशा में छोटे पेड़ तुलसी जी, बेला, चम्पा, चमेली, गुड़हल इत्यादि लगाना चाहिये। बड़े पेड़ इस दिशा में नहीं लगाने चाहिये।
18. नवनिर्मित मकान में पीलरों की संख्या सम (4,6,8,12) होनी चाहिये।
19. मकान में प्रवेशद्वार पूरब व उत्तर दिशा सर्वोत्तम होती है।
20. मकान के एकदम मध्य में पीलर या भारी चीज नहीं रखनी चाहिये। ऐसा होने पर पेट के रोग का कारण बनता है।
21. स्टोर में आलमारी का मुँह पूरब या उत्तर खुलना सर्वोत्तम माना जाता है। दक्षिण पश्चिम के कोने (नैर्ऋत्यकोण) में शौचालय-स्नानगृह व नाली नहीं होना चाहिये। अग्निकोण, ईशानकोण, नैर्ऋत्यकोण में नाली नहीं होनी चाहिये। ये कोण धन व मालिक का स्थान होता है।
22. प्रवेश द्वार के लिये चारो दिशाओं में भूमि की लम्बाई में 9 भाग करके प्रवेश करते समय पाँच भाग दायें एवं तीन भाग दायें छोड़कर शेष भाग में प्रवेश द्वार बनवाये।
23. घर के उत्तर दिशा में कुआँ, तालाब, बगीचा, पूजाघर, तहखाना, स्वागतकक्ष, कोषागार व लिविंग रूम बनाये जा सकते हैं।
24. भवन के द्वार के सामने मन्दिर, खम्भा व गड्ढा अशुभ होते हैं।
25. घर के पूजा स्थान में 7 इंच से बड़ी मूर्तियाँ स्थापित नहीं करनी चाहिये। यदि मूर्ति पहले से है। तो उसकी विधि-विधान से पूजा करते रहें।
26. घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्यदेव की प्रतिमा, तीन देवी प्रतिमा, दो गोमतीचक्र व दो शालिग्राम नहीं रखना चाहिये।

* वास्तु शास्त्र का यथा सम्भव पालन करें।

वास्तुचक्र

ईशान — पूर्व — आग्नेय

उत्तर (बायें) — दक्षिण (दायें)

शिखी 32 सिर 1	पर्जन्य नेत्र 2	जयन्त कान 3	इन्द्र कन्धा	सूर्य भुजा 4	सत्य भुजा 5	भृश भुजा 6	अन्तरिक्ष भुजा 7	अनिल भुजा 8
दिति 31 नेत्र	आप् मुख						सावित्र हाथ	9 पूषा मणिबन्ध
अदिति 30 कान		आपवत्स छाती		अर्यमा स्तन		सविता हाथ		10 वितथ बगल
भुजग 29 कन्धा								11 बृहत्क्षत बगल
सोम 28 भुजा		पृथ्वीधर स्तन		ब्रह्मा हृदय		विवस्वान् पेट		12 यम ऊरु
भल्लाट 27 भुजा								13 गन्धर्व घुटना
मुख्य 26 भुजा		राजयक्ष्मा हाथ		मित्र पेट		इन्द्र लिङ्ग		14 भृंगराज जंघा
नाग 25 भुजा	रुद्र हाथ						जय लिङ्ग	15 मृग नितम्ब
रोग 24 भुजा	पापयक्ष्मा मणिबन्ध 23	शोष बगल 22	असुर बगल 21	वरुण ऊरु 20	पुष्पदन्त घुटना 19	सुग्रीव जंघा 18	दौवारिक नितम्ब 17	16 पितर पैर

वायव्य — पश्चिम — नैर्ऋत्य

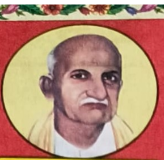

ठाकुर प्रसाद

रूपेश पंचाङ्ग

जुलाई 7 2025 JULY

विक्रम संवत् 2082	श्रीशालिवाहन शाके 1947	फसली सन् 1432	इस्लामी हिजरी सन् 1447	बंगला संवत् 1432	नेपाली संवत् 1145
आषाढ़ शुक्ल 6 से श्रावण शुक्ल 7 तक। ता. 11 से श्रावण मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय आषाढ़ 10 से श्रावण 9 तक। ता. 23 से श्रावण मास प्रारम्भ।	प्र. हाड़ 20 से प्र. सावन 21 तक। ता. 11 से प्र. सावन मास प्रारम्भ।	मुहर्रम 5 से सफर 5 तक। ता. 27 से सफर माह शुरू।	आषाढ़ 16 से श्रावण 15 तक। ता. 17 से श्रावण मास प्रारम्भ।	आषाढ़ 17 गते से श्रावण 15 गते तक। ता. 17 से श्रावण मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			31		
16			योग		

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	31

भद्रा-विचार

ता.2 दिन 1:12 से रात 1:57 तक।
ता.6 प्रातः 7:28 से रात 8:29 तक।
ता.9 रात 1:5 से ता.10 दिन 2:27 तक।
ता.13 दिन 1:15 से रात 12:50 तक।
ता.16 रात 8:0 से ता.17 प्रातः 6:54 तक।
ता.19 रात 11:43 से ता.20 दिन 10:29 तक।
ता.22 रात 3:45 से ता.23 दिन 2:53 तक।
ता.28 दिन 11:26 से रात 11:42 तक।
ता.31 रात 3:57 से।

तेजी-मंदी

सोना, चाँदी, लोहा-ताँबा, गुड़-शक्कर, रुई, वस्त्र तेज होगा, धान्यादि में मंदी, ज्वार-बाजरा, किराना में तेजी रहेगी।

मूल विचार

ता.7 को ज्येष्ठा रात 1:17 से ता.9 को मूल रा.शे.5:11 तक।
ता.16 को रेवती रा.शे. 4:32 से ता.18 को अश्विनी रात 1:27 तक।
ता.25 को श्लेषा सायं 5:7 से ता.27 को मघा सायं 5:51 तक।

पंचक विचार

ता.13 को रात 7:28 से ता.17 को रात 3:4 तक।

वार					
रवि SUN		आषाढ़ शुक्ल एकादशी रात 8:28 तक भद्रा **6** एकादशी व्रत ताजिया मु.10 बं.21 / ग.15 ने. आषाढ़ 22 गते वृश्चिक चं. सायं 4:12 से, विशाखा रात 10:50 तक	श्रावण कृष्ण तृतीया रात 12:50 तक भद्रा **13** मु.17 बं.28 / ग.22 ने. आषाढ़ 29 गते कुम्भ चं. रात 7:28 से, श्रवण प्रातः 7:33 तक	श्रावण कृष्ण दशमी दिन 10:29 तक भद्रा **20** मु.24 बं.4 / ग.29 ने. श्रावण 4 गते वृष चं. प्रातः 5:23 से, कृत्तिका रात 10:9 तक	श्रावण शुक्ल तृतीया रात 11:9 तक **27** मु.1 बं.11 / ग.5 ने. श्रावण 11 गते सिंह चं. मघा सायं 5:51 तक
सो MON		आषाढ़ शुक्ल द्वादशी रात 10:20 तक **7** मु.11 बं.22 / ग.16 ने. आषाढ़ 23 गते वृश्चिक चं. अनुराधा रात 1:17 तक	श्रावण कृष्ण चतुर्थी रात 11:35 तक **14** गणेश चतुर्थी व्रत मु.18 बं.29 / ग.23 ने. आषाढ़ 30 गते कुम्भ चं. धनिष्ठा प्रातः 7:22 तक	श्रावण कृष्ण एकादशी दिन 8:4 तक **21** एकादशी व्रत मु.25 बं.5 / ग.30 ने. श्रावण 5 गते वृष चं. रोहिणी रात 8:37 तक	श्रावण शुक्ल चतुर्थी रात 11:42 तक भद्रा **28** मु.2 बं.12 / ग.6 ने. श्रावण 12 गते कन्या चं. रात 1:22 से, पू.फा. सायं 6:58 तक
मं TUE	आषाढ़ शुक्ल षष्ठी दिन 12:11 तक **1** मुस्लिम 5 बंगला 16 / राष्ट्रीय 10 नेपाली आषाढ़ 17 गते कन्या चं. सायं 5:50 से, पू.फा. दिन 11:24 तक	आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी रात 11:55 तक **8** प्रदोष व्रत मु.12 बं.23 / ग.17 ने. आषाढ़ 24 गते धनु चं. रात 3:28 से, ज्येष्ठा रात 3:28 तक	श्रावण कृष्ण पंचमी रात 9:58 तक **15** मु.19 बं.30 / ग.24 ने. आषाढ़ 31 गते मीन चं. रात 12:2 से, शतभिषा प्रातः 6:44 तक	श्रावण कृष्ण द्वादशी प्रातः 5:48 तक, त्रयोदशी रात 3:45 तक भद्रा **22** प्रदोष व्रत मु.26 बं.6 / ग.31 ने. श्रावण 6 गते मिथुन चं. प्रातः 7:58 से, मृगशिरा रात 7:16 तक	श्रावण शुक्ल पंचमी रात 12:42 तक **29** नाग पंचमी मु.3 बं.13 / ग.7 ने. श्रावण 13 गते कन्या चं. उ.फा. रात 8:34 तक
बु WED	आषाढ़ शुक्ल सप्तमी दिन 1:12 तक भद्रा **2** मु.6 बं.17 / ग.11 ने. आषाढ़ 18 गते कन्या चं. उ.फा. दिन 1:5 तक	आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी रात 1:4 तक भद्रा **9** मु.13 बं.24 / ग.18 ने. आषाढ़ 25 गते धनु चं. मूल रा.शे. 5:11 तक	श्रावण कृष्ण षष्ठी रात 8:0 तक भद्रा **16** कर्क संक्रान्ति मु.20 बं.31 / ग.25 ने. आषाढ़ 32 गते मीन चं. पू.भा. प्रा.5:48 तक, उ.भा. रा.शे.4:32 तक	श्रावण कृष्ण चतुर्दशी रात 2:0 तक भद्रा **23** मु.27 बं.7 / ग.1 ने. श्रावण 7 गते मिथुन चं. आर्द्रा सायं 6:12 तक	श्रावण शुक्ल षष्ठी रात 2:9 तक **30** मु.4 बं.14 / ग.8 ने. श्रावण 14 गते कन्या चं. हस्त रात 10:36 तक
गु THU	आषाढ़ शुक्ल अष्टमी दिन 2:42 तक **3** मु.7 बं.18 / ग.12 ने. आषाढ़ 19 गते तुला चं. रा.शे. 4:26 से, हस्त दिन 3:13 तक	आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा रात 1:48 तक भद्रा **10** पूर्णिमा गुरु पूर्णिमा मु.14 बं.25 / ग.19 ने. आषाढ़ 26 गते धनु चं. पू.षा. समस्त	श्रावण कृष्ण सप्तमी सायं 5:47 तक भद्रा **17** मु.21 बं.1 / ग.26 ने. श्रावण 1 गते मेष चं. रात 3:4 से, रेवती रात 3:4 तक	श्रावण कृष्ण अमावस्या रात 12:36 तक **24** अमावस्या मु.28 बं.8 / ग.2 ने. श्रावण 8 गते कर्क चं. रात 11:39 से, पुनर्वसु सायं 5:27 तक	श्रावण शुक्ल सप्तमी रात 3:56 तक भद्रा **31** मु.5 बं.15 / ग.9 ने. श्रावण 15 गते तुला चं. दिन 11:48 से, चित्रा रात 12:58 तक
शु FRI	आषाढ़ शुक्ल नवमी सायं 4:29 तक **4** मु.8 बं.19 / ग.13 ने. आषाढ़ 20 गते तुला चं. चित्रा सायं 5:38 तक	श्रावण कृष्ण प्रतिपदा रात 1:59 तक **11** मु.15 बं.26 / ग.20 ने. आषाढ़ 27 गते मकर चं. दि.12:42 से, पू.षा. प्रातः 6:31 तक	श्रावण कृष्ण अष्टमी दिन 3:26 तक **18** मु.22 बं.2 / ग.27 ने. श्रावण 2 गते मेष चं. अश्विनी रात 1:27 तक	श्रावण शुक्ल प्रतिपदा रात 11:38 तक **25** मु.29 बं.9 / ग.3 ने. श्रावण 9 गते कर्क चं. पुष्य सायं 5:7 तक	**सूर्य नक्षत्र** ता.6 को पुनर्वसु दिन 3:47 से। ता.16 को कर्क राशि रा.शे. 4:55 से। ता.20 को पुष्य सायं 5:13 से।
श SAT	आषाढ़ शुक्ल दशमी सायं 6:28 तक **5** मु.9 बं.20 / ग.14 ने. आषाढ़ 21 गते तुला चं. स्वाती रात 8:14 तक	श्रावण कृष्ण द्वितीया रात 1:39 तक **12** मु.16 बं.27 / ग.21 ने. आषाढ़ 28 गते मकर चं. उ.षा. प्रातः 7:17 तक	श्रावण कृष्ण नवमी दिन 12:57 तक भद्रा **19** मु.23 बं.3 / ग.28 ने. श्रावण 3 गते मेष चं. भरणी रात 11:46 तक	श्रावण शुक्ल द्वितीया रात 11:8 तक **26** चन्द्रदर्शन मु.30 बं.10 / ग.4 ने. श्रावण 10 गते सिंह चं. सायं 5:14 से, श्लेषा सायं 5:14 तक	

तारीख	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
सूर्योदय	5:13	13	14	14	14	14	14	15	15	15	16	16	16	16	17	17	17	18	18	19	19	20	20	20	21	21	22	22	23	23	24
सूर्यास्त	6:47	47	46	46	46	46	46	45	45	45	44	44	44	44	43	43	43	42	42	41	41	40	40	40	39	39	38	38	37	37	36

व्रत-त्यौहार

1.मंगल-स्कन्द-षष्ठी व्रत।
6.रवि-हरिशयनी एकादशी व्रत-सबका, पुनर्वसु के सूर्य दिन 3:47, मु.पर्व ताजिया।
7.सोम-वामन द्वादशी, चातुर्मास आरंभ, गुरु उदय पूर्व में दिन 3:3।
8.मंगल-भौम प्रदोष व्रत।
10.गुरु-स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा।
11.शुक्र-पार्थिव पूजन, काशी विश्वनाथ दर्शन-पूजन प्रारंभ।
14.सोम-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रा.9:29, श्रावण सोमवार व्रत।
15.मंगल-भौम व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन, नागपंचमी-बं.।
16.बुध-कर्क संक्रांति रा.शे.4:55।
18.शुक्र-शीतलाष्टमी व्रत।
20.रवि-पुष्य के सूर्य सायं 5:13।
21.सोम-कामदा एकादशी व्रत-सबका, श्रावण सोमवार व्रत।
22.मंगल-भौम प्रदोष व्रत, मंगला गौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।
23.बुध-मास शिवरात्रि व्रत।
24.गुरु-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, हरियाली अमावस।
26.शनि-चन्द्रदर्शन, धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जयंती।
27.रवि-हरियाली तीज व्रत।
28.सोम-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत।
29.मंगल-नाग पंचमी, तक्षक पूजा, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत।
30.बुध-लुण्ठन षष्ठी, कल्कि अवतार।
31.गुरु-गो.तुलसीदास जयंती।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

- मेष- धन सम्पत्ति में वृद्धि होगी, स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी कम होगी।
- वृष- धार्मिक व मांगलिक कार्य होंगे, स्वास्थ्य में बाधा, उदर विकार सम्भव है।
- मिथुन- विज्ञापन कर्मियों को मंदी का सामना करना पड़ेगा, शत्रु प्रबल होंगे।
- कर्क- नौकरी में स्थानान्तरण सम्भव है, आकस्मिक व्यय सम्भव है।
- सिंह- कानूनी कार्यों में असफलता, वित्त संबंधी लेन देन में विवाद।
- कन्या- भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, कष्टकर यात्रायें करनी पड़ेगी।
- तुला- घर परिवार का उत्तम सुख मिलेगा, भौतिक सुविधाओं के साधन जुटेंगे।
- वृश्चिक-घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, मन उदास, शारीरिक कष्ट होगा।
- धनु- मानसिक तनाव होगा, आर्थिक तथा वित्तीय लेनदेन से सतर्क रहें।
- मकर- संतान से कष्ट होगा, माता-पिता के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी।
- कुम्भ- नौकरी पेशा वाले जातक व्यस्त रहेंगे, व्यवसाय कारोबार में सफलता मिलेगी।
- मीन- संतान के प्रति चिन्ता, स्वास्थ्य में बाधा, कपट व हानि सम्भव है।

आकाशी-लक्षण

श्रावण मास में अधिक वर्षा से बाढ़ की सम्भावना है। तेज हवा के साथ उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, गुजरात, राजस्थान में वर्षा होने की सम्भावना है।

जून-2025

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3		17	24	
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20		
शनि		14	21	28	

अपने व अपने परिवार के सभी अनिष्ट ग्रहों की शांति के लिए व मनोकामना की पूर्ति हेतु अपने परिवार के सदस्यों व कुछ मित्रों के साथ अपनी कुल देवी या देवता का स्मरण करते हुए पाँच बार 'ॐ नमः शिवाय' बोलते हुए- आम, आँवला, नीम, अमरुद व अन्य वृक्ष 1, 5, 11, 21 पेड़ घर के बाहर, कालोनी में रोड के किनारे अथवा हाइवे पर लगाने से अनिष्ट ग्रहों की शांति एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

अगस्त-2025

रवि	31	3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8		22	29
शनि	2			23	30

थायराइड के लिए घरेलू उपचार

नारियल पानी, काड लीवर आयल, अश्वगन्धा

इन सभी का प्रयोग दस दिन से ज्यादा न करें।

पत्तागोभी ब्रोकली थायराइड में नहीं खाना चाहिए → पत्तागोभी, ब्रोकली

विस्तृत रोग + दवा दिसम्बर के पीछे देखें।

व्रत-पर्व-त्योहार, जयन्ती एवं अवकाश-सन् 2025 ई.

ता.वार विवरण

जनवरी-व्रत त्यौहार

1.बुध-ईसाई नववर्ष आरम्भ, चन्द्रदर्शन।
2.गुरु-मु.म. रज्जब हि.1446।
3.शुक्र-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
5.रवि-स्कन्द षष्ठी व्रत, अन्नरूपा षष्ठी-बंगाल।
9.गुरु-शाम्ब दशमी-उड़ीसा, सूर्यपूजा-उड़ीसा।
10.शुक्र-पुत्रदा एकादशी व्रत-सबका, वैकुण्ठ एकादशी-द.भा.।
11.शनि-शनि प्रदोष व्रत, कूर्म द्वादशी व्रत, उ.षा. के सूर्य दिन 9:13।
13.सोम-स्नान दान व्रत की पूर्णिमा, लोहड़ी-पंजाब, भोगी (द.भा.)।
14.मंगल-मकर संक्रांति दिन 3:26, खिचड़ी पर्व पुण्यकाल, खरमास समाप्त, पोंगल (द.भा.), बिहु (असम)।
16. गुरु-सौभाग्य सुन्दरी तीज व्रत।
17.शुक्र-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं. उ. रात 8:47।
20.सोम-अभिजित के सूर्य रात 4:0 से।
21.मंगल-कालाष्टमी व्रत।
22.बुध-बुधाष्टमी पर्व, अष्टका श्राद्ध।
24.शुक्र-श्रवण के सूर्य दिन 10:22, अभिजित के सूर्य समाप्त रा.शे. 5:59।
25. शनि-षट्तिला एकादशी व्रत सबका।
26.रवि-तिल द्वादशी।
27.सोम-सोम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, मेरु त्रयोदशी-जैन।
28.मंगल-रटन्ती कालिका पूजा-बंगाल।
29.बुध-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, मौनी अमावस्या, कुम्भ पर्व स्नान, त्रिवेणी अमावस, मकर वावु-केरल।
30.गुरु-गुप्त नवरात्रारम्भ, चन्द्रदर्शन।
31.शुक्र-मु.म.सावान हि.1446।

जनवरी जयन्ती

2.गुरु-उर्स मोइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)।
4.शनि-लुई ब्रेल जयन्ती।
5.रवि-गुरु गोविन्द सिंह जयंती (नवीन मत)।
6.सोम-गुरु गोविन्द सिंह जयंती (प्रा.मत)।
7.मंगल-राजिम भक्तिन माता जयंती।
10.शुक्र-तैलंग स्वामी जयन्ती (काशी)
12.रवि-स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (नवीन मत), राष्ट्रीय युवा दिवस।
13.सोम-शाकम्भरी प्राकट्योत्सव।
14.मंगल-महाकुंभ प्रयाग मेला आरम्भ, मु. हजरत अली जयंती, गिन्दीमेला-गवाकोट, डाडामंडी-नयाघाटी, माघ मेला-काशी, रुद्रमहादेव मेला (कालीमठ), उत्तरायणी मेला-गंगोली रामेश्वर, बागेश्वर।
15.बुध-थल सेना दिवस।
19.रवि-ओशो महोत्सव।
21.मंगल-स्वामी विवेकानन्द जयंती (प्रा.मत.), श्रीरामानंदाचार्य जयंती, वीर हेमू कालाणी शहीद दिवस।
23.गुरु-सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती।
26.रवि-गणतन्त्र दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय कस्टम दिवस।
28.मंगल-लाला लाजपतराय जयन्ती, मु.पर्व शबे मिराज।
30.गुरु-गाँधी स्मृति दिवस, शहीद दिवस।

फरवरी-व्रत त्यौहार

1.शनि-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, कुन्द चतुर्थी व्रत, वरद चतुर्थी, तिल चौथ।
3.सोम-वसंत पंचमी, सरस्वती पूजा, श्रीपंचमी, लेखनी पूजा-बंगाल।
4.मंगल-शीतला षष्ठी-बंगाल, अचला सप्तमी व्रत, आरोग्य सप्तमी, रथसप्तमी, सूर्य पूजा।
5.बुध-भीष्माष्टमी पर्व, बुधाष्टमी पर्व।
6.गुरु-महानन्दा नवमी, धनिष्ठा के सूर्य दिन 12:35।
8.शनि-जया एकादशी व्रत-सबका, भैमी एकादशी-बंगाल।
9.रवि-आमलकी द्वादशी, भीष्म द्वादशी, वाराह द्वादशी, तिल द्वादशी।
10.सोम-सोम प्रदोष व्रत।
12.बुध-स्नान दान व्रत की माघी पूर्णिमा, माघ मासीय यम-नियम समापन, कुम्भ संक्रान्ति रात्रि 2:11।
16.रवि-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 9:12।
19.बुध-शतभिषा के सूर्य सायं 4:12।
20.गुरु-कालाष्टमी।
21.शुक्र-सीताष्टमी व्रत, अष्टका श्राद्ध।
24.सोम-विजया एकादशी व्रत-सबका।
25.मंगल-भौम प्रदोष व्रत, वंजुली द्वादशी।
26.बुध-महाशिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
27.गुरु-श्राद्ध की अमावस्या।
28.शुक्र-स्नान दान की अमावस्या।

फरवरी जयन्ती

3.सोम-वागीश्वरी देवी प्राकट्योत्सव।
6.गुरु-हरसू ब्रह्मदेव जयंती चैनपुर-बिहार।
9.रवि- गुरु गोरखनाथ जयंती।
10.सोम-मरुस्थल मेला-राजस्थान 3 दिन।

ता.वार विवरण

11.मंगल-स्वामी करपात्रीजी पुण्य तिथि, पं. दीनदयाल उपाध्याय पुण्य तिथि।
12.बुध-श्रीललिता देवी प्राकट्योत्सव, संत रविदास जयंती, सर्वोदय दिवस।
13.गुरु-मु.पर्व शबेबरात।
21. शुक्र-जानकी प्राकट्योत्सव।
22.शनि-समर्थ गुरु रामदास जयंती।
23.रवि-स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती।
26.बुध-वैद्यनाथ प्राकट्योत्सव, कृत्तिवासेश्वर व काशी विश्वनाथ पूजन दर्शन।
28.शुक्र-राष्ट्रीय विज्ञान दिवस।

मार्च व्रत-त्यौहार

1.शनि-चन्द्रदर्शन, फुलेरा दूज।
2.रवि- मु.म.रमजान हि.1446, रोजा शुरू।
3.सोम-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, संत चतुर्थी-उड़ीसा, मनोरथ चतुर्थी।
4.मंगल-पूर्वा भाद्रपद के सूर्य रा. 9:44।
5.बुध-स्कन्द षष्ठी, गोरूपणी षष्ठी-बंगाल।
6.गुरु-कामदा सप्तमी व्रत।
7.शुक्र-होलाष्टक आरम्भ।
8.शनि-आनन्द नवमी।
9.रवि-फगुदशमी (उड़ीसा)।
10.सोम-आमलकी रंगभरी एकादशी व्रत-सबका, श्रीकाशी विश्वनाथ शृंगार दिवस।
11.मंगल-भौम प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी, श्रीनृसिंह द्वादशी।
13.गुरु-व्रत की पूर्णिमा, होलिका दहन रात्रि 10:37, चौमासी चौदस-जैन।
14.शुक्र-स्नान दान की पूर्णिमा, होली काशी में, मीन संक्रान्ति रात 9:24।
15.शनि-होली काशी में अन्यत्र, वसन्तोत्सव, रतिकाम महोत्सव।
17.सोम-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रा.8:49, उत्तरा भाद्रपद के सूर्य रा.शे. 5:36।
19.बुध-रंग पंचमी, शुक्रास्त पश्चिम में दिन 1:5।
21.शुक्र-शीतला सप्तमी व्रत।
22.शनि-शीतलाष्टमी व्रत (बसिअउरा), राष्ट्रीय नववर्ष चैत्र शक 1947 आरम्भ।
23.रवि-शुक्रोदय पूर्व में दिन 2:55।
25.मंगल-पापमोचिनी एकादशी व्रत-सबका, वृद्ध अंगारक (बुढ़वा मंगल) पर्व।
27.गुरु-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, महावारुणी पर्व।
29.शनि-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, चान्द्रवर्ष सं. 2081 समाप्त।
30.रवि-वासंतीय नवरात्र प्रारम्भ, कलश स्थापन, हिन्दू नववर्ष आरम्भ, वि.सं.2082, बैठकी, गुड़ी-पड़वा, उगादि द.भा., चैती चाँद, चन्द्रदर्शन।
31.सोम-सिन्धौरा दूज, रेवती के सूर्य सायं 4:8, मु. सव्वाल हि.1446, ईद।

मार्च जयन्ती

1.शनि-रामकृष्ण परमहंस जयंती।
8.शनि-लट्ठमार होली-बरसाना, महिला दिवस।
9.रवि-लट्ठमार होली-नन्दगाँव।
10.सोम-लट्ठमार होली-जन्मस्थान (मथुरा)।
11.मंगल-मेला-खाटू श्यामदेव-राजस्थान।
13.गुरु-डोलयात्रा।
14.शुक्र-चैतन्य महाप्रभु जयंती, चतुःषष्ठीदेवी दर्शन-पूजन सायं।
15.शनि-होला मेला-पंजाब, उपभोक्ता दिवस।
16.रवि-संत तुकाराम जयंती।
19.बुध-विजय गोविन्द हलंकार जयंती (मणिपुर)।
22.शनि-आदित्यनाथ जयंती-जैन, मु.पर्व शहादते हजरत अली।
28.शुक्र-मु.आखिरी जुमा।
30.रवि-शैलपुत्री देवी दर्शन, सिन्धी नववर्ष दिवस, गौतम ऋषी जयंती, श्रीकुंजबिहारी मेला टिहरी, सुरकण्डा देवी मेला-उ.काशी, झूलेलाल जयंती।
31.सोम-ब्रह्मचारिणी देवी दर्शन, मत्स्यावतार।

अप्रैल व्रत-त्यौहार

1.मंगल-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, श्रीगणेश दमनकोत्सव, सरहुल-बिहार, सौभाग्य सुन्दरी तीज व्रत, गणगौरी व्रत- राजस्थान।
2.बुध-श्रीरामराज्य महोत्सव, श्रीलक्ष्मी पंचमी।
3.गुरु-स्कन्द षष्ठी व्रत, सूर्यषष्ठी व्रत-बिहार।
4.शुक्र-अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रारम्भ रात 1:21 से।
5.शनि-महानिशा पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा रात्रि 12:5 तक, दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत, अशोकाष्टमी-बंगाल।
6.रवि-महानवमी व्रत, दुर्गानवमी, श्रीरामनवमी व्रत।
7.सोम- नवरात्र व्रत पारण, जवारे विसर्जन।
8.मंगल-कामदा एकादशी व्रत-सबका।
9.बुध-मदन द्वादशी, वामन द्वादशी।
10.गुरु-प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी-जैन।
12.शनि-स्नान-दान-व्रत की चैत्र पूर्णिमा।
13.रवि-वैशाख-स्नान-दान आरम्भ, अश्विनी-मेष संक्रांति रा.शे.5:29।
14.सोम-मेष-सतुआ संक्रांति पुण्य काल, खरमास समाप्त, बंगला नववर्ष वैशाख सं.1432 आरम्भ, वैशाखी पर्व, चण्डक पूजा।
16.बुध-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रा. 9:27।

ता.वार विवरण

20.रवि-भानु सप्तमी पर्व।
21.सोम-शीतलाष्टमी व्रत।
24.गुरु-वरूथिनी एकादशी व्रत-सबका।
25.शुक्र-प्रदोष व्रत।
26.शनि-मास शिवरात्रि, शिव चतुर्दशी व्रत।
27.रवि-स्नान दान श्राद्ध की अमावस्या, भरणी के सूर्य रात 9:45।
29. मंगल-चन्द्रदर्शन।
30.बुध-अक्षय तृतीया व्रत, मु.जिल्काद हि.1446।

अप्रैल जयन्ती

1.मंगल-मूर्ख दिवस, चित्रघंटा देवी दर्शन।
2.बुध-कुष्माण्डा देवी दर्शन, स्कन्द माता देवी दर्शन।
3.गुरु-कात्यायनी देवी दर्शन।
4.शुक्र-कालरात्रि देवी दर्शन।
5.शनि-महागौरी देवी दर्शन, मेला-बहुकोर्ट-ज.क., मेला-मनसा देवी-हरिद्वार।
6.रवि-सिद्धिदात्री देवी दर्शन, अयोध्या परिक्रमा, श्रीरामचरित मानस जयंती, स्वामी नारायण जयंती, साईं बाबा उत्सव प्रारम्भ, श्रीराज-राजेश्वरी मेला-तालतोली-गुप्तकाशी।
8.मंगल-विश्व बंजारा दिवस।
10.गुरु-महावीर जयंती-जैन।
12.शनि-हनुमान प्राकट्योत्सव, अग्रोहा मेला, धरती पूजा, खद्दी पर्व-छत्तीसगढ़, मेला-सालासर बालाजी महाराज।
14.सोम-अम्बेडकर जयंती।
17.गुरु-सती अनसूईया जयंती।
18.शुक्र-गुड फ्राइडे, गुरु तेग बहादुर जयंती।
19.शनि-इस्टर सटरडे, गुरु अर्जुनदेव जयंती।
20.रवि-इस्टर सण्डे।
23.बुध-बाबू कुँवर सिंह जयंती-बिहार।
24.गुरु-श्रीवल्लभाचार्य जयंती।
25.शुक्र-विश्व मलेरिया दिवस।
28.सोम-देव दामोदर तिथि-असम, महर्षि पराशर जयंती।
29.मंगल-परशुराम जयंती, छत्रपति शिवाजी जयंती-तिथि मत।
30.बुध-चन्दन यात्रा, चार धाम यात्रा।

मई व्रत-त्यौहार

1.गुरु-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
3.शनि-स्कन्द षष्ठी व्रत, चन्दन षष्ठी-बंगाल, गंगा सप्तमी, कमला सप्तमी।
4.रवि-भानुसप्तमी पर्व।
6.मंगल-सीता नवमी व्रत।
8.गुरु-मोहिनी एकादशी व्रत-सबका।
9.शुक्र-प्रदोष व्रत, रुक्मिणी द्वादशी, परशुराम द्वादशी।
11.रवि-श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत, कृत्तिका के सूर्य सायं 4:43।
12.सोम-स्नान-दान-व्रत की वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, गन्धेश्वरी पूजा-बंगाल, वैशाख व्रत-नियम समाप्त।
13.मंगल-ज्येष्ठ-बड़का मंगल।
14.बुध-वृष संक्रांति रात 3:52।
16.शुक्र-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रा.10:5।
20.मंगल-श्रीशीतलाष्टमी व्रत, त्रिलोचनाष्टमी-बं., ज्येष्ठ-बड़का मंगल।
23.शुक्र-अचला एकादशी व्रत-सबका, भद्रकाली ग्यारस-पंजाब, जलक्रीड़ा एकादशी-उड़ीसा।
24.शनि-शनि प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ-उ.भा., रोहिणी के सूर्य दिन 2:6।
25.रवि-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
26.सोम-श्राद्ध की अमावस्या, वटसावित्री व्रत-उ.भा., सावित्री अमावस्या-उड़ीसा।
27.मंगल-स्नान-दान की भौमवती अमावस्या, भउका अमावस्या, ज्येष्ठ-बड़का मंगल।
28.बुध-करवीर व्रत, चन्द्रदर्शन।
29.गुरु-रम्भा तीज व्रत, मु.म. जिलहिज हि.1446।
30.शुक्र-वैना.गणेश चतुर्थी व्रत, उमा चतुर्थी-बं.।

मई-जयन्ती

1.गुरु-श्रमिक दिवस, महाराष्ट्र-गुजरात स्थापना दिवस।
2.शुक्र-आद्य शंकराचार्य जयंती, संत सूरदास जयंती।
3.शनि-श्रीरामानुजाचार्य जयंती, प्रेस स्वतंत्रता दिवस।
5.सोम-बगलामुखी देवी प्राकट्योत्सव।
6.मंगल-श्रीजानकीजी प्राकट्योत्सव (वैष्णव मतानुसार)।
7.बुध-रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती।
8.गुरु-विश्व रेडक्रास दिवस।
11.रवि-श्रीनृसिंह प्राकट्योत्सव, छिन्नमस्ता देवी प्राकट्योत्सव, मातृ-दिवस (मदर्स-डे)।
12.सोम-बुद्ध जयंती, पुष्कर देवी प्राकट्योत्सव, कूर्म प्राकट्योत्सव, अग्रोहा मेला, अबार माता मेला।
14.बुध-देवर्षि नारद जयंती।
27.मंगल-शनिदेव प्राकट्योत्सव।
29.गुरु-महाराणा प्रताप जयंती।

ता.वार विवरण

30.शुक्र-गुरु अर्जुनदेव शहीद दिवस।
31.शनि-धूम्रपान निषेध दिवस।

जून व्रत-त्यौहार

1.रवि-श्रीस्कन्दषष्ठी व्रत, अरण्य षष्ठी, शीतला षष्ठी-उड़ीसा, जमाई षष्ठी-बंगाल।
3.मंगल-ज्येष्ठ-बड़का मंगल।
5.गुरु-गंगा दशहरा, श्रीरामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस।
6.शुक्र-भीमसेनी-निर्जला एकादशी व्रत-स्मार्त।
7.शनि-निर्जला एकादशी व्रत-वैष्णव।
8.रवि-प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारम्भ-द.भा. मृगशिरा के सूर्य दि.1:25।
10.मंगल-व्रत की पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत-द.भा., ज्येष्ठ-बड़का मंगल।
11.बुध-स्नान-दान की पूर्णिमा, जलयात्रा, गुरु अस्त पश्चिम में सायं 6:54।
14.शनि-सं.गणेश 4 व्रत चन्द्रोदय रात 9:36।
15.रवि-मिथुन सं. दिन 1:39, राजस संक्रान्ति।
19.गुरु-शीतलाष्टमी व्रत, इन्द्राणी पूजा, त्रिलोचन पूजा।
21.शनि-योगिनी एकादशी व्रत-स्मार्त।
22.रवि-योगिनी एकादशी व्रत-वैष्णव, आर्द्रा के सूर्य दिन 2:12।
23.सोम-सोमप्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
25.बुध-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या।
26.गुरु-गुप्त नवरात्रारम्भ, मनोरथ द्वितीया-बंगाल, चन्द्रदर्शन।
27.शुक्र-रथयात्रा, मु.नववर्ष मुहर्रम हि.1447 शुरू।
29.रवि-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।

जून जयन्ती

1.रवि-बाल सुरक्षा दिवस।
3.मंगल-धूमावती देवी प्राकट्योत्सव, मेला क्षीर भवानी-क.।
5.गुरु-श्रीबटुकभैरव प्राकट्योत्सव, विश्व पर्यावरण दिवस।
6.शुक्र-रुक्मिणी विवाह-उड़ीसा, गायत्री माता प्राकट्योत्सव, मेला-खाटू श्यामजी-राजस्थान, काशी विश्वेश्वर कलश यात्रा।
7.शनि-मु. बकरीद (ईद-उल-अजहा)।
11.बुध-संत कबीरदास जयंती।
12.गुरु- गुरु हरगोविन्द सिंह जयंती।
14.शनि-रक्तदान दिवस।
15-रवि-पिता दिवस।
21.शनि-देवराहा बाबा पुण्य तिथि, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस।
22.रवि-अम्बुवाची पर्व-श्रीकामाख्या देवी महोत्सव 3 दिनात्मक प्रारम्भ-असम।
26.गुरु-नशा निरोधक दिवस।
27.शुक्र-श्रीराम-बलराम रथोत्सव, मधुमेह दिवस (डायबीटिज-डे)।

जुलाई व्रत-त्यौहार

1.मंगल-स्कन्द-षष्ठी व्रत, कुमार षष्ठी व्रत।
3.गुरु-परशुरामाष्टमी-उड़ीसा, खर्ची पूजा-त्रिपुरा।
4.शुक्र-गुप्त नवरात्र समाप्त।
5.शनि-गिरिजा पूजा, पुनर्यात्रा-उल्टा रथ।
6.रवि-हरिशयनी एकादशी व्रत-सबका, रवि नारायण एकादशी-उड़ीसा, पुनर्वसु के सूर्य दि.3:47।
7.सोम- वामन द्वादशी, श्रीकृष्ण द्वादशी, चातुर्मास आरम्भ, गुरु उदय पूर्व में दिन 3:3।
8.मंगल-भौम प्रदोष व्रत।
9.बुध-चौमासी चौदस-जैन।
10.गुरु-स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा।
11.शुक्र-पार्थिव पूजन व काशी विश्वनाथ दर्शन पूजन आरम्भ, मैथिल नववर्ष आरम्भ।
12.शनि-अशून्य शयन व्रत।
14.सोम-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रा. 9:29, श्रावण सोमवार व्रत।
15.मंगल-नागपंचमी-बंगाल, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।
16.बुध-कर्क संक्रांति रा.शे.4:55।
17.गुरु-शीतला सप्तमी-उड़ीसा।
18.शुक्र-शीतलाष्टमी व्रत।
20.रवि-पुष्य के सूर्य सायं 5:13।
21.सोम-कामदा एकादशी व्रत-सबका, श्रावण सोमवार व्रत।
22.मंगल-भौम प्रदोष व्रत, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।
23.बुध-मास शिवरात्रि व्रत, शिवचतुर्दशी व्रत।
24.गुरु-स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या, हरियाली अमावस।
26.शनि-चन्द्रदर्शन।
27.रवि-हरियाली तीज व्रत, मधुश्रवा तीज व्रत, स्वर्ण गौरी व्रत, मु.सफर हिजरी 1447।
28.सोम-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, दुर्वा-गणपति व्रत, श्रावण सोमवार व्रत।
29.मंगल-नाग पंचमी, तक्षक पूजा, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।
30.बुध-लुण्ठन षष्ठी-बंगाल।

ता.वार विवरण

जुलाई जयन्ती

1.मंगल-डॉक्टर्स-डे।
4.शुक्र-मेला शरीक भगवती-कश्मीर।
6.रवि-मुहर्रम (ताजिया)।
8.मंगल-मेला ज्वालामुखी देवी कश्मीर।
10.गुरु-श्री साईं बाबा उत्सव-शिरडी, ओशो पूर्णिमा।
11.शुक्र-विश्व जनसंख्या दिवस।
23.बुध-बाल गंगाधर जयंती।
26.शनि-धर्मसम्राट् स्वामी करपात्रीजी जयंती।
27.रवि-ठकुराईन जयंती।
30.बुध-कल्कि अवतार।
31.गुरु-गो.तुलसीदास जयंती, मुन्शी प्रेमचन्द जयंती।

अगस्त व्रत-त्यौहार

3.रवि-श्लेषा के सूर्य सायं 5:34।
4.सोम-श्रावण सोमवार व्रत।
5.मंगल-पुत्रदा एकादशी व्रत-सबका, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।
6.बुध-प्रदोष व्रत, दामोदर द्वादशी।
7.गुरु-आखेटक त्रयोदशी-उड़ीसा।
8.शुक्र-व्रत की पूर्णिमा, नागोली पूर्णिमा।
9.शनि-स्नान-दान की पूर्णिमा, रक्षाबंधन, श्रावणी उपाकर्म।
10.रवि-अशून्य शयन व्रत।
11.सोम-रतजग्गा, कजलियाँ-मध्य प्रदेश।
12.मंगल-संकष्टी बहुला गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रा. 8:36, कजली तीज व्रत, सतुआ तीज, तिजड़ी-सिन्धी।
13.बुध-रक्षा पंचमी-उड़ीसा, कोकिला पंचमी, भातृभगिनी पंचमी।
14.गुरु-हलषष्ठी-ललही छठ व्रत, श्रीचन्द षष्ठी।
15.शुक्र-शीतला सप्तमी पूजा।
16.शनि-श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत-सबका, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)।
17.रवि-श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत (रोहिणी मत), मनसा पूजा समापन-बं., गुग्गा नवमी, मघा-सिंह संक्रांति सा.4:22।
19.मंगल-जया एकादशी व्रत-सबका।
20.बुध-प्रदोष व्रत।
21.गुरु-मास शिवरात्रि व्रत, शिवचतुर्दशी व्रत, अघोर चतुर्दशी।
22.शुक्र-श्राद्ध की अमावस्या, पिठौरी अमावस।
23.शनि-स्नान-दान की अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या।
24.रवि-चन्द्रदर्शन।
25.सोम-मु.रबिउल अव्वल हि.1447।
26.मंगल-हरितालिका तीज व्रत, ढेला चौथ-चन्द्रदर्शन निषेध (चन्द्रास्त रात 8:6)।
27.बुध-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, गणेशोत्सव प्रारंभ।
28.गुरु-ऋषि पंचमी व्रत, अरुन्धती सहित सप्तऋषि पूजन, रक्षा पंचमी-बंगाल।
29.शुक्र-सूर्य षष्ठी व्रत, लोलार्क कुण्ड स्नान पर्व, भदैनी-वाराणसी।
30.शनि-मुक्ताभरण संतान सप्तमी व्रत, अपराजिता सप्तमी।
31.रवि-महालक्ष्मी व्रतारम्भ च.उ.रा.10:21, सोरहिया मेला-16 दिन प्रारम्भ। महारविवार व्रत, राधाष्टमी व्रत, दुर्गाष्टमी व्रत, पू.फा. के सूर्य दिन 1:2।

अगस्त जयन्ती

1.शुक्र-मेला-नैनादेवी-चिन्तापूर्णी देवी-हि.प्र., लोकमान्य तिलक पुण्य तिथि।
3.रवि-मैथिलीशरण गुप्त जयंती।
4.सोम-झूलन यात्रा आरम्भ।
8.शुक्र-हयग्रीव प्राकट्योत्सव, झूलन यात्रा समाप्त।
9.शनि-युवक दिवस, संस्कृत दिवस, अमरनाथ यात्रा।
11.सोम-बिष्यांचल-भीमचण्डी देवी प्राकट्योत्सव, विशालाक्षी देवी यात्रा।
14.गुरु-मु.पर्व चेहल्लुम, माधवदेव तिथि-असम।
15.शुक्र-स्वतन्त्रता दिवस।
19.मंगल- विश्व छायांकन दिवस।
20.बुध-सद्भावना दिवस, विश्व मच्छर दिवस, मु.पर्व आखिरी चहार शम्बा।
23.शनि-मु.शहादते इमाम हसन।
25.सोम-वाराह प्राकट्योत्सव, शंकर देव तिथि-असम।
28.गुरु-मेला पाट प्रातः 3 दिन।
30.शनि-भारतेन्दु जयंती।

सितम्बर व्रत-त्यौहार

1.सोम-महानन्दा नवमी।
2.मंगल-दशावतार व्रत।
3.बुध-पद्मा-कर्मा एकादशी व्रत-सबका, डोल ग्यारस, जलझूलनी एकादशी-राजस्थान।
4.गुरु-वामन द्वादशी व्रत, श्रवण द्वादशी।
5.शुक्र-प्रदोष व्रत।

शेष अक्टूबर के पृष्ठ पर

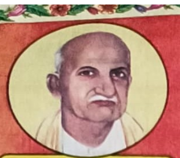

ठाकुर प्रसाद

रूपेश पंचाङ्ग

अगस्त 8

2025 AUGUST

विक्रम संवत् 2082	श्रीशालिवाहन शाके 1947	फसली सन् 1432	इस्लामी हिजरी सन 1447	बंगला संवत् 1432	नेपाली संवत् 1145
श्रावण शुक्ल 8 से भाद्रपद शुक्ल 8 तक। ता. 10 से भाद्रपद मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय श्रावण 10 से भाद्रपद 9 तक। ता. 23 से भाद्रपद मास प्रारम्भ।	प्र. सावन 22 से प्र. भादों 22 तक। ता. 10 से प्र. भादों मास प्रारम्भ।	सफर 6 से रबिउल अव्वल 7 तक। ता. 25 से रबिउल अव्वल माह शुरू।	श्रावण 16 से भाद्रपद 14 तक। ता. 18 से भाद्रपद मास प्रारम्भ।	श्रावण 16 गते से भाद्रपद 15 गते तक। ता. 17 से भाद्रपद मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			31		
16			योग		

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	31

भद्रा-विचार

ता.1 सायं 4:56 तक।
ता.4 रात 10:40 से ता.5 दिन 11:28 तक।
ता.8 दिन 1:41 से रात 1:32 तक।
ता.11 रात 10:38 से ता.12 दिन 9:52 तक।
ता.14 रात 3:25 से ता.15 दिन 2:11 तक।
ता.18 प्रातः 6:58 से सायं 5:50 तक।
ता. 21 दिन 12:36 से रात 12:6 तक।
ता.26 रात 1:23 से ता.27 दिन 2:6 तक।
ता.30 रात 7:58 से ता.31 दिन 8:56 तक।

तेजी-मंदी

सोना-चाँदी, लोहा, ताँबा, रुई वस्त्र, गुड़-शक्कर, केराना की वस्तुएँ, फल-फूल में तेजी का रुख रहेगा।

रवि SUN

31 — भाद्रपद शुक्ल अष्टमी रात 9:53 तक; भद्रा; मु.7 बंग.14; रा.9 नै. श्रावण 15 गते; वृश्चिक चं. अनुराधा दिन 3:55 तक

3 — श्रावण शुक्ल नवमी प्रातः 7:58 तक; मु.8 बंग.18; रा.12 नै. श्रावण 18 गते; वृश्चिक चं. विशाखा प्रातः 6:10 तक

10 — भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा दिन 12:38 तक; मु.15 बंग.25; रा.19 नै. श्रावण 25 गते; कुम्भ चं. धनिष्ठा दिन 3:20 तक

17 — भाद्रपद कृष्ण नवमी रात 8:6 तक; मु.22 बंग.32; सिंह संक्रान्ति; श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (उदया रोहिणी मत); रा.26 नै. भाद्र. 1 गते; वृष चं. कृत्तिका प्रातः 6:28 तक, रोहिणी रा.शे. 4:50 तक

24 — भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा दिन 11:6 तक; मु.29 बंग.7; चन्द्रदर्शन; रा.2 नै. भाद्र. 8 गते; सिंह चं. पू.फा. रात 2:30 तक

सोम MON

मूल विचार

ता.4 को ज्येष्ठा दिन 8:39 से ता.6 को मूल दिन 12:44 तक।
ता.13 को रेवती दिन 12:45से ता.15 को अश्विनी दिन 9:43 तक।
ता.21 को श्लेषा रात 11:2 से ता.23 को मघा रात 1:30 तक।
ता.31 को ज्येष्ठा दिन 3:55 से।

4 — श्रावण शुक्ल दशमी दिन 9:52 तक; भद्रा; मु.9 बंग.19; रा.13 नै. श्रावण 19 गते; वृश्चिक चं. अनुराधा दिन 8:39 तक

11 — भाद्रपद कृष्ण द्वितीया दिन 11:26 तक; भद्रा; मु.16 बंग.26; रा.20 नै. श्रावण 26 गते; कुम्भ चं. शतभिषा दिन 2:48 तक

18 — भाद्रपद कृष्ण दशमी सायं 5:50 तक; भद्रा; मु.23 बंग.1; रा.27 नै. भाद्र. 2 गते; मिथुन चं. रात 4:8 से, मृगशिरा रात 3:26 तक

25 — भाद्रपद शुक्ल द्वितीया दिन 11:39 तक; मु.1 बंग.8; रा.3 नै. भाद्र. 9 गते; कन्या चं. दिन 8:53 से, उ.फा. रात 4:0 तक

मं TUE

सूर्य नक्षत्र

ता.3 को श्लेषा सायं 5:34 से।
ता.17 को मघा व सिंह राशि सायं 4:22 से।
ता.31 को पू.फा. दिन 1:2 से।

5 — श्रावण शुक्ल एकादशी दिन 11:28 तक; भद्रा; मु.10 बंग.20; एकादशी व्रत; रा.14 नै. श्रावण 20 गते; धनु चं. दिन 10:53 से, ज्येष्ठा दिन 10:53 तक

12 — भाद्रपद कृष्ण तृतीया दिन 9:51 तक; भद्रा; मु.17 बंग.27

गणेश चतुर्थी व्रत; रा.21 नै. श्रावण 27 गते; मीन चं. दिन 8:11 से, पू.भा. दिन 1:58 तक

19 — भाद्रपद कृष्ण एकादशी दिन 3:46 तक; मु.24 बंग.2; एकादशी व्रत; रा.28 नै. भाद्र. 3 गते; मिथुन चं. आर्द्रा रात 2:17 तक

26 — भाद्रपद शुक्ल तृतीया दिन 12:39 तक; भद्रा; मु.2 बंग.9; रा.4 नै. भाद्र. 10 गते; कन्या चं. हस्त समस्त

बु WED

पंचक विचार

ता.9 को रात 3:23 से ता.14 को दिन 11:20 तक।

6 — श्रावण शुक्ल द्वादशी दिन 12:41 तक; मु.11 बंग.21; प्रदोष व्रत; रा.15 नै. श्रावण 21 गते; धनु चं. मूल दिन 12:44 तक

13 — भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी प्रातः 7:55 तक; मु.18 बंग.28; रा.22 नै. श्रावण 28 गते; मीन चं. उ.भा. दिन 12:45 तक

20 — भाद्रपद कृष्ण द्वादशी दिन 2:2 तक; मु.25 बंग.3; प्रदोष व्रत; रा.29 नै. भाद्र. 4 गते; कर्क चं. रात 7:42 से, पुनर्वसु रात 1:30 तक

27 — भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी दिन 2:6 तक; भद्रा; मु.3 बंग.10

गणेशोत्सव; रा.5 नै. भाद्र. 11 गते; तुला चं. रात 7:4 से, हस्त प्रातः 5:56 तक

गु THU

7 — श्रावण शुक्ल त्रयोदशी दिन 1:28 तक; मु.12 बंग.22; रा.16 नै. श्रावण 22 गते; मकर चं. रात 8:23 से, पू.षा. दिन 2:9 तक

14 — भाद्रपद कृ. पंचमी प्रातः 5:45 तक, षष्ठी रात 3:25 तक; भद्रा; मु.19 बंग.29; रा.23 नै. श्रावण 29 गते; मेष चं. दिन 11:20 से, रेवती दिन 11:20 तक

21 — भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी दिन 12:36 तक; भद्रा; मु.26 बंग.4; रा.30 नै. भाद्र. 5 गते; कर्क चं. पुष्य रात 1:2 तक

28 — भाद्रपद शुक्ल पंचमी दिन 3:54 तक; मु.4 बंग.11; रा.6 नै. भाद्र. 12 गते; तुला चं. चित्रा दिन 8:13 तक

शु FRI

1 — श्रावण शुक्ल अष्टमी समस्त; भद्रा; मुस्लिम 6 बंगला 16; राष्ट्रीय 10 नै. श्रावण 16 गते; तुला चं. स्वाती रात 3:31 तक

8 — श्रावण शुक्ल चतुर्दशी दिन 1:41 तक; भद्रा; मु.13 बंग.23; पूर्णिमा; रा.17 नै. श्रावण 23 गते; मकर चं. उ.षा. दिन 3:2 तक

15 — भाद्रपद कृष्ण सप्तमी रात 12:58 तक; भद्रा; मु.20 बंग.30

स्वतन्त्रता दिवस; रा.24 नै. श्रावण 30 गते; मेष चं. अश्विनी दिन 9:43 तक

22 — भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी दिन 11:37 तक; मु.27 बंग.5; अमावस्या; रा.31 नै. भाद्र. 6 गते; सिंह चं. रात 1:2 से, श्लेषा रात 1:2 तक

29 — भाद्रपद शुक्ल षष्ठी सायं 5:54 तक; मु.5 बंग.12; रा.7 नै. भाद्र. 13 गते; तुला चं. स्वाती दिन 10:45 तक

श SAT

2 — श्रावण शुक्ल अष्टमी प्रातः 5:57 तक; मु.7 बंग.17; रा.11 नै. श्रावण 17 गते; वृश्चिक चं. रात 11:31 से, विशाखा समस्त

9 — श्रावण शुक्ल पूर्णिमा दिन 1:23 तक; मु.14 बंग.24; पूर्णिमा

रक्षा बन्धन; रा.18 नै. श्रावण 24 गते; कुम्भ चं. रात 3:23 से, श्रवण दिन 3:26 तक

16 — भाद्रपद कृष्ण अष्टमी रात 10:29 तक; मु.21 बंग.31

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी; रा.25 नै. श्रावण 31 गते; वृष चं. दिन 1:39 से, भरणी दिन 8:4 तक

23 — भाद्रपद कृष्ण अमावस्या दिन 11:7 तक; मु.28 बंग.6; अमावस्या; रा.1 नै. भाद्र. 7 गते; सिंह चं. मघा रात 1:30 तक

30 — भाद्रपद शुक्ल सप्तमी रात 7:57 तक; भद्रा; मु.6 बंग.13; रा.8 नै. भाद्रपद 14 गते; वृश्चिक चं. प्रातः 6:43 से, विशाखा दिन 1:22 तक

तारीख	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
सूर्योदय	5:24	25	25	26	26	27	28	28	29	29	30	31	31	32	32	33	34	34	35	36	36	37	38	38	39	40	40	41	42	42	43
सूर्यास्त	6:36	35	35	34	34	33	32	32	31	31	30	29	29	28	28	27	26	26	25	24	24	23	22	22	21	20	20	19	18	18	17

व्रत-त्यौहार

3.रवि-श्लेषा के सूर्य सायं 5:34।
4.सोम-श्रावण सोमवार व्रत।
5.मंगल-पुत्रदा एकादशी व्रत-सबका, भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।
6.बुध-प्रदोष व्रत।
8.शुक्र-व्रत की पूर्णिमा।
9.शनि-स्नान-दान की पूर्णिमा, रक्षा बंधन, श्रावणी उपाकर्म।
11.सोम-कजरी, विंध्याचल-सीमचण्डी देवी प्राकट्योत्सव।
12.मंगल-कजली तीज व्रत, सं. बहुला गणेश चतुर्थी व्रत, च.उ. रात 8:36।
14.गुरु-हलषष्ठी-ललही छठ व्रत, पु.पर्व चेहल्लुम।
15.शुक्र-स्वतन्त्रता दिवस।
16.शनि-श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत-सबका, गोकुलाष्टमी।
17.रवि-श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत-उ. रोहिणी मत, सिंह संक्रां. सा.4:22।
19.मंगल-जया एकादशी व्रत-सबका।
20.बुध-प्रदोष व्रत, पु.पर्व आखरी चहार शम्बा।
21.गुरु-मास शिवरात्रि व्रत, अघोर चतुर्दशी।
22.शुक्र-श्राद्ध की अमावस्या।
23.शनि-स्नान-दान की अमाव., कुशोत्पाटिनी अमावस्या।
24.रवि-चन्द्रदर्शन।
25.सोम-वाराह प्राकट्योत्सव।
26.मंगल-हरितालिका तीज व्रत, ढेला चौथ-चन्द्रदर्शन निषेध।
27.बुध-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, गणेशोत्सव प्रारंभ।
28.गुरु-ऋषि पंचमी व्रत।
29.शुक्र-सूर्य षष्ठी व्रत, लोलार्क कुण्ड स्नान पर्व, भदैनी-वाराणसी।
30.शनि-मुक्ताभरण संतान सप्तमी।
31.रवि-लक्ष्मी व्रतारंभ, सोरहिया मेला-16 दिन प्रारंभ, राधाष्टमी व्रत, महारविवार व्रत, पू.फा. के सूर्य दिन 1:2।

विस्तृत पर्व-त्योहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

मेष- मानसिक कष्ट सम्भव है, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, धन लाभ होगा।
वृष- भूमि तथा सम्पत्ति से लाभ होगा, व्यापार में बाधा की सम्भावना है।
मिथुन- विद्यार्थियों को कष्ट सम्भव है, धन एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
कर्क- महिला वर्ग पर मानसिक दबाव होगा, स्वास्थ्य में सुधार होगा।।
सिंह- शीघ्रता में लिया गया निर्णय हानिकारक होगा, नौकरी पेशा हेतु मास उत्तम है।
कन्या- न्यायालय कार्य में सफलता मिलेगी, रोग-शोक की स्थिति बन सकती है।
तुला- भूमि-भवन-वाहन का सुख मिलेगा, घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।
वृश्चिक- नौकरी में स्थानान्तरण संभव है, शरीर में रोग से कष्ट होगा।
धनु- व्यावसायिक क्षेत्र में बाधा आयेगी, किसी नवीन व्यवसाय का योग बनेगा।
मकर- पूरा मास मध्यम फल कारक है, रोजी-रोटी रोजगार में मंदी रहेगी।
कुम्भ- आर्थिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी, दाम्पत्य जीवन में मतभेद सम्भव है।
मीन- रक्त विकार से कष्ट होगा, विद्यार्थियों को परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

आकाशी-लक्षण

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, भाद्रपद में खण्ड वृष्टि होने के संकेत हैं, उ. प्र. बिहार, गुजरात, राजस्थान, म. प्र., आन्ध्र प्रदेश में तेज वायु के साथ वर्षा का योग है।

जुलाई-2025

रवि			13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3		17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

अपने व अपने परिवार के सभी अनिष्ट ग्रहों की शांति के लिए व मनोकामना की पूर्ति हेतु अपने परिवार के सदस्यों व कुछ मित्रों के साथ अपनी कुल देवी या देवता का स्मरण करते हुए पाँच बार 'ॐ नमः शिवाय' बोलते हुए- आम, आँवला, नीम, अमरुद व अन्य वृक्ष 1, 5, 11, 21 पेड़ घर के बाहर, कालोनी में रोड के किनारे अथवा हाइवे पर लगाने से अनिष्ट ग्रहों की शांति एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

सितम्बर-2025

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15		29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10		24	
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

PARALYSIS

कालातिल

लहसुन

पैरालाइसिस के लिए घरेलू उपचार

विस्तृत रोग + दवा दिसम्बर के पीछे देखें।

बैगन

मूली

किसी एक्सपर्ट की राय से ही व्यायाम करें।

संवत्सर का फल-सन् 2025 ई.

स जयति सिन्दुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम्॥

नूतन वर्ष आरम्भ होने पर घर को पवित्र करके कलश-स्थापन तथा ध्वजारोहण करना चाहिए तथा विद्वान् ब्राह्मण को बुलाकर उसका उचित पूजन कर पंचांग-फल सुनना चाहिए। इससे गंगास्नान एवं सूर्यग्रहण समान फल प्राप्त होता है। इस दिन नीम की मुलायम पत्ती व फल, जीरा, काली मिर्च, हींग, नमक पीसकर खाने से वर्षभर शरीर निरोग रहता है।

वर्षफल सन् 2025 ई.

वर्तमान वर्ष में सृष्टयाब्द 1955885126 वर्ष गत होकर कृतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग गत होकर कलियुग का 5126 वर्ष गत होकर भोग्यादि 426874 वर्ष शेष रह जायेगा। श्री विक्रमादित्य संवत् 2082 वर्ष, शालिवाहन शाके का 1947 वर्ष गत हो जायेगा।

वर्ष के आरम्भ से 29 मार्च सन् 2025, संवत् 2081 तक 'पिंगल' नामक संवत्सर तथा 30 मार्च सन् 2025 ई. संवत् 2082 से वार्हस्पत्य मान से 60 संवत्सरों में 52वाँ संवत्सर 'कालयुक्त' नामक संवत्सर का प्रवेश होगा।

मेषादि गतमासादि 1/18/40/20/12 गत होकर 10/11/19/39/48 से "सिद्धार्थ" नामक संवत्सर का प्रवेश होगा, परन्तु वर्षभर "कालयुक्त" नामक संवत्सर का ही संकल्पादि में प्रयोग होगा।

संवत् 2082 शक 1947 में वर्तमान वर्ष के राजा-सूर्य, मंत्री-सूर्य, सस्येश-बुध, धान्येश-भौम, मेघेश- सूर्य, रसेश-शुक्र, नीरसेश-बुध, फलेश-शनि, धनेश-बुध, दुर्गेश-सूर्य। इस संवत्सर में ये दस ग्रहमंत्री भूमण्डल पर शासन करेंगे।

विंशोपक फल-सं.2082 सन् 2025 ई.

अग्निदैवत युग वर्ष नाम 'कार्तिक' मेघ नाम-संवर्त, रोहिणी निवास संधि में (समुद्र तट), समय-निवास, वाणिक गृह (बनिया घर), समय विश्वा-12, समय वाहन-अश्व (घोड़ा), स्तंभ 3 (जल-तृण-वायु), सोमवती अमावस्या (शून्य), सोमवती पंचमी एक, अंगारकी चतुर्थी एक, भानु सप्तमी-2, बुधाष्टमी (शून्य), रवि दशमी-एक समय मुहूर्त-360, समय दिन-355, तिथिक्षय-15, तिथिवृद्धि-10, उत्पत्तिविश्वा 11, खपतविश्वा-13, वर्षा विश्वा-11, धान्य-11, तृण-5, शीत-13, तेज-17, वायु-13, वृद्धि-15, क्षय-15, विग्रह-11, ऐक्य-111, शनि दृष्टि-उत्तर, सत्य-आधा, धर्म-डेढ़, पाप-18, ग्रहण-1 (चन्द्रग्रहण)।

संवत्सर फल

कालयुक्त संवत्सर फल—शासकों में मतभेद तथा युद्ध होगा तथा रोगों में वृद्धि तथा अतिवृष्टि से कष्ट होगा।

सिद्धार्थ फल—उत्तम वर्षा, फसल का उत्पादन उत्तम, शासक प्रसन्न रहें।

दस अधिकारी फल

1. **राजा सूर्य**—अल्प वर्षा तथा अन्न व फल का उत्पादन कम होता है। गायें अल्प दूध देती हैं। जनता को पीड़ा, चोर तथा अग्नि का भय होता है। राजाओं का मरण होता है।

2. **मंत्री सूर्य**—जनता में रोग तथा चोरों से भय होगा। राजभय होगा। पृथ्वी पर प्रचुर अन्न का उत्पादन होगा, रस पदार्थ सस्ते होंगे।

3. **सस्येश बुध**—मेघ अधिक वर्षा कारक, देश में सुख समृद्धि, उपद्रव रहित, द्विज लोग शांति पूर्वक भक्ति में तत्पर रहेंगे।

4. **रसेश शुक्र**—उत्तम वृष्टि से जनता प्रसन्न, सुख समृद्धि तथा शासकों में जन सेवा हेतु तत्परता होगी।

5. **नीरसेश बुध**—चित्रित वस्त्र, शंख तथा चन्दन का मूल्य महँगा होगा।

6. **मेघेश सूर्य**—मेघ अल्पवर्षा करक होंगे। स्वल्प अन्न का उत्पादन होगा तथा संसार में भय व्याप्त होगा।

7. **धान्येश भौम**—गेहूँ, सरसो, मूँग, तिल, उरद तथा मूँगा के भावों में वृद्धि होगी।

8. **दुर्गेश सूर्य**—शासन द्वारा नीति सम्पन्न व्यवहार, निर्भीकता, यात्री का भय रहित यात्रा, सुव्यस्थित शासन होता है।

9. **धनेश बुध**—विविध वस्तुओं का लोगों द्वारा संग्रह लाभपद रहेगा। विप्रवर्ग जप, यज्ञ में तल्लीन होंगे, कृषि पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

10. **फलेश शनि**—फल, पुष्प तथा वृक्षों के लिये कलह, मनुष्यों तथा चोरों से द्विजाति को कष्ट, जनपदों में जन समूह व्याकुल रहेगा।

11. **रोहिणी निवास**—समुद्र में महावृष्टि।

12. **संवत्सर निवास**—मालाकार गृह में फल-समर्घता।

13. **समयवाहन गज फल**—सुभिक्ष, सुख, वर्षाकाल में उत्तम वर्षा होती है।

14. **नवमेघ नील नामक संवसर फल**—शीघ्र वर्षा होवे।

15. **द्वादश मेघ हेममाली फल**—महावृष्टि।

16. **वृष्टि प्रमाण**—100। पर्वत 50, समुद्र-25, भूमि 12।।

आर्द्रा प्रवेश—आषाढ़ कृष्ण।

तिथि 12 फल—शुभ।

रविवार फल—पशुनाश।

भरणी नक्षत्र फल—अशुभ।

सुकर्मा योग फल—धर्म आचरण।

दिवा बेला फल—सस्य कृषि नाशक।

प्रभवादि द्विगुणमित्यादि के अनुसार शेष (3) फल मध्यम। त्रिघ्न संवत्सर इत्यादि अनुसार शेष (0) फल रौरव। द्विघ्नसंवत्सर इत्यादि अनुसार शेष (3) फल मध्यम। शक से शेष (1) फल सुभिक्ष। सर्वसंक्रान्ति मुहूर्तों का योग (330) तथा चन्द्रदर्शन (360)। अतः इस वर्ष सुभिक्ष कारक है। अष्टोत्तरी आययोग (99), व्यययोग (93)। अतः विन्ध्य से दक्षिणनिवासियों को सुख होगें। विंशोत्तरी आययोग (123), व्यययोग (75)। अतः विन्ध्य से उत्तर निवासी सुखी होंगे।

मासफल-तेजी-मंदी

जनवरी

पश्चिम राष्ट्रों में युद्धादि भय रहेगा। यवन तथा मुस्लिम राष्ट्रों में मँहगाई से जनता को कष्ट होगा। कहीं पदत्याग तथा राजनैतिक हत्याकाण्ड की घटना घटित होगी। किसी मुस्लिम राष्ट्र के प्रधान नेता के समक्ष विषम परिस्थितियाँ प्रगट होंगी। आरोपों के साथ मानहानि होगी। लोकहित में कार्य होंगे। सरकारी कोष तथा उद्योग धन्धों में वृद्धि होगी। सूचना प्रसारण तथा प्रकाशन हेतु मास कष्टकारी है। पशुओं को रोग होंगे। ज्वरादि का प्रकोप होगा। उत्तर पश्चिम भाग में जन उपद्रव व अग्निकांड से क्षति संभव है। विपक्षी प्रबल होंगे।

तेजी मंदी—तिल, मूंगफली, अलसी, सरसों तथा तेलों में तेजी। शेयरों में अस्थिरता पश्चात तेजी आयेगी। रसायनिक पदार्थों में मंदी, चावल, गेहूँ, चना, मूँग, मोठ, मिर्च, मसालों तथा ऊनी वस्त्र और सोना-चाँदी में तेजी रहेगी।

फरवरी

धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं, चिकित्सालयों तथा सार्वजनिक उपक्रमों के संचालन में धन की कमी होगी। बन्दी सुधार गृहों में अराजकता होगी। कर्मचारियों द्वारा हड़ताल व आन्दोलन होंगे। किसी विशिष्ट व्यक्ति का निधन संभव है। राष्ट्रविरोधी षडयंत्रकारी कार्य होंगे। बजट जन अपेक्षा अनुरूप नहीं होगा। अपराधिक घटनायें बढ़ेंगी। यान दुर्घटना संभव है। उत्तरी पूर्वी प्रान्तों तथा सूदूर पूर्वी प्रान्तों में कानून व्यवस्था की हानि होगी।

तेजी मंदी—चीनी, गुड़, शक्कर, मोठ, चावल के भावों में अस्थिरता। मेवादि, सोना-चाँदी, रुई, कपास तथा रसायनिक पदार्थ तथा मशीनरी में तेजी आयेगी। शेयरों में मंदी। प्लास्टिक तथा स्टील, ताँबा, पीतल, जस्ता में तेजी रहेगी।

मार्च

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रगति होगी। दक्षिणी गोलार्ध के देशों में अग्निकाण्ड से क्षति। कुछ राष्ट्र रोग अथवा महामारी से प्रभावित होंगे। विश्व में विनाशकारी शस्त्रों का भय होगा। उत्पादन में वृद्धि होगी। देश में आरोग्यता रहेगी। श्रमिकों तथा कर्मचारियों की समस्या का समाधान होगा। पश्चिमोत्तर भाग में राजनैतिक अस्थिरता तथा हिंसा होगी। चक्रवात का प्रकोप होगा। वाहन दुर्घटना तथा साम्प्रदायिक तनाव होंगे। अपराध तथा उपद्रवों की अधिकता होगी। मुस्लिम राष्ट्रों में मानवाधिकारों का उल्लंघन होगा।

तेजी मंदी—मूंग, मोठ, दलहन, अनाजों में मंदी कारक है। गेहूँ, चावल, जौ, ज्वार, सरसों, मूँगफली व तिल आदि तेलों के भावों में अस्थिरता रहेगी। नशीले पदार्थ, रसायनिक पदार्थ व शेयरों में तेजी आयेगी। वाहन, मशीनरी तेज होंगे। मेवादि, किराना में तेजी होगी।

अप्रैल

महँगाई से जन-साधारण में असन्तोष, कहीं भयंकर भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा से जनधन की हानि होगी। सू. बु. शु. श. रा. का पंचग्रही योग है। इस योग से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कहीं भयंकर युद्ध की संभावना, कहीं भयंकर बाढ़ की स्थिति बन सकती है। किन्हीं दो देशों में तनाव से अमेरिका आदि देश राजनीतिक लाभ उठायेंगे। तूफान चक्रवात से भयंकर हानि हो सकती है।

तेजी मंदी—शेयर बाजार, सोना, चाँदी, कागज व्यवसाय में आश्चर्यजनक तेजी होगी। लोहे व कलपुर्जों के सामान में तेजी रहेगी। मूँग, मोठ, चना, दालवाना तेज, मूंगफली, सरसो, सोयाबीन व अरण्ड के तेलों में उछाल की तेजी आयेगी। किराना सामान, ताँबा, पीतल, स्टील सामान तेज होंगे।

मई

पक्षांरभ में चार ग्रहों का योग चीन, जापान, रूस, तिब्बत आदि में भूकम्प, प्राकृतिक प्रकोप से धन हानि, दक्षिणी प्रान्तों में वाहन, यान दुर्दघटना होगी। राहु, मंगल का षडाष्टक योग से मुस्लिम राष्ट्रों के प्रमुख शासकों को विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

तेजी मंदी—चन्द्र दर्शन से मूँग, मोठ, गेहूँ, जौ, चावल में तेजी रहकर मंदी आयेगी। मूँगफली, सोयाबीन व वेजीटेबल में तेजी आयेगी। रुई, कपास आदि में मंदी, शेयर बाजार में अस्थिरता होकर गिरावट आयेगी। लोहा, सोना, ताँबा, चाँदी में मंदी का रुख रहेगा। रबड़, प्लास्टिक के सामान में तेजी आयेगी। वारदाना, मेवा सामान किसमिस, बादाम, काजू, अखरोट आदि तेज होंगे। ईंधन, पेट्रोल, डीजल, गैस आदि के प्रति शासकीय दल चिन्तित रहेगा।

जून

वाद-विवाद व हंगामों का वातावरण बार-बार होगा। जिससे विकास में रुकावटें आयेंगी। राहु गुरु का नव पंचक योग से एवं शनि मंगल का षडाष्टक योग से यूरोपीय देशों के सामने जटिल समस्यायें आयेंगी। आपसी विराधी विचारधारा के कारण वीटो अधिकार योग करने से विवश होंगे। पाकिस्तान में आतंकवादी भस्मासुर पाक में ही बगावत का कारण बनेगा। राजनीतिक हत्या काण्ड होंगे। सेना शासन में सक्रिय रहेगी। भारत में नयी-नयी योजना बनेगी, जिससे महँगाई में कमी आयेगी।

तेजी मंदी—गेहूँ, जौ, चना, चावल, ज्वार, गुवार, मूँग, मोठ में तेजी रहेगी। चीनी आदि रस पदार्थों में मंदी होगी। लोहा सामान, चाय-काफी, अफीम, तम्बाकू, रेशमी वस्त्र में तेजी आयेगी। चावल, चना, बाजरा, जौ, ज्वार में मंदी होगी। घी सभी तेल तथा गुड़, चीनी, शक्कर आदि रस पदार्थ उत्तरार्ध में तेज होंगे। मसूर, अरहर में तेजी आयेगी। चाँदी, सोना, ताँबा धातु में मामूली गिरावट आयेगी।

जुलाई

चीन, बंगलादेश, पाकिस्तान की गतिविधि पर ध्यान देना होगा। सीमाओं पर अतिक्रमण हो सकता है। मंगल शनि का षडाष्टक से भीषण दुर्घटना से जन धन की हानि होगी। अमेरिका, केनेडा, ब्रिटेन, स्पेन, इटली आदि देशों में मुद्रा अवमूल्यन के कारण आर्थिक मन्दी का वातावरण रहेगा। सूर्य राहु का षडाष्टक योग से भारत में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ संघर्ष पूर्ण होंगी।

तेजी मंदी—सरसो, चना, जौ, ज्वार में मंदी रहेगी। गुड़, शक्कर, चीनी, रुई, कपास के वस्त्रों में तेजी होगी। रसायनिक पदार्थ, ताँबा, सोना व चाँदी में तेजी होगी। शेयर बाजार में उछाल की तेजी होगी। गेहूँ, चना, मूँग ,मोठ में मंदी रहेगी। मासान्त में चावल, जौ, ज्वार आदि धान्य भावों में गिरावट आयेगी। चना, सरसों, मूंगफली तथा पीली वस्तु सोना, पीतल धातु में तेजी होगी।

अगस्त

पूर्वी राष्ट्रों में वर्मा, भूटान, चीन, जापान में भूकम्प बार-बार होगा। उत्तरी प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाओं से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। शनि, मंगल का सम सप्तम योग से अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईराक, ईरान में आर्थिक तंगी एवं राजनैतिक उथल पुथल होगी। अमेरिका सहायता कर सकता है। मंगल राहु का नवम पंचम योग से उत्तर कोरिया के साथ दक्षिण कोरिया में युद्ध की स्थिति बन सकती है। अफगानिस्तान में सिया सुन्नी टकराव खतरा बनकर उभरेगा।

तेजी मंदी—चन्द्र दर्शन से सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, गुड़, शक्कर, चीनी, रुई वस्त्र महँगे होंगे। गेहूँ, मूँग, मोठ, चावल, चना में घटाबढ़ी चलेगी। सोयाबीन, मूंगफली व तुरई के तेलों में तेजी होगी। शेयर भावों में घटाबढ़ी होकर मंदी होगी। शनिवारी अमावस्या से उत्तरार्ध में सोना-चाँदी, ताँबा, स्टील और लोहा के सामान में तेजी का संचार होगा।

सितम्बर

केन्द्र स्थल व उत्तर प्रदेश, बिहार के क्षेत्रों में जनता में क्रोध की स्थिति बढ़कर तोड़फोड़, अग्नि काण्ड से हानि होगी। थोड़े समय के लिये चार ग्रहों का योग बनने से चीन, जापान, वियतनाम, रूस, तिब्बत, वर्मा आदि में भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि होगी। गुरु राहु का नव पंचम योग से छत्तीसगढ़, जम्बू काश्मीर आदि प्रान्तों में उग्रवादी ग्रुपों द्वारा भारी जन-धन की हानि होगी। बिहार में राजनीति गर्म रहेगी।

तेजी मंदी—शेयर बाजार, केमिकल सामान और प्लास्टिक सामान, रुई, सूत, कपास, वारदाना में तेजी रहेगी। चाँदी, सोना में झटके की तेजी बनेगी। मूंगफली सरसो, अरण्ड के तेलों में तेजी होगी। गेहूँ, जौ, चावल, ज्वार में मंदी रहेगी। कन्या के सूर्य से सोना, चाँदी, मूंग, मोठ, ज्वार, मक्का में मंदी आयेगी।

अक्टूबर

शनि, मंगल का षडाष्टक से अरब, ईरान, ईराक तथा पाकिस्तान राष्ट्रों में शासकों में आपसी मतान्तर बनकर विग्रह बढ़ेगा। संवेदनशील क्षेत्रों में तथा अशान्त सीमा प्रान्तों में सैन्यबल से संघर्ष होगा। कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में भयंकर युद्ध की स्थिति बनेगी। जनता स्थानान्तरण के लिये विवश होगी। नीचस्थ शुक्र सूर्य का द्विर्द्वादश योग प्राकृतिक प्रकोप से धन हानि होगी।

तेजी मंदी—गेहूँ, जौ, चावल, चना, मूंग, मोठ, बाजरा के भावों में घटाबढ़ी होगी। गुड़, चीनी, शक्कर में तेजी का वातावरण बनेगा। उत्तरार्ध में सरसो, सोयाबीन, मूंगफली, एरण्ड व वनस्पति घी तथा शेयर बाजार में उछाल आयेगा।

नवम्बर

विपक्षी नेता देश की प्रगति पथ पर बाधक बनेंगे। गोचर स्थिति के अनुसार पाकिस्तान व अन्य मुस्लिम देश पूर्वोत्तर भारत में इस्लामीकरण की मनोवृत्ति को प्रेरित करके उपद्रव करा सकते हैं। असम, त्रिपुरा की तरफ विशेष ध्यान दें। मेघालय, मणिपुर आदि बंगला देशी बहुल प्रदेश पश्चिमोत्तर बिहार के सीमा में वातावरण अशान्त होगा।

तेजी मंदी—चना, सरसो, अलसी, सोयाबीन, सूत, कपास, रुई, बिनौला में मंदी होगी। शेयर बाजार, गुड़, चीनी, शक्कर, घी में घटाबढ़ी होकर मंदी होगी। मशीनरी सामान व रेशमी वस्त्र, ईंधन, तेल, पेट्रोल, घास, चारा में तेजी का रुख रहेगा। मासान्त में सोना, चाँदी, पीतल, ताँबा तेज होंगे।

दिसम्बर

इस मास में पाँच शुक्र एवं शनि मिश्रित फल देंगे। उत्तरी प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा आ सकती है। पूर्वी राष्ट्र वर्मा भूटान जापान में भूकम्प आ सकता है। जिससे जन जीवन अस्त व्यस्त होगा। शनि गुरु एवं मंगल गुरु का नवम पंचम योग देश में जटिल समस्याओं को उत्पन्न करेगा। ब्रिटेन, स्कॉटलैण्ड, जापान, रुस आदि में भारी परिवर्तन संभव है। यूरोप में किसी विशिष्ट प्रशासक व्यक्ति विशेष की मृत्यु व हत्या से शोक व्याप्त होगा। मंगल पर शनि की दृष्टि से अग्नि काण्ड से हानि, कहीं विस्फोट व यान दुर्घटना से जन-धन की हानि का समाचार मिलेगा। इस समय फारस की खाड़ी में तनाव बढ़ सकता है।

तेजी मंदी—चन्द्र दर्शन से रसायनिक पदार्थ शेयर बाजार और वाहनादि मशीनरी सामान तेज होंगे। बादाम, काजू, किसमिस, अखरोट, कालीमिर्च आदि किराना में सामान में उछाल आयेगा। चना, सरसो, मूंगफली तथा पीली धातु, सोना-चाँदी, पीतल एवं पीली वस्तु में तेजी आयेगी। उत्तरार्ध में शेयर बाजार में गिरावट आयेगी, गेहूँ,चावल, मूंग, मोठ, गुड, शक्कर में गिरावट होगी।

नं. 1 विन्ध्योत्तर निवासियों के लिए विंशोत्तरी मत से लाभ-खर्च

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृश्चि.	ध.	म.	कु.	मी.	योग
लाभ	14	8	14	8	11	14	8	14	11	5	5	11	123
खर्च	11	5	2	14	11	2	5	11	2	5	5	2	75

नं. 2 विन्ध्य से दक्षिण निवासियों के लिए अष्टोत्तरी मत से लाभ-खर्च

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृश्चि.	ध.	म.	कु.	मी.	योग
लाभ	2	11	14	8	11	14	11	2	5	8	8	5	99
खर्च	14	5	2	2	11	2	5	14	5	14	14	5	93

लाभ-खर्च देखने की विधि—जिस राशि का फल देखना हो उस राशि के कोष्टक का लाभ तथा खर्च अंकों को जोड़कर, उसमें एक घटाकर आठ (8) का भाग देने पर जो शेष बचे उसका फल इस प्रकार है—

यदि 1 शेष बचे तो लाभ, 2 शेष हो तो सौख्य, 3 शेष हो तो क्लेश, 4 शेष हो तो रोग, 5 शेष हो तो लोकापवाद, 6 शेष हो तो सम्मान, 7 शेष हो तो विजय, 8 या 0 शून्य शेष हो तो हानिकारक होगा।

मतान्तर से—दोनों चक्रों का लाभ संख्या जोड़कर लाभ तथा दोनों के व्यय को जोड़कर व्यय समझना चाहिए। यदि लाभ योग अधिक हो तो शुभ तथा व्यय संख्या अधिक हो तो अशुभ समझना चाहिए।

रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

पंचांग पर अपना नाम छपवाकर बाँटने वाले इच्छुक (100 प्रति से अधिक) कीटि, क्लब, संस्था व व्यापारिक वर्ग प्रकाशक से सम्पर्क करें 07233013544, उन्हें पंचांग उचित मूल्य पर दिया जायेगा।

कचौड़ीगली, वाराणसी, फोन नं. : 0542-2392543, 2392471

विक्रम संवत् 2082	श्रीशालिवाहन शाके 1947	फसली सन् 1432-33	इस्लामी हिजरी सन् 1447	बंगला संवत् 1432	नेपाली संवत् 1145
भाद्रपद शुक्ल 9 से आश्विन शुक्ल 8 तक। ता. 8 से आश्विन मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय भाद्रपद 10 से आश्विन 8 तक। ता. 23 से आश्विन मास प्रारम्भ।	प्र. भादों 23 से प्र. असोज 23 तक। ता. 8 नववर्ष प्र. असोज सन् 1433 प्रारम्भ।	रबिउल अव्वल 8 से रबि उस्सानी 7 तक। ता. 24 से रबि उस्सानी माह शुरू।	भाद्रपद 15 से आश्विन 13 तक। ता. 18 से आश्विन मास प्रारम्भ।	भाद्रपद 16 गते से आश्विन 14 गते तक। ता. 17 से आश्विन मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			योग		
16					

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	

भद्रा-विचार

ता.3 दिन 1:13 से रात 1:38 तक।
ता.6 रात 12:57 से ता.7 दिन 12:23 तक।
ता.10 प्रातः 7:19 से सायं 6:14 तक।
ता.13 दिन 11:4 से रात 9:52 तक।
ता.16 दिन 3:32 से रात 2:40 तक।
ता.19 रात 11:46 से ता.20 दि.11:47 तक।
ता.25 सायं 5:38 से ता.26 रात 6:40 तक।
ता.29 दिन 12:26 से रात 1:4 तक।

तेजी-मंदी

रस पदार्थों में मंदी तथा जौ, चना, मटर-सरसों, सोना-चाँदी, लोहा, खाद्य-पदार्थ, घी-तेल, बिनौला महँगे होंगे। कपास-सूती वस्त्र में मन्दी रहेगी।

रवि SUN

7 — भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा रात 11:48 तक; भद्रा; मु. 14 बंग. 21; ता. 16 ने. भाद्रपद 22 गते; पूर्णिमा; कुम्भ चं. शतभिषा रात 10:46 तक

14 — आश्विन कृष्ण सप्तमी दिन 8:41 तक; मु. 21 बंग. 28; ता. 23 ने. भाद्र. 29 गते; जीउतिया व्रत; मिथुन चं. रात 12:15 से, रोहिणी दिन 12:58 तक

21 — आश्विन कृष्ण अमावस्या रात 12:18 तक; मु. 28 बंग. 4; ता. 30 ने. आश्विन 5 गते; स्नान-दान की अमावस्या; कन्या चं. सायं 4:18 से, पू.फा. दिन 9:56 तक

28 — आश्विन शुक्ल षष्ठी दिन 10:43 तक; मु. 5 बंग. 11; ता. 6 ने. आश्विन 12 गते; धनु चं. रात 1:24 से, ज्येष्ठा रात 1:24 तक

सो MON

1 — भाद्रपद शुक्ल नवमी रात 11:33 तक; मुस्लिम 8 बंगला 15; राष्ट्रीय 10 नेपाली भाद्र. 16 गते; धनु चं. सायं 6:13 से, ज्येष्ठा सायं 6:13 तक

8 — आश्विन कृष्ण प्रतिपदा रात 10:15 तक; मु. 15 बंग. 22; ता. 17 ने. भाद्र. 23 गते; मीन चं. सायं 4:12 से, पू.भा. रात 10:0 तक

15 — आश्विन कृ. अष्टमी प्रातः 6:26 तक, नवमी रा.शे. 4:24 तक; मु. 22 बंग. 29; ता. 24 ने. भाद्र. 30 गते; मिथुन चं. मृगशिरा दिन 11:32 तक

22 — आश्विन शुक्ल प्रतिपदा रात 1:18 तक; मु. 29 बंग. 5; ता. 31 ने. आश्विन 6 गते

शारदीय नवरात्र आरंभ; कन्या चं. उ.फा. दिन 11:20 तक

29 — आश्विन शुक्ल सप्तमी दिन 12:26 तक; भद्रा; मु. 6 बंग. 12; ता. 7 ने. आश्विन 13 गते; धनु चं. मूल रात 3:28 तक

मं TUE

2 — भाद्रपद शुक्ल दशमी रात 12:49 तक; मु. 9 बंग. 16; ता. 11 ने. भाद्र. 17 गते; धनु चं. मूल रात 8:10 तक

9 — आश्विन कृष्ण द्वितीया रात 8:21 तक; मु. 16 बंग. 23; ता. 18 ने. भाद्र. 24 गते; मीन चं. उ.भा. रात 8:51 तक

16 — आश्विन कृष्ण दशमी रात 2:40 तक; भद्रा; मु. 23 बंग. 30; ता. 25 ने. भाद्र. 31 गते; कर्क चं. रात 3:39 से, आर्द्रा दिन 10:19 तक

23 — आश्विन शुक्ल द्वितीया रात 2:48 तक; मु. 30 बंग. 6; ता. 1 ने. आश्विन 7 गते; चन्द्रदर्शन; तुला चं. रात 2:16 से, हस्त दिन 1:10 तक

30 — आश्विन शुक्ल अष्टमी दिन 1:44 तक; मु. 7 बंग. 13; ता. 8 ने. आश्विन 14 गते; धनु चं. पू.षा. रात 5:5 तक

बु WED

3 — भाद्रपद शुक्ल एकादशी रात 1:38 तक; भद्रा; मु. 10 बंग. 17; ता. 12 ने. भाद्र. 18 गते; एकादशी व्रत; मकर चं. रात 3:56 से, पू.षा. रात 9:41 तक

10 — आश्विन कृष्ण तृतीया सायं 6:14 तक; भद्रा; मु. 17 बंग. 24; ता. 19 ने. भाद्र. 25 गते

सं. गणेश चतुर्थी व्रत; मेष चं. रात 7:28 से, रेवती रात 7:28 तक

17 — आश्विन कृष्ण एकादशी रात 1:15 तक; मु. 24 बंग. 31; ता. 26 ने. आश्विन 1 गते

कन्या संक्रान्ति; विश्वकर्मा पूजा; एकादशी व्रत; कर्क चं. पुनर्वसु दिन 9:25 तक

24 — आश्विन शुक्ल तृतीया रात 4:36 तक; मु. 1 बंग. 7; ता. 2 ने. आश्विन 8 गते; तुला चं. चित्रा दिन 3:22 तक

गु THU

4 — भाद्रपद शुक्ल द्वादशी रात 1:55 तक; मु. 11 बंग. 18; ता. 13 ने. भाद्र. 19 गते; मकर चं. उ.षा. रात 10:42 तक

11 — आश्विन कृष्ण चतुर्थी दिन 3:56 तक; मु. 18 बंग. 25; ता. 20 ने. भाद्र. 26 गते; मेष चं. अश्विनी सायं 5:54 तक

18 — आश्विन कृष्ण द्वादशी रात 12:16 तक; मु. 25 बंग. 1; ता. 27 ने. आश्विन 2 गते; कर्क चं. पुष्य दिन 8:52 तक

25 — आश्विन शुक्ल चतुर्थी समस्त; भद्रा; मु. 2 बंग. 8; ता. 3 ने. आश्विन 9 गते; तुला चं. स्वाती सायं 5:51 तक

शु FRI

5 — भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी रात 1:41 तक; मु. 12 बंग. 19; ता. 14 ने. भाद्रपद 20 गते; प्रदोष व्रत; मकर चं. श्रवण रात 11:12 तक

12 — आश्विन कृष्ण पंचमी दिन 1:31 तक; मु. 19 बंग. 26; ता. 21 ने. भाद्र. 27 गते; वृष चं. रात 9:50 से, भरणी सायं 4:15 तक

19 — आश्विन कृष्ण त्रयोदशी रात 11:46 तक; भद्रा; मु. 26 बंग. 2; ता. 28 ने. आश्विन 3 गते; प्रदोष व्रत; सिंह चं. दिन 8:45 से, श्लेषा दिन 8:45 तक

26 — आश्विन शुक्ल चतुर्थी प्रातः 6:40 तक; भद्रा; मु. 3 बंग. 9; ता. 4 ने. आश्विन 10 गते; वृश्चिक चं.दिन 1:50 से, विशाखा रात 8:28 तक

श SAT

6 — भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी रात 12:57 तक; भद्रा; मु. 13 बंग. 20; ता. 15 ने. भाद्र. 21 गते; कुम्भ चं. दिन 11:13 से, धनिष्ठा रात 11:13 तक

13 — आश्विन कृष्ण षष्ठी दिन 11:4 तक; भद्रा; मु. 20 बंग. 27; ता. 22 ने. भाद्र. 28 गते; वृष चं. कृत्तिका दिन 2:34 तक

20 — आश्विन कृष्ण चतुर्दशी रात 11:46 तक; भद्रा; मु. 27 बंग. 3; ता. 29 ने. आश्विन 4 गते; सिंह चं. मघा दिन 9:6 तक

27 — आश्विन शुक्ल पंचमी दिन 8:45 तक; मु. 4 बंग. 10; ता. 5 ने. आश्विन 11 गते; वृश्चिक चं. अनुराधा रात 11:3 तक

मूल विचार

मासारम्भ से ता.2 को मूल रात 8:10 तक।
ता.9 को रेवती रात 8:51 से ता.11 को अश्विनी सायं 5:54 तक।
ता.18 को श्लेषा दिन 8:52 से ता.20 को मघा दिन 9:6 तक।
ता.27 को ज्येष्ठा रात 11:3 से ता.29 को मूल रात 3:28 तक।

सूर्य नक्षत्र

ता.14 को उ.फा. प्रातः 7:13 से।
ता.17 को कन्या राशि सायं 5:19 से।
ता.27 को हस्त रात 10:36 से।

पंचक विचार

ता.6 को दिन 11:13 से ता.10 को रात्रि 7:28 तक।

तारीख :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
सूर्योदय :	5:44	45	45	46	47	47	48	49	49	50	51	52	52	53	54	55	55	56	57	58	58	59	6:0	6:0	6:1	2	3	3	4	5
सूर्यास्त :	6:16	15	15	14	13	13	12	11	11	10	9	8	8	7	6	5	5	4	3	2	2	1	6:0	5:0	5:59	58	57	57	56	55

व्रत-त्यौहार

3.बुध-पद्मा-कर्मा एकादशी व्रत, डोल ग्यारस।
4.गुरु-वामन द्वादशी व्रत, श्री वामन प्राकट्योत्सव।
5.शुक्र-प्रदोष व्रत, शिक्षक दिवस, मु.पर्व बारावफात।
6.शनि-अनन्त चतुर्दशी व्रत, गणपति विसर्जन।
7.रवि-स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण।
8.सोम-महालया-पितृपक्ष आरंभ।
10.बुध-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 7:47, मु. पर्व ईदे मिलाद।
14.रवि-जीवित्पुत्रिका-जीउतिया व्रत, महालक्ष्मी व्रत, उ.फा. के सूर्य प्रातः 7:13।
15.सोम-मातृ नवमी, मातामह श्राद्ध, जीउतिया व्रत पारण।
17.बुध-इन्दिरा एकादशी व्रत-सबका, विश्वकर्मा पूजा, कन्या संक्रांति सायं 5:19।
19.शुक्र-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत।
21.रवि-स्नान-दान-श्राद्ध अमावस्या, पितृ-विसर्जन, महालया समाप्त।
22.सोम-शारदीय नवरात्र आरं., कलश स्थापन, महाराज अग्रसेन जयंती।
23.मंगल-चन्द्रदर्शन।
25.गुरु-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
27.शनि-हस्त के सूर्य रात 10:36।
29.सोम-महानिशा पूजा, सरस्वती आवाहन, अन्नपूर्णा परिक्रमा दिन 12:25 से।
30.मंगल-महाष्टमी व्रत, अन्नपूर्णा परिक्रमा दिन 1:44 तक, बैक लेखा बंदी।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

मेष- वित्तीय लेन देन से सतर्क रहें, भ्रम की स्थिति बनेगी, स्त्री वर्ग को कष्ट होगा।
वृष- स्वजनों से विवाद सम्भव है, पारिवारिक सुख में बाधा होगी।
मिथुन-पुत्र जन्म की सम्भावना है, व्यवसाय में उन्नति के साधन मिलेंगे।
कर्क- यश प्रतिष्ठा बढ़गी, आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी, स्वजनों से कष्ट होगा।
सिंह- मित्र वर्ग से सहयोग मिलेगा, सहयोगी से मतभेद सम्भव है।
कन्या- विपरीत परिस्थितियों के बावजूद स्थिरता रहेगी, शत्रु, रोग दोनों परास्त होंगे।
तुला- स्वास्थ्य में सुधार होगा, आप की बौद्धिक क्षमता बढ़ जायेगी।
वृश्चिक-गुरुवार का व्रत करें, शनि की शान्ति हेतु उपाय करें।
धनु- मासारम्भ में थोड़ी परेशानी रहेगी, कोई उल्लेखनीय कार्य का योग है।
मकर- नौकरी में पदोन्नति, व्यवसाय से लाभ, घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।
कुम्भ- वाहन अथवा सड़क दुर्घटना में शारीरिक कष्ट की सम्भावना है।
मीन- महिला वर्ग को कष्ट होगा, वाहन भूमि मकानादि के क्रय-विक्रय का योग है।

आकाशी-लक्षण

पूर्वी-पश्चिमी भागों में अच्छी वर्षा होगी। दक्षिण व पश्चिम के क्षेत्रों में आंधी-तूफान के साथ वर्षा होने की सम्भावना है। मासान्त में तेज धूप, उमस भरी गर्मी पड़ेगी।

अगस्त-2025

रवि	31	3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8		22	29
शनि	2			23	30

अपने व अपने परिवार के सभी अनिष्ट ग्रहों की शांति के लिए व मनोकामना की पूर्ति हेतु अपने परिवार के सदस्यों व कुछ मित्रों के साथ अपनी कुल देवी या देवता का स्मरण करते हुए पाँच बार **'ॐ नमः शिवाय'** बोलते हुए- आम, आँवला, नीम, अमरुद व अन्य वृक्ष 1, 5, 11, 21 पेड़ घर के बाहर, कालोनी में रोड के किनारे अथवा हाइवे पर लगाने से अनिष्ट ग्रहों की शांति एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

अक्टूबर-2025

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13		
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु		9	16	23	30
शुक्र	3		17	24	31
शनि	4	11	18	25	

करौंदा

नींबू

अमरख

सभी प्रकार के खट्टे फल तथा ठण्डई ← **स्त्री रोग के लिए घरेलू उपचार** → ठण्डई की सामग्री →

विस्तृत रोग + दवा दिसम्बर के पीछे देखें।

विवाह मुहूर्त एवं विविध मुहूर्त-सन् 2025 ई.

ता. दिन नक्षत्र

विवाह मुहूर्त

जनवरी

16.गुरु-माघ कृष्ण 3 दिन 2:23 मृत्युबाण बाद मघा रे.8 ल.4 (सायं 5:8 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि. 13 (7वाँ सूर्यदान)।

17.शुक्र-माघ कृष्ण 4 दिन 1:3 तक मघा रे.8 दिन ल.11 (दि. 8:18 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि. 10 (7वाँ चंद्रदान) या दिन ल.1 (दि. 11:17 से) इष्ट 5 ग्र.व. वि.10

18.शनि-माघ कृष्ण 5 दिन 2:56 से उ.फा. केतुयुति।

19.रवि-माघ कृष्ण 5 उ.फा. में पूर्व-दोष सायं 5:10 से हस्त राहुवेध।

20.सोम-माघ कृष्ण 6 हस्त पूर्वदोष।

21.मंगल-माघ कृष्ण 7 रात 10:16 से स्वाती में शनिवेध।

22.बुध-माघ कृष्ण 8 स्वाती में पूर्व-दोष।

23.गुरु-माघ कृष्ण 9 रात 3:12 से अनुराधा रे.6 रात्रि में पाँच लग्न का अभाव है।

24.शुक्र-माघ कृष्ण 10 दिन 10:22 मृत्युबाण पूर्व अनुराधा रे.6 दिन ल.11 (प्रातः 7:49 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.10 ।

26.रवि-माघ कृष्ण 12 दशी में रात 7:3 तक मूल में भौमवेध।

फरवरी

1.शनि-माघ शुक्ल 3 रा.शे.5:12 से उ.भा. में राहुयुति।

2.रवि-माघ शुक्ल 4 उ.भा. में पूर्व-दोष। रा.3:39 से रेवती में केतुवेध।

3.सोम-माघ शुक्ल 5 रेवती में पूर्वदोष।

6.गुरु-माघ शुक्ल 9 रात 9:13 से रोहिणी में रे. 9 रात्रि में पाँच लग्न का अभाव है।

7.शुक्र-माघ शुक्ल 10 सायं 5:44 वैधृति पूर्व रोहिणी में रे.9 दिन ल.12 (दि.8:22 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि. 15।। (12वाँ शनि अशुभ) या दिन ल.1 (दि.9:50 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि. 14।। या ल.4 (दि.3:37 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.13 (7वाँ सूर्य दान)।

8.शनि-माघ शुक्ल 11 दि.3:9 वैधृति बाद सा. 6:59 तक मृगशिरा में रे.8 ल.गोधूलि (सूर्यास्त) या ल.5 (सा. 5:50 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि. 16।। (7वाँ शनि दान)।

12.बुध-माघ शुक्ल 15 रात 7:10 से मघा में सूर्य वेध है चन्द्र से अभुक्त होने से अशुभ है।

13.गुरु-फाल्गुन कृष्ण 1 मघा सूर्यवेध है चन्द्र से अभुक्त होने से अशुभ है।

14.शुक्र-फाल्गुन कृष्ण 2 रात 10:10 से उ.फा. में केतुयुति।

15.शनि-फाल्गुन कृष्ण 3 उ.फा. में केतुयुति। रात 12:20 से हस्त में राहुवेध।

16.रवि-फाल्गुन कृष्ण 4 हस्त में राहुवेध।

17.सोम-फाल्गुन कृष्ण 5 रा.शे. 5:22 से स्वती में शनिवेध।

18.मंगल-फाल्गुन कृष्ण 6 स्वाती में पूर्वदोष।

19.बुध-फाल्गुन कृष्ण 7 भौम स्वाती में पूर्वदोष।

20.गुरु-फाल्गुन कृष्ण 7 दिन 10:22 से अनुराधा में रे.9 दिन ल.1 (दिन 10:22 से) 6 इष्ट ग्र.व. वि.13 (8वाँ चंद्रदान) या दिन ल.4 (दिन 2:44 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि. 11।। (8वाँ बुध दान) या ल. गोधूलि (सूर्यास्त) या ल.9 (रात 2:2 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.12 (7वाँ भौम अशुभ) या ल.10 (रा.शे.4:8 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.13(3स्थ शुक्र अशुभ)।

21.शुक्र-फाल्गुन कृष्ण 8 दिन 12:30 तक अनुराधा रे.9 दिन ल.1 (दिन 8:54 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.13 (8वाँ चंद्र दान)।

22.शनि-फाल्गुन कृष्ण 9 दिन 2:12 से मूल भौमवेध।

23.रवि-फा. कृ.10 मूल में पूर्वदोष।

24.सोम-फाल्गुन कृष्ण 11 सायं 4:10 से उ.षा. में व्यतिपात है।

25.मंगल-फा. कृ.12 दिन 10:5 तक द्वादशी उ.षा. में रे.9 दिन ल.1 (दिन 8:39 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.13।

मार्च

1.शनि-फाल्गुन शुक्ल 2 दिन 1:13 से उ.भा. में राहुयुति।

2.रवि-फा. शु.3 उ.भा. में पूर्वदोष। दि.11:44 से रेवती में केतुवेध।

3.सोम-फाल्गुन शुक्ल 4 रेवती में पूर्वदोष।

6.गुरु-फाल्गुन शुक्ल 7 रोहिणी में रे.9 दिन ल.1 (दिन 8:5 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.16 या दिन ल.4 (दिन 1:52 से) इष्ट 7 ग्र.व.वि.18 या ल.गोधूलि (सूर्यास्त) या ल.9 (रात 1:10 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.12 (7वाँ भौम अशुभ)। रात 3:57 से मृग. में रे.7 रात्रि में पाँच लग्न का अभाव है।

7.शुक्र-फाल्गुन शुक्ल 8 रात 2:54 तक मृगशिरा में रे.7 दिन ल.1 (दिन 8:1 से) इष्ट 7 ग्र.व.वि.16 या दिन ल.4 (दिन 1:48 से) इष्ट 7 ग्र.व.वि. 18 या ल.गोधूलि (सूर्यास्त) या ल.9 (रात 1:6 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.12 (7 वाँ भौम अशुभ)।

11.मंगल-फाल्गुन शुक्ल 12 रात 2:43 से मघा में रे.10 रात्रि में पाँच लग्न का अभाव है।

12.बुध-फाल्गुन शुक्ल 13 रात 9:21 मृत्युबाण पूर्व मघा में रे.10 दिन ल.1(प्रा.7:42 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि. 11 या दिन में ल.4 (दिन 1:29 से) इष्ट 7 ग्र.व.वि.18।। या ल.गोधूलि (सूर्यास्त)।

13.गुरु-फाल्गुन शुक्ल 14 रा.शे. 5:30 से उ.फा. में केतुयुति।

14.शुक्र-फाल्गुन शुक्ल 15 उ.फा. पूर्वदोष। पश्चात खरमास प्रारंभ है।

अप्रैल

14.सोम-वैशाख कृष्ण 1 स्वाती में प्रातः 6:0 से मृत्युबाण है।

15.मंगल-वैशाख कृष्ण 2 अनुराधा में मृत्युबाण दोष है।

16.बुध-वैशाख कृष्ण 3 रात 10:3 व्यतिपात बाद अनुराधा में रे.9 ल.10 (रात 12:46 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि. 13।। (7वां भौमदान)।

18.शुक्र-वैशाख कृष्ण 5 मूल में भौमवेध है चन्द्रमा से अभुक्त होने से अशुभ है।

19.शनि-वैशा.कृ.6 मूल में पूर्व दोष है।

20.रवि-वैशाख कृष्ण 7 प्रातः 7:26 से उ.षा. में रे.8 दिन ल.2 (प्रा.7:26 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.10 (8 चन्द्र अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्ति काल) या ल.11 (रा.2:17 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.13।।।

21.सोम-वैशाख कृष्ण 8 (प्रातः 7:52 तक) उ.षा. में रे.7 दिन ल.2 (प्रातः 6:54 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि. 10।

25.शुक्र-वैशाख कृष्ण 12 दिन 7:56 तक उ.भा. में मृत्युबाण है।

29.मंगल-वैशाख शुक्ल 2 रोहिणी में रे.10 ल.11 (रात 1:43 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.13।।।

30.बुध-वैशाख शुक्ल 3 रोहिणी में रे.10 दिवा ल.2 (प्रातः 6:18 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.10 (लग्न चंद्र का दान) या ल.4 (दिन 10:28 से) इष्ट 6 ग्र.व. वि.15 या ल. गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या रात 8:2 से मृगशिरा में रे.9 ल.11 (रा.1:39 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि. 13।।।

मई

1.गुरु-वैशाख शुक्ल 4 मृगशिरा में रे.10 दिवा ल.2 (प्रातः 6:14 से दिन 8:10 तक) इष्ट 6 ग्र.व. वि.16 या ल.4 (दिन 10:24 से) इष्ट 5 ग्र.व. वि. 12 या ल.गोधूलि (सूर्यास्त काल)।

5.सोम-वैशाख शुक्ल 8 सायं 5:55 से मघा में रे.8 ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.11 (रात 1:21 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.13।।।

6 मंगल-वैशाख शुक्ल 9 मघा में रे.8 दिन ल.2 (प्रातः 5:56 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.9।। या दिन ल.4 (दिन 10:6 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.13।। या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल)।

7.बुध-वैशाख शुक्ल 10 उ.फा. में केतुयुति।

8.गुरु-वैशाख शुक्ल 11 हस्त में रे.6 ल.11 (रात 1:9 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि. 13।। (8वां चंद्र अशुभ)।

9.शुक्र-वैशाख शुक्ल 12 हस्त रे.6 दिन ल.2 (प्रातः 5:45 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.9।। या दिन ल.5 (दि. 12:13 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.12 (8वां शुक्र दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त-काल) या ल.8 (सायं 6:56 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.14 (8वां गुरुदान)।

10.शनि-वैशाख शुक्ल 13 स्वाती में रे.8 व्यतीपात है तथा पाँच लग्न का अभाव है।

11.रवि-वैशाख शुक्ल 14 रा.शे. 4:41 व्यतीपात बाद स्वाती में रे.8 पाँच लग्न का अभाव है।

12.सोम-वैशाख शुक्ल 15 प्रातः 5:37 तक स्वाती में रे.8 पाँच लग्न का अभाव है।

13.मंगल-ज्येष्ठ कृष्ण 1 दिन 8:10 से अनुराधा में सूर्य वेध है किन्तु चन्द्रमा से अभुक्त होने से अशुभ है।

14.बुध-ज्ये.कृ.2 अनुराधा में पूर्व दोष।

15.गुरु-ज्येष्ठ कृष्ण 3 दिन 12:29 से मूल भौम से युक्त किन्तु चंद्रमा से अभुक्त होने से अशुभ है। पुनः रात 7:53 से रा.शे.4:51 मृत्युबाण पूर्व मूल में रे.9 ल.8 (रात 7:53 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.13।। (7 सूर्यदान) या ल.11 (रात 12:44 से) इष्ट 6 ग्र.व. वि.15।

16.शुक्र-ज्येष्ठ कृष्ण 4 मूल में मृत्युबाण है।

17.शनि-ज्येष्ठ कृष्ण 5 मृत्युबाण के बाद दिन 3:6 से उ.षा. में रे.9 ल.7 (सायं 4:9 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.14।। (10वाँ भौम अशुभ) या लग्न गोधूलि (सूर्यास्त काल) ल. 9 (रा. 8:42 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.14 (8वाँ भौम अशुभ) या ल.12 (रात 2:6 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.17।

18.रवि-ज्येष्ठ कृष्ण 6 उ.षा. में दि.3:40 तक रे.8 दिन में पंचेष्ट लग्न का अभाव है।

22. गुरु-ज्येष्ठ कृष्ण 10 उ.भा. में वि.1:29 से रे.7 ल. गोधूलि या ल. 10 (रात 10:27 से) इष्ट 5 ग्र.व. वि.13 (7वां भौम दान) या ल.12 (रात 1:45 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.12 (लग्न चंद्रदान)।

23.शुक्र-ज्येष्ठ कृष्ण 11 दि.12:6 तक उ.भा. में रे.7 दिन ल.2 (प्रातः 6:45 तक) इष्ट 6 ग्र.व. वि.15 दिन 12:6 से रेवती में केतुवेध है।

24.शनि-ज्ये.कृ.12 रेवती में पूर्वदोष।

28.बुध-ज्येष्ठ शुक्ल 1 मृगशिरा में सूर्य योग्य है।

जून

1.रवि-ज्येष्ठ शुक्ल 6 रात 1:41 से मघा में भौम योग्य है।

2.सोम-ज्येष्ठ शुक्ल 7 मघा में पूर्वदोष।

4.बुध-ज्येष्ठ शु. 9 उ.फा. में केतुयुति।

5.गुरु-ज्येष्ठ शुक्ल 10 उ.फा. में पूर्व दोष। प्रातः 5:41 से दि.11:29 व्यतीपात पूर्व हस्त में रे.8 दिन ल.4 (दिन 8:7 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.14 या ल.5 (दिन 10:25 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.13।। (लग्नस्थ केतुदान)।

6.शुक्र-ज्येष्ठ शुक्ल 11 हस्त में व्यतिपात दोष है।

7.शनि-ज्येष्ठ शुक्ल 12 दिन 10:21 से स्वाती में रे.8 दिन ल.5 (दिन 10:21 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.13।। (लग्नस्थ केतुदान)। या ल.6 (दिन 12:31 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.13 (7वां शनिदान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त-काल) या ल.9 (रात 7:17 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.14 (8वां भौम अशुभ) या ल.10 (रात 9:23 से) इष्ट 5 ग्र. व.वि.10 (7वां भौमदान) या ल.12 (रात 12:41 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.12 (8वां चंद्र अशुभ)।

8.रवि-ज्येष्ठ शुक्ल 12 दिन 12:58 तक स्वाती में रे.7 ल.5 (दिन 10:13 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.13।। (7वाँ राहुदान) या ल.6 (दिन 12:27 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.15 (7वाँ शनिदान)। आगे शुक्रास्त दोष है।

नवम्बर

21.शुक्र-मार्गशीर्ष शुक्ल 1 अनुराधा में सूर्ययुति।

22.शनि-मार्गशीर्ष शुक्ल 2 दिन 3:48 से मूल में रे.10 ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.3 (सायं 6:57 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.13।। (7वां चन्द्र अशुभ) या ल.4 (रात 9:11 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.10 (6ठाँ चन्द्र अशुभ)। या ल.6 (रात 1:43 से) इष्ट 7 ग्र.व. वि.15 या ल.7 (रात 3:56 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि 14।

23.रवि-मार्गशीर्ष शुक्ल 3 सायं 6:1 तक मूल में रे.8 ल.10 (दिन 10:34 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.10।। (7वां गुरु दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त काल)।

24.सोम-मार्गशीर्ष शु. 4 रात 7:51 से उ.षा. में रे.7 ल. गोधूलि (सूर्यास्त-काल) या ल.3 (सायं 6:49 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि. 13।। (7वां चन्द्र अशुभ) या ल.4 (रात 9:3 से) इष्ट 5 ग्र. व.वि.10 (6ठां चन्द्र अशुभ) या ल.6 (रात 1:35 से) इष्ट 7 ग्र.व. वि.15।

25.मंगल-मार्गशीर्ष शु.5 रात 9:15 तक उ.षा. में रे.7 ल.9 (दिन 8:20 से) इष्ट 5 ग्र.व. वि.12।। (8वां गुरुदान) या ल.10 (दिन 10:26 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.10।। (लग्नस्थ चन्द्र दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त काल) या ल.3 (रात 6:45 से) इष्ट 5 ग्र.व. वि.13।। (8वां चन्द्र अशुभ)।

26.शनि-मार्गशीर्ष शुक्ल 9 रात 9:50 से उ.भा. में रे.7 ल.4 (रात 8:42 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि. 10 या (7वाँ चन्द्र अशुभ) या ल.6 (रात 1:14 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि. 15 (3रा शुक्र अशुभ)।

30.रवि-मार्गशीर्ष शुक्ल 10 उ.भा. रे.8ल.10 (दिन 10:4 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.15।। (7वां गुरु दान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त काल) या ल.3 (सायं 6:23 से) इष्ट 5 ग्र. व.वि. 13।। (6ठाँ शुक्र अशुभ) या ल.4 (सायं 8:37 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.10 या रात 1:16 व्यतीपात पूर्व रेवती में रे.9 ल.6 (रात 1:9 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.15 (3रे शुक्र अशुभ)।

दिसम्बर

1.सोम-मार्गशीर्ष शुक्ल 11 रेवती में व्यतिपात दोष है।

4.गुरु-मार्गशीर्ष शुक्ल 14 दिन 3:2 से रोहिणी में रे.8 ल.1 (दिन 2:34 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.14।। (8वां भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त काल) या ल.3 (सायं 6:7 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि. 13।। (6ठां शुक्र अशुभ) या ल.4 (रात 8:21 से) इष्ट 6 ग्र.व.वि.10।

5.शुक्र-पौष कृष्ण 1 दिन 1:22 तक रोहिणी में मृत्युबाण पूर्व रे.8 ल.1 (दिन 2:30 से) इष्ट 5 ग्र.व.वि.15। (8वां भौम अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.3 (सायं 6:3 से) इष्ट 5 ग्र.व. वि.13।। (6ठां शुक्र अशुभ)।

6.शनि-पौष कृष्ण 2 मृगशिरा में मृत्युबाण है। पश्चात शुक्रास्त दोष है।

वधू प्रवेश व द्विरागमन मुहूर्त

फरवरी

13.गुरु-फाल्गुन कृष्ण 1 मघा में वधूप्रवेश (ल.2 दिन 11:1 से)।

21.शुक्र-फाल्गुन कृष्ण 8 अनुराधा वधूप्रवेश (ल.11 प्रा.7:26 तक) द्विरागमन (ल.12 प्रातः 7:26 से)।

मार्च

3.सोम-फाल्गुन शुक्ल 4 अश्विनी में द्विरागमन (ल.7 रात 9:55 से)।

6.गुरु-फाल्गुन शु.7 रोहिणी में वधू-प्रवेश/द्विरागमन (ल.2 दि.9:42 से।)

7.शुक्र-फाल्गुन शुक्ल 8 मृगशिरा में वधूप्रवेश (ल.2 दिन 9:38 से) द्विरागमन (ल.3 दिन 11:34 से)।

अप्रैल

14.सोम-वैशाख कृष्ण 1 स्वाती में वधू प्रवेश/द्विरा.(ल.2 प्रातः 7:19 से) द्विरा.(ल.3 दिन 9:15 से) वधू (ल.8 रात 8:30 से)।

21.सोम-वैशाख कृष्ण 8 उ.षा. में वधू/द्वि. (ल.2 प्रातः 6:54 से)।

23.बुध-वैशाख कृष्ण 10 शतभिषा में द्विरा.ल.7 (सायं 5:42 से) (8वां गुरुदान) ल.8 (रात 7:58 से) ल.12 (रात 3:39 से) (लग्न का राहु दान)।

30. बुध-वैशाख शुक्ल 3 रोहणी में द्विरा.ल.2 (प्रातः 6:18 से)। द्विरा. ल.3 (प्रातः 8:14 से)।

मई

1.गुरु-वैशाख शुक्ल 4 रिक्ता भद्रा बाद मृगशिरा में द्विरागमन ल.7 (सायं 5:9 से) (8वां गुरु दान)।

8.गुरु-वैशाख शुक्ल 11 हस्त में वधूप्रवेश (ल.12 रात 2:40 से) लग्न राहुदान।

9.शुक्र-वैशाख शुक्ल 12 हस्त में वधूप्रवेश/द्विरागमन (ल.2 प्रातः 5:45 से) द्विरागमन (ल.3 दिन 7:41 से) द्विरा. (ल.7 सा.4:40 से) द्विरागमन ल.8 (सायं 6:56 से) (8वां गुरुदान)।

नवम्बर

27.गुरु-मार्गशीर्ष शुक्ल 7 धनिष्ठा में वधूप्रवेश/द्विरागमन (ल.2 सायं 4:40 से) द्विरागमन (ल.3 सायं 6:36 से)।

दिसम्बर

5.शुक्र-पौष कृष्ण 1 रोहिणी में वधूप्रवेश/द्विरागमन (ल.2 सायं 4:7 से) द्विरागमन ल.6 (रात 12:49 से) वधू. (ल.3 सायं 6:3 से) ल.7 (रात 3:2 से)।

8.सोम-पौष कृष्ण 4 रिक्ताबाद पुष्य में द्विरागमन (ल.6 रात 12:35 से) वधू (ल.7 रात 2:48 से)।

यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त

जनवरी

15.बुध-माघ कृ.2 श्लेषा में ल.2 (दि.1:3 से) 5वाँ केतुदान।

16.गुरु-माघ कृष्ण 3 श्लेषा में ल.10 (दि.8:22 तक) ल.1 (दि.11:21 से)।

फरवरी

7. शुक्र-माघ शुक्ल 10 रोहिणी में ल.10 (प्रा.6:51 तक), ल.12 (दिन 8:22 से)।

14.शुक्र-फाल्गुन कृष्ण 2 पू.फा. में ल.2 (दिन 10:57 से) 5वाँ केतुदान।

मार्च

6. गुरु-फाल्गुन शुक्ल 7 रोहिणी में ल.12 (प्रा.6:37 से) लग्नस्थ राहुदान, ल.2 (दि.9:42 से) 5वें राहुदान।

अप्रैल

4.शुक्र-चैत्र शुक्ल 7 मृगशिरा में विप्र बालक ल.3 (दिन 9:51 से)।

7.सोम-चैत्र शुक्ल 10 पुष्य में विप्र बालक ल.3 (दिन 9:40 से)।

9.बुध-चैत्र शुक्ल 12 मघा में विप्र बालक (ल.3 (दिन 9:33 से)।

14.सोम-वैशाख कृ.1 स्वाती में ल.3।

30.बुध-वैशाख शुक्ल 3 रोहिणी ल.2 (प्रातः 6:18 से) 5वाँ केतुदान।

मई

2.शुक्र-वैशाख शुक्ल 5 आर्द्रा में रोगबाण है।

9.शुक्र-वैशाख शुक्ल 12 हस्त में ल.3 (प्रातः 7:41 से)।

15.गुरु-ज्येष्ठ कृष्ण 3 मूल में ल.3 (प्रातः 7:19 से।

29.गुरु-ज्येष्ठ शुक्ल 3 आर्द्रा में ल.3 (दिन 8:35 से)।

जून

6.शुक्र-ज्येष्ठ शुक्ल 11 हस्त में ल.3 (प्रातः 5:49 से)।

8.रवि-ज्येष्ठ शुक्ल 12 स्वाती में ल.3 प्रातः 5:49 से।

चौल (मुण्डन) एवं कर्णवेध मुहूर्त

अप्रैल

14.सोम-वैशाख कृष्ण 1 स्वाती में ल.2 (प्रातः 7:19 से) या ल.3 (दिन 9:15 से)।

मई

9.शुक्र-वैशाख शुक्ल 12 हस्त में कर्णवेध ल.2 (प्रातः 5:45 से) या ल.3 (प्रातः 7:41 से)।

जून

5.गुरु-ज्येष्ठ शुक्ल 10 हस्त में चौल/कर्णवेध ल.3 (प्रातः 7:52 से)।

गृहारम्भ मुहूर्त

फरवरी

7.शुक्र-माघ शुक्ल 10 रोहिणी ल.2 (दिन 11:27 से)।

अप्रैल

13.सोम-वैशाख कृष्ण 1 स्वाती में गृहारंभ ल.3 (दिन 9:15 से) ल.8 (रात 8:30 से)।

मई

9.शुक्र-वैशाख शुक्ल 12 हस्त में ल.3 (दिन 7:41 से)।

जून

5.गुरु-ज्येष्ठ शुक्ल 10 हस्त में ल.3 (प्रातः 7:52 से।)

8.रवि-ज्येष्ठ शुक्ल 12 स्वाती में चन्द्र शुद्धि।

अगस्त

4.सोम-श्रावण शुक्ल 10 अनुराधा में च.शु.।

9.शनि-श्रावण शुक्ल 15 श्रवण में च.शु.।

11.सोम-भाद्रपद कृष्ण 2 शतभिषा ल.8 (दिन 12:45 से)।

सितम्बर

4.गुरु-भाद्रपद शुक्ल 12 उ.षा. में ल. 8 (दिन 11:13 से) 8वां गुरुदान या ल.9 (दिन 1:30 से) 8वां शुक्रदान।

5.शुक्र-भाद्रपद शुक्ल 13 श्रवण ल.8 (दिन 11:10 से) 8वां गुरुदान या ल.9 (दिन 1:27 से) 8वां शुक्रदान।

नवम्बर

27.गुरु-मार्गशीर्ष शुक्ल 7 धनिष्ठा में ल.11 (दिन 12:4 से) लग्न राहुदान या ल.2 (दिन 4:40 से) या ल.3 (सायं 6:36 से)।

दिसम्बर

4.गुरु-मार्गशीर्ष शुक्ल 14 रिक्ताबाद रोहिणी में ल.3 (सायं 6:30 से)।

गृहप्रवेश मुहूर्त

जनवरी

24.शुक्र-माघ कृष्ण 10 अनुराधा में ल.6 (रात 9:7 से) लग्नस्थ केतुदान।

फरवरी

7.शुक्र-माघ शुक्ल 10 रोहिणी में ल.2 (दिन 11:27 से)।

मार्च

6.गुरु-फाल्गुन शुक्ल 7 रोहिणी में ल.2 (दि.9:42 से)।

अप्रैल

25.शुक्र-वैशाख कृष्ण 12 उ.भा में ल.2 (प्रातः 6:44 से)।

मई

23.शुक्र-ज्येष्ठ कृष्ण 11 उ.भा. में ल.3 (प्रातः 6:45 से)।

जून

9.सोम-ज्येष्ठ शुक्ल 13 विशाखा में ल.3 (प्रातः 5:37 से)।

जुलाई

21.सोम-श्रावण कृष्ण 11 रोहिणी में जीर्णादि गृह. ल.6 (दिन 9:33) लग्न केतुदान। या मृगशिरा में ल.12 (रात 9:43 से) शनिदान।

अगस्त

4.सोम-श्रावण शुक्ल 10 अनुराधा में जीर्ण.(चन्द्र शुद्धि)

7.गुरु-श्रावण शुक्ल 13 उ.षा. में जीर्ण. रिक्ता दोष।

अक्टूबर

15.बुध-कार्तिक कृष्ण 9 रिक्ताबाद पुष्य में ल.12 (सायं 4:25 से) जीर्ण.।

नवम्बर

27.गुरु-मार्गशीर्ष शुक्ल 7 धनिष्ठा जीर्ण ल.9 (दिन 8:11 से) ल.11 (दिन 12:14 से) 4था राहुदान या ल.12 (दिन 1:35 से) 8वां बुधदान या ल.3 (सायं 6:36 से)।

29.शनि-मार्गशीर्ष शुक्ल 9 रिक्ताबाद उ.भा. में (चं.शु.)।

विद्यारम्भ व अक्षरारम्भ मुहूर्त

जनवरी

15.बुध-माघ कृष्ण 2 श्लेषा में ल.12 (दि.9:58 से), ल.2 (दि.1:3 से) विद्यारम्भ।

16.गुरु-माघ कृष्ण 3 श्लेषा में ल.12 (दि.9:53 से) विद्यारम्भ।

फरवरी

9.रवि-माघ शुक्ल 12 आर्द्रा में ल.2 (दि.11:18 से)।

14.शुक्र-फाल्गुन कृष्ण 2 पू.फा. में ल.2 (दि.10:57 से)।

अप्रैल

14.सोम-वैशा.कृ.1 स्वाती में (ल.2 (प्रातः 7:19 से) या ल.3 (दिन 9:15 से।

मई

2.शुक्र-वैशाख शुक्ल 5 आर्द्रा में अक्षरा/विद्या. ल.2 (प्रातः 6:11 से) ल.3 (दिन 8:7 से)।

9.शुक्र-वैशाख शुक्ल 12 हस्त में अक्षरा/विद्या. ल.2 (प्रातः 5:45 से) या ल.3 (प्रातः 7:41 से)।

15.गुरु-ज्येष्ठ कृष्ण 3 मूल में विद्या. (ल.3 (प्रातः 7:19 से)।

29.गुरु-ज्येष्ठ शुक्ल 3 आर्द्रा विद्या./अक्ष. ल.3 (प्रातः 6:21 से।

विपणि-दुकान मुहूर्त

जनवरी

10.शुक्र-पौष शुक्ल 11 रोहिणी में विपणि।

11.शनि-पौष शुक्ल 12 रोहिणी में विपणि।

20.सोम-माघ कृष्ण 6 चित्रा में विपणि/व्यापार।

24.शुक्र-माघ कृष्ण 10 अनुराधा विपणि/व्यापार।

फरवरी

7.शुक्र-माघ शुक्ल 10 रोहिणी में विपणि/व्यापार।

21.शुक्र-फाल्गुन कृष्ण 8 अनुराधा विपणि/व्यापार।

मार्च

3.सोम-फाल्गुन शुक्ल 4 अश्विनी में विपणि/व्यापार।

6.गुरु-फाल्गुन शुक्ल 7 रोहिणी में विपणि।

7.शुक्र-फाल्गुन शुक्ल 8 मृगशिरा में विपणि/व्यापार।

20.गुरु-चैत्र कृष्ण 6 अनुराधा में विपणि/व्यापार।

31.सोम-चैत्र शुक्ल 2 अश्विनी विपणी/व्यापार।

अप्रैल

1.बुध-चैत्र शुक्ल 4 रोहिणी विपणि (पंचमी में)।

3.गुरु-चैत्र शु. 6 रोहिणी विपणि। दिन 11158 उ. मृगशिरा विपणि/व्यापार।

4.शुक्र-चैत्र शुक्ल 7 मृगशिरा विपणि/व्यापार।

7.सोम-चैत्र शुक्ल 10 पुष्य विपणि/व्यापार।

14.सोम-वैशाख कृष्ण 1 स्वाती विपणि/व्यापार।

25.शुक्र-वैशाख कृष्ण 12 उ.भा. विपणि।

30.बुध-वैशाख शुक्ल 3 रोहिणी विपणि।

मई

1.गुरु-वैशाख शुक्ल 4 मृगशिरा विपणि/व्यापार (पंचमी में)।

9.शुक्र-वैशाख शुक्ल 12 हस्त विपणि/व्यापार।

14.बुध-ज्येष्ठ कृष्ण 2 अनुराधा विपणि।

15.गुरु-ज्येष्ठ कृष्ण 3 मूल विपणि।

23.शुक्र-ज्येष्ठ कृष्ण 11 उ.भा. विपणि।

जून

5.गुरु-ज्येष्ठ शुक्ल 10 हस्त विपणि/व्यापार

6.शुक्र-ज्येष्ठ शुक्ल 11 चित्रा विपणि/व्यापार

8.रवि-ज्येष्ठ शुक्ल 12 स्वाती विपणि।

12.गुरु-आषाढ़ कृष्ण 1 मूल विपणि।

19.गुरु-आषाढ़ कृष्ण 8 उ.भा. विपणि।

जुलाई

2.बुध-आषाढ़ शुक्ल उ.फा. विपणि।

3.गुरु-आषाढ़ शुक्ल 8 हस्त विपणि/व्यापार।

7.सोम-आषाढ़ शुक्ल 12 अनुराधा विपणि/व्यापार।

21.सोम-आषाढ़ कृष्ण 11 रोहिणी विपणि।

अगस्त

1.शुक्र-श्रावण शुक्ल 8 स्वाती विपणि/व्यापार।

6.बुध-श्रावण शुक्ल 12 मूल विपणि।

18.सोम-भाद्रपद कृष्ण 10 मृगशिरा विपणि/व्यापार।

29.शुक्र-भाद्रपद शु. 6 स्वाती विपणि/व्यापार।

सितम्बर

10.बुध-आश्विन कृ. 3 रेवती विपणि।

14.रवि-आश्विन कृष्ण 7 रोहिणी विपणि।

15.सोम-आश्विन कृष्ण 8 मृगशिरा विपणि/व्यापार।

18.गुरु-आश्विन कृष्ण 12 पुष्य विपणि/व्यापार।

27.शनि-आश्विन शुक्ल 5 अनुराधा विपणि।

29.सोम-आश्विन शुक्ल 7 मूल विपणि/व्यापार।

अक्टूबर

8.बुध-कार्तिक कृष्ण 1 अश्विनी विपणि।

9.गुरु-कार्तिक कृष्ण 3 भरणी विपणि/व्यापार।

12.रवि-कार्तिक कृष्ण 6 मृगशिरा विपणि।

26.रवि-कार्तिक शुक्ल 5 ज्येष्ठा विपणि।

27.सोम-कार्तिक शुक्ल 6 मूल विपणि।

नवम्बर

2.रवि-कार्तिक शुक्ल 12 उ.भा. विपणि।

3.सोम-कार्तिक शुक्ल 13 उ.भा. विपणि।

7.शुक्र-मार्ग.कृष्ण 2 रोहिणी विपणि।

16.रवि-मार्गशीर्ष कृष्ण 12 हस्त विपणि।

23.रवि-मार्गशीर्ष शु. 3 मूल विपणि।

30.रवि-मार्ग.शुक्ल 10 उ.भा. विपणि।

दिसम्बर

12.शुक्र-पौष कृष्ण 8 उ.फा. विपणि।

14.रवि-पौष कृष्ण 10 हस्त विपणि/व्यापार।

28.रवि-पौष शुक्ल 8 रेवती विपणि।

जलाशयारम्भ देव प्रतिष्ठा मुहूर्त

अप्रैल

14.सोम-वैशाख कृष्ण 1 स्वाती में ल.3 (दिन 9:15 से)।

मई

1.गुरु-वैशाख शुक्ल 4 मृगशिरा में ल.6 शुभलग्नाभाव।

9.शुक्र-वैशाख शुक्ल 12 हस्त में ल.3 (प्रातः 7:41 से।)

मुस्लिम शादी की मुबारक तारीखें

चन्द्रदर्शन के अनुसार अंग्रेजी तारीख में शादियाँ दी गयी हैं।

जनवरी

(जमादि उस्सानी 30 से सावन 1 तक)

ता.1 से 3, 5 से 8,10 से 13,15 से 18,20 से 23, 25 से 28,30 व 31।

फरवरी

(सावान 2 से सावान 29 तक)

ता.1,2,4 से 7,9 से 12,14 से 17,19 से 22,24 से 27।

मार्च

(सावान 21 से सव्वाल 1 तक ता.2 से 30 तक रमजान)

ता. 11 रमजान महीने में शादियाँ नहीं होंगी।

अप्रैल

(सव्वाल 2 से जिल्काद 1 तक)

ता.2 से 4 तक सव्वाल महीने में शादियाँ नहीं होंगी। ता.5,6,8 से 11,13 से 16,18 से 21,23 से 26, 28 से 30।

मई

(जिल्काद 2 से जिलहिज 3 तक)

ता.1,3 से 6,8 से 11,13 से 16,18 से 21,23 से 26,28 से 30।

जून

(जिलहिज 4 से मुहर्रम 4 तक)

ता.1 से 4,6 से 9,11 से 14,16 से 19,21 से 24,26 ता.27 से 30 तक मुहर्रम महीने में शादियाँ नही होगी।

जुलाई

(मुहर्रम 5 से सफर 5 तक)

ता.1 से 6 तक मोहर्रम महीने में शादियाँ नहीं होंगी। ता.7 से 26 तक खिच्चड़ रश्म से शादियाँ होगी। खिच्चड़ रश्म से शादियाँ—ता.7,8,10 से 13,15 से 18,20 से 23,25 व 26। ता.27 से सफर महीने में शादियाँ नहीं होंगी।

अगस्त

(सफर 6 से रवि उल अव्वल 7 तक)

ता.1 से 8 तक सफर महीने में शादियाँ नहीं होंगी। ता.9 से 12,14 से 17,19 से 22,व 24,25 ता.26 से 31 तक रवि उलअव्वल महीने में शादियाँ नहीं होंगी।

सितम्बर

(रविउल अव्वल 8 से रवि उस्सानी 7 तक)

ता.1 से 7 तक (रवि उल अव्वल महीने में शादियाँ नहीं होंगी। ता.8 से 11, 13 से 16,18 से 21,23 से 25,27 से 30।

अक्टूबर

(रवि उस्सानी 8 से जमादि उल अव्वल 8 तक)

ता.2 से 5,7 से 10,12 से 15,17 से 20,22 से 25, 27 से 30।

नवम्बर

(जमादि उल अव्वल 9 से जमादि उस्सानी 9 तक)

ता.1 से 4,6 से 9,11 से 14,16 से 19,21 से 24,26 से 29।

दिसम्बर

(जमादि उस्सानी 10 से रज्जब 10 तक)

ता.1 से 4,6 से 9,11 से 14,16 से 19, 21 से 24,26 से 29 व 31।

तलाक का सरियत

मुस्लिम सम्प्रदाय में मर्द किसी वजह से सात बार तलाक दे सकता है। पूर्व सरियत के अनुसार जायज माना जाता है। परन्तु सुप्रीम कोर्ट से पारित नये अध्यादेश में स्पष्ट कर दिया गया है कि अब तलाक लड़की और लड़का दोनों की रजामन्दी से जायज माना जायेगा। अपने न्याय के लिए लड़की न्यायालय में जा सकती है।

रूपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

पंचांग पर अपना नाम छपवाकर बाँटने वाले इच्छुक (100 प्रति से अधिक) कीटि, क्लब, संस्था व व्यापारिक वर्ग प्रकाशक से सम्पर्क करें 07233013544, उन्हें पंचांग उचित मूल्य पर दिया जायेगा।

कचौड़ीगली, वाराणसी, फोन नं. : 0542-2392543, 2392471

अक्टूबर 10 2025 OCTOBER

विक्रम संवत् 2082	श्रीशालिवाहन शाके 1947	फसली सन् 1433	इस्लामी हिजरी सन् 1447	बंगला संवत् 1432	नेपाली संवत् 1145-46
आश्विन शुक्ल 9 से कार्तिक शुक्ल 10 तक। ता. 8 से कार्तिक मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय आश्विन 9 से कार्तिक 9 तक। ता. 23 से कार्तिक मास प्रारम्भ।	प्र. असौज 24 से कतक 24 तक। ता. 8 से प्र. कतक माह शुरू।	रवि उस्सानी 8 से जमादि उलअव्वल 8 तक। ता. 24 से जमादि उलअव्वल माह शुरू।	आश्विन 14 से कार्तिक 14 तक। ता. 18 से कार्तिक प्रारम्भ।	आश्विन 15 गते से कार्तिक 14 गते तक। ता.18 से कार्तिक मास 22 से सं.1146 प्रारंभ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			31		
16			योग		

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	31

भद्रा-विचार

ता.2 रात 2:50 से ता.3 दिन 2:45 तक।
ता.6 दिन 11:25 से रात 10:29 तक।
ता.9 सायं 4:1 से रात 12:49 तक।
ता.12 रात 7:50 से ता.13 प्रातः 6:49 तक।
ता.15 रात 2:15 से ता.16 दिन 1:46 तक।
ता.19 दिन 1:55 से रात 2:55 तक।
ता.25 दिन 11:31 से रात 12:31 तक।
ता.28 रा.शे.4:29 से ता.29 सायं 4:41 तक।

तेजी-मंदी

धान्य-गेहूँ, जौ-चना, मटर में मंदी, सोना-चाँदी, गुड़-चीनी, अलसी, ज्वार-बाजरा, इलायची, लौंग, जायफल में मंदी के बाद तेजी आयेगी।

मूल विचार

ता.6 को रेवती रात 4:55 से ता.8 को अश्विनी रात 2:5 तक।
ता.15 को श्लेषा सायं 4:46 से ता.17 को मघा सायं 4:46 तक।
ता.24 को ज्येष्ठा रा.शे. 6:14 से ता.27 को मूल दिन 10:49 तक।

सूर्यनक्षत्र

ता.11 को चित्रा दिन 11:8 से।
ता.17 को तुला राशि रात 4:15 से।
ता.24 को स्वाती रात 7:46 से।

वार					
रवि SUN		**5** आश्विन शुक्ल त्रयोदशी दिन 12:57 तक; मु. 12 बंग. 18; रा. 13 ने. आश्विन 19 गते; मीन चं. रात 12:11 से, शतभिषा प्रातः 6:43 तक पू.भा. रा.शे. 5:59 तक	**12** कार्तिक कृष्ण षष्ठी रात 7:49 तक; भद्रा; मु. 19 बंग. 25; रा. 20 ने. आश्विन 26 गते; मिथुन चं. दिन 8:25 से, मृगशिरा रात 7:40 तक	**19** कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी दिन 1:55 तक; भद्रा; मु. 26 बंग. 2; रा. 27 ने. कार्तिक 2 गते; कन्या चं. उ.फा. सायं 6:47 तक	**26** कार्तिक शुक्ल पंचमी रात 2:15 तक; मु. 3 बंग. 9; रा. 4 ने. कार्तिक 9 गते; धनु चं. दिन 8:41 से, ज्येष्ठा दिन 8:41 तक
सो MON		**6** आश्विन शुक्ल चतुर्दशी दिन 11:25 तक; भद्रा; मु. 13 बंग. 19; रा. 14 ने. आश्विन 20 गते; शरद पूर्णिमा; मीन चं. उ.भा. रात 4:55 तक	**13** कार्तिक कृष्ण सप्तमी सायं 5:48 तक; भद्रा; मु. 20 बंग. 26; रा. 21 ने. आश्विन 27 गते; मिथुन चं. आर्द्रा सायं 6:22 तक	**20** कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी दिन 2:55 तक; मु. 27 बंग. 3; रा. 28 ने. कार्तिक 3 गते; 20 दीपावली; कन्या चं. हस्त रात 8:29 तक	**27** कार्तिक शुक्ल षष्ठी रात 3:34 तक; मु. 4 बंग. 10; रा. 5 ने. कार्तिक 10 गते; 27 डालाछठ; धनु चं. मूल दिन 10:49 तक
मं TUE		**7** आश्विन शुक्ल पूर्णिमा दिन 9:34 तक; मु. 14 बंग. 20; रा. 15 ने. आश्विन 21 गते; पूर्णिमा; मेष चं. रात 3:36 से, रेवती रात 3:36 तक	**14** कार्तिक कृष्ण अष्टमी सायं 4:6 तक; मु. 21 बंग. 27; रा. 22 ने. आश्विन 28 गते; कर्क चं. दिन 11:39 से, पुनर्वसु सायं 5:24 तक	**21** कार्तिक कृष्ण अमावस्या सायं 4:26 तक; मु. 28 बंग. 4; रा. 29 ने. कार्तिक 4 गते; अमावस्या; तुला चं. दिन 9:34 से, चित्रा रात 10:37 तक	**28** कार्तिक शुक्ल सप्तमी रात 4:29 तक; भद्रा; मु. 5 बंग. 11; रा. 6 ने. कार्तिक 11 गते; मकर चं. सायं 6:51 से, पू.षा. दिन 12:32 तक
बु WED	**1** आश्विन शुक्ल नवमी दिन 2:36 तक; मुस्लिम 8 बंगला 14; राष्ट्रीय 9 नेपाली आश्विन 15 गते; मकर चं. दिन 11:24 से, उ.षा. समस्त	**8** कार्तिक कृ. प्रतिपदा प्रातः 7:29 तक द्वितीया रा.शे. 5:11 तक; मु. 15 बंग. 21; रा. 16 ने. आश्विन 22 गते; मेष चं. अश्विनी रात 2:5 तक	**15** कार्तिक कृष्ण नवमी दिन 2:44 तक; भद्रा; मु. 22 बंग. 28; रा. 23 ने. आश्विन 29 गते; कर्क चं. पुष्य सायं 4:46 तक	**22** कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा सायं 6:17 तक; मु. 29 बंग. 5; रा. 30 ने. कार्तिक 5 गते; तुला चं. स्वाती रात 1:2 तक	**29** कार्तिक शुक्ल अष्टमी रात 4:51 तक; भद्रा; मु. 6 बंग. 12; रा. 7 ने. कार्तिक 12 गते; मकर चं. उ.षा. दिन 1:49 तक
गु THU	**2** आश्विन शुक्ल दशमी दिन 2:56 तक; भद्रा; मु. 9 बंग. 15; रा. 10 ने. आश्विन 16 गते; 2 विजया दशमी; गाँधी जयंती; मकर चं. उ.षा. प्रातः 6:14 तक	**9** कार्तिक कृष्ण तृतीया रात 2:49 तक; भद्रा; मु. 16 बंग. 22; रा. 17 ने. आश्विन 23 गते; वृष चं. रा.शे. 6:2 से, भरणी रात 12:27 तक	**16** कार्तिक कृष्ण दशमी दिन 1:46 तक; भद्रा; मु. 23 बंग. 29; रा. 24 ने. आश्विन 30 गते; सिंह चं. सायं 4:31 से, श्लेषा सायं 4:31 तक	**23** कार्तिक शुक्ल द्वितीया रात 8:22 तक; मु. 30 बंग. 6; रा. 1 ने. कार्तिक 6 गते; चन्द्रदर्शन; वृश्चिक चं. रात 9:0 से, विशाखा रात 3:38 तक	**30** कार्तिक शुक्ल नवमी रात 4:40 तक; मु. 7 बंग. 13; रा. 8 ने. कार्तिक 13 गते; कुम्भ चं. रात 2:42 से, श्रवण दिन 2:34 तक
शु FRI	**3** आश्विन शुक्ल एकादशी दिन 2:45 तक; भद्रा; मु. 10 बंग. 16; रा. 11 ने. आश्विन 17 गते; एकादशी व्रत; कुम्भ चं. सायं 6:57 से, श्रवण प्रातः 6:53 तक	**10** कार्तिक कृष्ण चतुर्थी रात 12:24 तक; मु. 17 बंग. 23; रा. 18 ने. आश्विन 24 गते; 10 करवा चौथ व्रत; वृष चं. कृत्तिका रात 10:46 तक	**17** कार्तिक कृष्ण एकादशी दिन 1:18 तक; मु. 24 बंग. 30; एकादशी व्रत; रा. 25 ने. आश्विन 31 गते; तुला संक्रान्ति; सिंह चं. मघा सायं 4:46 तक	**24** कार्तिक शुक्ल तृतीया रात 10:30 तक; मु. 1 बंग. 7; रा. 2 ने. कार्तिक 7 गते; वृश्चिक चं. अनुराधा रा.शे. 6:14 तक	**31** कार्तिक शुक्ल दशमी रात 4:2 तक; मु. 8 बंग. 14; रा. 9 ने. कार्तिक 14 गते; कुम्भ चं. धनिष्ठा दिन 2:49 तक
श SAT	**4** आश्विन शुक्ल द्वादशी दिन 2:4 तक; मु. 11 बंग. 17; रा. 12 ने. आश्विन 18 गते; प्रदोष व्रत; कुम्भ चं. धनिष्ठा प्रातः 7:2 तक	**11** कार्तिक कृष्ण पंचमी रात 10:3 तक; मु. 18 बंग. 24; रा. 19 ने. आश्विन 25 गते; वृष चं. रोहिणी रात 9:9 तक	**18** कार्तिक कृष्ण द्वादशी दिन 1:20 तक; मु. 25 बंग. 1; धनतेरस; रा. 26 ने. कार्तिक 1 गते; प्रदोष व्रत; कन्या चं. रात 11:50 से, पू.फा. सायं 5:32 तक	**25** कार्तिक शुक्ल चतुर्थी रात 12:31 तक; भद्रा; मु. 2 बंग. 8; रा. 3 ने. कार्तिक 8 गते; वृश्चिक चं. ज्येष्ठा समस्त	**पंचक विचार** ता.3 को सायं 6:57 से ता.7 को रात 3:36 तक। ता.30 को रात 2:42 से मासान्त तक।

तारीख :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
सूर्योदय :	6:6	6	7	8	9	9	10	11	12	12	13	14	14	15	16	16	17	18	19	19	21	22	22	22	23	24	24	25	26	26	27
सूर्यास्त :	5:54	54	53	52	51	51	50	49	48	48	47	46	46	45	44	44	43	42	41	41	39	38	38	38	37	36	36	35	34	34	33

व्रत-त्यौहार

1.बुध-नवरात्र हवन, कन्या पूजन, विजयादशमी, सीमोल्लंघन शमी पूजन।
2.गुरु-विजयादशमी, दुर्गा मूर्ति विसर्जन, नवरात्र व्रत पारण, गाँधी-शास्त्री जयंती।
3.शुक्र-पापांकुशा एकादशी व्रत, भरत मिलाप-नाटीइमली, वारा.।
4.शनि-शनि प्रदोष व्रत, मु. पर्व ग्यारहवीं शरीफ।
6.सोम-व्रत पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा।
7.मंगल-स्नान-दान की पूर्णिमा, वाल्मीकि जयंती।
10.शुक्र-करवा चौथ व्रत चं.उ.रात 7:58पर, नक्कटैया-वाराणसी।
11.शनि-चित्रा के सूर्य दिन 11:8।
13.सोम-अहोई अष्टमी व्रत।
14.मंगल-राधाष्टमी व्रत, राधा प्राक.।
17.शुक्र-रम्भा एकादशी व्रत- गोवत्स द्वादशी, तुला संक्रांति रात 4:15।
18.शनि-प्रदोष व्रत, धनतेरस।
19.रवि-नरक चतुर्दशी, मास शिवरात्रि व्रत, हनुमज्जन्म सायं, धन्वन्तरी प्राकट्योत्सव।
20.सोम-दीपावली, प्रातः हनुमत दर्शन।
21.मंगल-स्नान-दान-श्राद्ध की भौमवती अमावस्या।
22.बुध-अन्नकूट, गोवर्धन पूजा काशी से अन्यत्र।
23.गुरु-गोवर्धन पूजा काशी में, भैयादूज, चन्द्रदर्शन।
24.शुक्र-स्वा.के सूर्य रात 7:46।
25.शनि-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, सूर्यषष्ठी (डाला छठ) व्रत 3 दिन प्रारम्भ।
27.सोम-सूर्यषष्ठी (डालाछठ) व्रत सायं अर्घ्य।
28.मंगल-डाला छठ प्रातः अर्घ्य, व्रत पारण।
29.बुध-गोपाष्टमी, गो पूजन।
30.गुरु-अक्षय नवमी, अयोध्या-मथुरा परिक्रमा।
31.शुक्र-वल्लभ भाई पटेल जयंती।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

मेष- माता के स्वास्थ्य में बाधा होगी, कार्य-व्यवसाय में परेशानी बढ़ेगी।
वृष- आर्थिक यश में वृद्धि होगी, कर्मचारियों का स्थान परिवर्तन सम्भव है।
मिथुन-नौकरी में पदोन्नति होगी, भौतिक सुख सुविधा में प्रगति होगी।
कर्क- मान-प्रतिष्ठा में कमी आयेगी, असहाय जैसा अनुभव होगा।
सिंह- नौकरी में स्थानान्तरण सम्भव है, किसी नये अधिकार की प्राप्ति होगी।
कन्या- निर्भीकता के साथ शत्रुओं का सामना करेंगे, धन सम्पत्ति में कमी आयेगी।
तुला- सगे सम्बन्धियों पड़ोसियों से विवाद होता रहेगा, शनि की पूजा करें।
वृश्चिक-शत्रुओं से विवाद सम्भव है, व्यवसाय क्षेत्र में उत्तम लाभ होगा।
धनु- पुत्रादि की उन्नति होगी, मांगलिक आयोजन के अवसर प्राप्त होंगे।
मकर- शनि के राशि परिवर्तन से अकस्मात रुका हुआ कार्य पूरा हो जायेगा।
कुम्भ- भूमि-सम्पत्ति के कार्यों में हानि होगी, सर्राफा व्यवसाय में लाभ होगा।
मीन- शनि आपके राशि पर भ्रमणवश परेशान करेगा, शांति हेतु हनुमान आराधना करें।

आकाशी-लक्षण

मध्य भारत में सूखा, पूर्वी-पश्चिमी, दक्षिणी क्षेत्रों में अच्छी वर्षा का योग है। तेज हवा के साथ वर्षा कहीं-कहीं बूँदा-बादी तथा आकाश में बादल छाये रहेंगे।

सितम्बर-2025

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15		29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10		24	
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

नवमी तथा विजया दशमी निर्णय

इस वर्ष दिनांक 1 अक्टूबर बुधवार को नवमी तिथि (दिन 2:36 तक) रहते हवन तथा कन्या पूजन समाप्त करें, दिन 2:36 से दशमी तिथि का प्रारंभ होकर दिनांक 2 अक्टूबर गुरुवार को दिन 2:56 तक समाप्त हो जा रही है। इस दशमी तिथि रहते व्रत का पारण, दुर्गा विसर्जन तथा विजयादशमी (दशहरा) सम्बन्धित कार्य सम्पन्न किया जायेगा। इसके उपरान्त एकादशी तिथि का प्रारंभ हो रही है। धर्मशास्त्रों के अनुसार इस दशमी तिथि से सम्बन्धित कार्य एकादशी तिथि में नही करना चाहिये।

नवम्बर-2025

रवि	30	2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध			12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

Cancer Fighting Food — तीसी (Flax-seeds), हल्दी पाउडर, मुलेठी, मसूरदाल, लहसुन, ग्रीन-टी, स्ट्राबेरी, ब्लू-बेरी ← कैंसर रोग में लाभदायक → संतरा, काला अंगूर, अवैकाडो, नींबू, लालमिर्च, अदरक, पत्तागोभी, ब्रोकली, पालक, टमाटर

बारह राशियों का वार्षिक राशिफल-सन् 2025 ई.

मेष–चु चे चो ला ली लू ले लो अ

मेष राशि वालों का यह वर्ष संघर्षपूर्ण रहेगा। शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्तायें परेशान करेंगी। घरेलू समस्याओं को लेकर मानसिक तनाव बढ़ेगा। आर्थिक मामले में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पूंजी निवेश न करें। वाहन चलाने में सावधानी बरतें। व्यापार के क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम से लाभ होगा। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। दाम्पत्य-जीवन में मतभेद की स्थिति बनी रहेगी। सरकारी कर्मचारियों को व्यस्तता रहेगी। माता-पिता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्तित रहेंगे। सन्तान से मन मुटाव बना रहेगा। अनावश्यक दौड़-धूप होगी। भाग्य साथ तो देगा, परन्तु लाभ कम मिलेगा। विद्यार्थियों को मेहनत ज्यादा सफलता कम मिलेगी।

वृष–इ उ ए ओ वा वी वू वे वो

वृष राशि वालों को यह वर्ष उतार-चढ़ाव का रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी होने की सम्भावना है। मानसिक स्वास्थ्य के प्रति अधिक सचेत रहें। आर्थिक स्थिति में सुधार आयेगा, संचित धन में वृद्धि होगी। वाहन खरीदने का योग बनेगा। पैतृक-सम्पत्ति के सम्बन्ध में पारिवारिक विवाद हो सकता है। व्यापार के माध्यम से आजीविका क्षेत्र में लोगों की स्थिति में सुधार होगा। भाग्य उत्तम साथ देगा। कारोबार में अच्छी सफलता मिलेगी। आपसी तालमेल न होने के कारण दाम्पत्य-जीवन में नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। माता-पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। घर में कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकता है।

मिथुन–का की कू घ ङ छ के को हा

मिथुन राशि वालों के लिए यह वर्ष उन्नति कारक है। समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्वास्थ्य बेहतर रहेगा। धन का आवागमन बना रहेगा। अनावश्यक खर्च से परेशानी बढ़ेगी। भूमि, मकान, वाहन इत्यादि के क्रय-विक्रय का योग है। सन्तान की उन्नति से सुख प्राप्त होगा। शत्रुवर्ग हावी हो सकते हैं। वैवाहिक-जीवन में सुख-शान्ति बनी रहेगी। कारोबार व व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा वाले व्यक्तियों को भरपूर लाभ मिलेगा। विद्यार्थीगणों की मेहनत का फल उत्तम मिलेगा। आय के नये स्रोत बनेंगे। गलतफहमियों के कारण राजनेताओं को नुकसान उठाना पड़ेगा।

कर्क–ही हू हे हो डा डी डू डे डो

कर्क राशि वालों को यह वर्ष सकारात्मक व उन्नतिदायक होगा। स्वास्थ्य में कफ-वात-पित्त सम्बन्धी कष्ट हो सकता है। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। नवीन सम्पत्ति खरीदने का योग सफल होगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरीपेशा वालों को अपने वरिष्ठ अधिकारियों से तालमेल बनाकर रखें। सन्तान के विषय में सुख समाचार प्राप्त होगा। माता के लिये यह वर्ष कष्टकारी रहेगा। वैवाहिक-जीवन पति-पत्नी के सहयोग से खुशहाल रहेगा। परिवार के लोगों के साथ तालमेल बनाकर रखें, मनमुटाव की स्थिति बन सकती है।

सिंह–मा मी मू मे मो टा टी टू टे

सिंह राशि वालों को मई माह के बाद शनि की ढैया चलेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी छोटी-छोटी समस्यायें उत्पन्न होंगी। सम्पत्ति सम्बन्धी वाद-विवाद हो सकता है। जल्दबाजी में लिया गया निर्णय हानिकारक होगा। वाहन चलाने में सावधानी बरतें। इष्ट-मित्रों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। मानसिक कष्ट व अनावश्यक भाग दौड़ हो सकती है। आयात-निर्यात के क्षेत्र में आपको नुकसान के साथ पैसा भी फँस सकता है। सरकारी क्षेत्र में कार्यरत लोगों को संघर्ष का सामना करना पड़ेगा। वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी के मध्य पारिवारिक मामलों को लेकर परेशानियाँ बढ़ेंगी। सन्तान से सुख कम मिलेगा। आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

कन्या–टो पा पी पू ष ण ठ पे पो

कन्या राशि वालों को यह वर्ष अत्यधिक लाभदायक रहेगा, महत्वपूर्ण कार्यों में सावधानी बनाये रखें। हड्डी, पेट व आँखों से सम्बन्धित बीमारियों के प्रति सतर्क रहें। व्यापार-कारोबार में अच्छी सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में धन-बचत पर ध्यान दें अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। भू-सम्पत्ति खरीदने का योग बन रहा है। व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम करने के बावजूद उस अनुपात में सफलता प्राप्त नहीं होगी। सहयोगीजनों व पार्टनर के मध्य मतभेद होगा। माता-पिता से सहयोग सुख प्राप्त होगा। सन्तान की उन्नति के योग बनेंगे।

तुला–रा री रू रे रो ता ती तू ते

तुला राशि वालों को यह वर्ष सामान्य रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी बीमारी कष्ट देगी। व्यापारियों को कारोबार में मंदी का सामना करना पड़ेगा। सरकारी कर्मचारियों की व्यस्तता बढ़ेगी। इष्ट-मित्रों के सहयोग से कार्य क्षेत्र में मुश्किलें कम होंगी। अचानक धन लाभ तथा धन खर्च होने की सम्भावना है। वाहन-मकान आदि सम्पत्ति खरीदने की योजना बनेगी। माता-पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। सन्तान के कारण कष्ट होगा। घरेलू उलझनों को लेकर पति-पत्नी के बीच मतभेद हो सकता है। व्यर्थ के वाद-विवाद में समय व्यतीत न करें। सर्राफा कारोबारियों को मंदी का सामना करना पड़ेगा। सरकारी कर्मचारियों का स्थानान्तरण हो सकता है। प्रेम-प्रसंग में एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करें।

वृश्चिक–तो ना नी नू ने नो या यी यू

वृश्चिक राशि वालों को यह वर्ष अधिकांश रूप से सकारात्मक रहेगा। पहले से रुके हुये कार्य सफल होंगे। शत्रु पक्ष आपके विरुद्ध कोई न कोई षडयन्त्र रचेंगे। स्वास्थ्य-सम्बन्धी चिन्ताएँ बनी रहेंगी। गला, कान से सम्बन्धित रोग कष्ट देगा। इष्ट-मित्रों के सहयोग से सम्पत्ति के क्रय-विक्रय में लाभ मिलेगा। आर्थिक क्षेत्रों में किये गये प्रयासों से सफलता प्राप्त होगी। कारोबार एवं कृषि कार्य से जुड़े हुए लोगों को यह वर्ष अच्छा रहेगा। नौकरी पेशा वालों की उन्नति के साथ-साथ पदोन्नति भी होगी। घरेलू-समस्याओं का समाधान होगा। पति-पत्नी के बीच सुख सौहार्द्र में वृद्धि होगी। प्रेम-संबन्ध में एक दूसरे के बीच सामजस्य बनाये रखें। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में कम लगेगा।

धनु–ये यो भा भी भू ध फ ढ भे

धनु राशि वालों को मई से शनि की ढैया प्रारम्भ होगी। वर्ष में शनि के आगे पीछे होने से उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। बने-बनाये कार्यों में व्यवधान आयेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी बढ़ सकती है। सम्पत्ति क्रय-विक्रय सम्बन्धी कार्यों में सावधानी बरतें नुकसान हो सकता है। जल्दबाजी में कोई बड़ा निर्णय न लें। अनावश्यक खर्च बढ़ने से मानसिक तनाव रहेगा। व्यापारिक क्षेत्र में जुड़े लोगों को उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा। क्रोध पर नियंत्रण रखें, अन्यथा नुकसान उठाना पड़ेगा। वाहन चलाने में सावधानी बरतें। यात्रा में चोरी, छिनैती से सावधान रहें। सन्तान सुख प्राप्त होगा। माता-पिता का स्वास्थ्य सुधरेगा। पति-पत्नी के बीच सामंजस्य की कमी रहेगी।

मकर–भो जा जी खी खू खे खो गा गी

मकर राशि वालों के लिए यह वर्ष उतार-चढ़ाव का रहेगा। शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव जनवरी २०२६ तक रहेगा। स्वास्थ्य खराब होगा, जिससे मानसिक तनाव भरपूर रहेगा। आर्थिक लेन-देन में सावधानी बरतें। पैसा फँस सकता है। कार्य क्षेत्र में विघ्न बाधाएँ आयेंगी। व्यवसाय-क्षेत्र में कार्यरत लोगों के नवीन व्यवसाय में उदासीनता बढ़ेगी। माता-पिता के स्वास्थ्य पर पैसा अधिक खर्च होगा। सन्तान सम्बन्धी परेशानी का समाधान निकलेगा, जीवन-साथी के साथ पर्यटन स्थल की यात्रा के योग बनेंगे। समाज में अपमानित हो सकते हैं। गलत संसर्ग सुख से दूर रहें। वरना कष्ट हो सकता है।

कुम्भ–गू गे गो सा सी सू से सो दा

कुम्भ राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव बना रहेगा। मगर शनि की स्वयं राशि होने से ज्यादा प्रभावशाली नहीं होगा। यह वर्ष विशेष फलदायक बना रहेगा। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्ता बढ़ सकती है। मानसिक तनाव से बचें। मतभेद एवं वाद-विवाद की स्थिति से बचें। किसी अनजानी अनचाही स्थिति से बचें। जमा पूँजी का सही तरह से उपयोग करें। किसी के बहकावे में न आयें। आजीविका के क्षेत्र में आपको मंदी का सामना करना पड़ेगा। नौकरी पेशा वाले अधिकारियों से तालमेल बनाकर रखें। पति-पत्नी के बीच आपसी वाद-विवाद हो सकता है।

मीन–दी दू थ झ ञ दे दो चा ची

मीन राशि वालों को इस वर्ष शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव उग्र रहेगा। बने बनाये कार्य बिगड़ेंगे। जिससे मानसिक तनाव बढ़ेगा। अनावश्यक व्यय होगा। कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगेंगे। बन्धु-बान्धवों से विवाद होगा। नित्य नये शत्रु बनेंगे। व्यर्थ के विवाद में समय बर्बाद न करें। स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में किये गये प्रयास में सफलता कम मिलेगी। कर्ज के लेन देन में सावधानी बरतें। वाहन-मकान क्रय-विक्रय या निर्माण का योग बनेगा। आर्थिक कठिनाईयाँ बनी रहेंगी। जीवन यापन में कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी पेशा वालों का स्थानान्तरण होगा। दाम्पत्य-जीवन में परस्पर तालमेल बना रहेगा। सन्तान की उदण्डता आपको परेशान कर सकती है। ●

शनि की साढ़ेसाती तथा ढैय्या

इस वर्ष शनि देव दो राशि में भ्रमण करेंगे। 4 मई 2025 को मीन राशि में प्रवेश करेंगे। 14 जुलाई को वक्री होकर 17 सितम्बर से कुम्भ राशि में होंगे। 18 नवम्बर को मार्गी होकर 23 जनवरी 2026 को पुनः मीन राशि में प्रवेश करेंगे। कुम्भ मीन मेष राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती रहेगी सिंह एवं धनु राशि वालो को शनि की ढैया चलेगी।

मेष राशि के शिर पर, मीन राशि के हृदय पर, कुम्भ राशि के पैर पर शनि का प्रभाव रहेगा। गोचर वश मेष से 12 वृष से 11 मिथुन से 10 कर्क से 9 सिंह से 8 कन्या से 7 तुला से 6 वृश्चिक से 5 धनु से 4 मकर से 3 कुम्भ से 2 मीन से पहले स्थान में भ्रमण करेंगे।

शनि शांति के लिए उपाय

शनि के साढ़ेसाती व ढैया वालों को शान्ति के लिये शनि का जप, दान करना तथा शनिस्तोत्र का पाठ करना चाहिए। हनुमानजी की आराधना दर्शन-पूजन, शनिवार को पीपल के मूल (जड़) में प्रातः काला तिल सहित जल देना चाहिए तथा सायं प्रदोष काल में दीपदान करना चाहिए। बन्दर को गुड़ चना देना चाहिए।

शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ तथा काले घोड़े के नाल या नाव के काँटे की अँगूठी मध्यमा अंगुली में धारण करें। काला तिल, अंजन, लोहा, सौंफ, धान का लावा को जल में डालकर स्नान करने से शनिदोष शांत होता है। ●

सितम्बर का शेषांश व्रत-त्योहार

ता.वार विवरण

6.**शनि**-अनन्त चतुर्दशी व्रत, गणपति विसर्जन।
7.**रवि**-स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, उमा महेश्वर व्रत, लोकपाल पूजा, नान्दी मातामह श्राद्ध, खग्रास-चन्द्रग्रहण।
8.**सोम**-फसली नववर्षारम्भ असौज सन् 1433 प्रारम्भ, महालया-पितृपक्ष आरम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध।
9.**मंगल**-अशून्यशयन व्रत, द्वितीया श्राद्ध।
10.**बुध**-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 7:47, तृतीया श्राद्ध।
11.**गुरु**-चतुर्थी श्राद्ध।
12.**शुक्र**-भरणी श्राद्ध, पंचमी श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी श्राद्ध।
13.**शनि**-सप्तमी श्राद्ध।
14.**रवि**-जीवित्पुत्रिका-जीउतिया व्रत, महालक्ष्मी व्रत चं.उ.रा.11:4 अष्टमी श्राद्ध, अष्टका श्राद्ध, उ.फा. के सूर्य प्रा.7:13।
15.**सोम**-मातृनवमी, मातामह श्राद्ध, नवमी श्राद्ध, जीउतिया व्रत पारण।
16.**मंगल**-दशमी श्राद्ध।
17.**बुध**-इन्दिरा एकादशी व्रत-सबका, एकादशी श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजा, कन्या संक्रांति सायं 5:19।
18.**गुरु**-यती-संन्यासी श्राद्ध, द्वादशी श्राद्ध।
19.**शुक्र**-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, मघा श्राद्ध, त्रयोदशी श्राद्ध।
20.**शनि**-चतुर्दशी श्राद्ध, शस्त्रादि से मृतक का श्राद्ध।
21.**रवि**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, पितृ-विसर्जन, महालया समाप्त।
22.**सोम**-शारदीय नवरात्र आरम्भ, कलश स्थापन, दौहित्र द्वारा मातामह श्राद्ध।
23.**मंगल**-चन्द्रदर्शन।
24.**बुध**-मु.म. रवि उस्सानी हि.1447।
25.**गुरु**-वैना.गणेश चतुर्थी व्रत, मान चतुर्थी।
26.**शुक्र**-उपांग ललिता व्रत।
27.**शनि**-हस्त के सूर्य रात 10:36।
28.**रवि**-विल्व आमन्त्रण।
29.**सोम**-महानिशा पूजा, सरस्वती आवाहन, अन्नपूर्णा परिक्रमा दि.12:25 से।
30.**मंगल**-महाष्टमी, दुर्गाष्टमी व्रत, सरस्वती पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा दिन 1:44 तक।

ता.वार विवरण

सितम्बर जयन्ती

1.**सोम**-श्री चन्द्र जयन्ती।
4.**गुरु**-श्रीवामन प्राकट्योत्सव।
5.**शुक्र**-शिक्षक दिवस, डॉ.राधाकृष्णन् जयन्ती, मदर टेरेसा पुण्य तिथि, मु.पर्व बारावफात।
8.**सोम**-विश्व साक्षरता दिवस।
10.**बुध**-मु.पर्व ईदे मिलाद।
11.**गुरु**-सन्त विनोवा भावे जयंती।
14.**रवि**-हिन्दी दिवस।
15.**सोम**-इन्जीनियर्स-डे।
17.**बुध**-विश्वकर्माजी प्राकट्योत्सव।
22.**सोम**-श्रीशैलपुत्री देवी दर्शन, महाराज अग्रसेन जयंती।
23.**मंगल**-श्रीब्रह्मचारिणी देवी दर्शन।
24.**बुध**-श्रीचित्रघण्टा देवी दर्शन।
25.**गुरु**-श्रीकूष्माण्डा (दुर्गा) देवी दर्शन।
27.**शनि**-श्रीस्कन्दमाता देवी दर्शन।
28.**रवि**-श्रीकात्यायनी देवी दर्शन।
29.**सोम**-श्रीकालरात्रि देवी दर्शन, विश्व हृदय दिवस।
30.**मंगल**-श्रीमहागौरी देवी दर्शन, बैंक अर्धवार्षिक लेखा बन्दी।

अक्टूबर व्रत-त्यौहार

1.**बुध**-नवरात्र हवन, कन्या पूजन, विजया-दशमी, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, शमीपूजन, शस्त्रपूजा।
2.**गुरु**-विजयादशमी, दुर्गा मूर्ति विसर्जन, नवरात्र व्रत पारण।
3.**शुक्र**-पापांकुशा एकादशी व्रत-सबका।
4.**शनि**-शनि प्रदोष व्रत, पद्मनाभ द्वादशी व्रत।
6.**सोम**-व्रत की पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, शरद् पूर्णिमा।
7.**मंगल**-स्नान-दान की पूर्णिमा।
8.**बुध**-कार्तिक मास का यम-नियम-व्रतारंभ, अशून्यशयन व्रत।
10.**शुक्र**-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, करवा चौथ व्रत चं.उ. रात 7:58 पर, ललिता चतुर्थी, दशरथ चतुर्थी-बंगाल।
11.**शनि**-चित्रा के सूर्य दिन 11:8।
13.**सोम**-अहोई अष्टमी व्रत चन्द्रोदय रात 11:5।
14.**मंगल**- राधाष्टमी व्रत, राधा कुण्ड स्नान पर्व, कराष्टमी-महाराष्ट्र।
17.**शुक्र**-रम्भा एकादशी व्रत-सबका, गोवत्स द्वादशी, तुला संक्रांति रात 4:15।
18.**शनि**-शनि प्रदोष व्रत, धनतेरस।

ता.वार विवरण

19.**रवि**-नरक चतुर्दशी, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, हनुमज्जन्म सायं।
20-.**सोम**-दीपावली, गणेश-लक्ष्मी-महाकाली पूजा, प्रातः हनुमद् दर्शन।
21.**मंगल**-स्नान-दान-श्राद्ध की भौमवती अमावस्या।
22.**बुध**-अन्नकूट, गोवर्धन पूजा काशी से अन्यत्र, बलिपूजा, नेपाली नववर्ष संवत् 1146 आरम्भ।
23.**गुरु**- गोवर्धन पूजा काशी में, भैयादूज, यम द्वितीया, चित्रगुप्त पूजा, दावात पूजा, चन्द्रदर्शन।
24.**शुक्र**-मु.म.जमादि उल अव्वल हि.1447, स्वाती के सूर्य रात 7:46 ।
25.**शनि**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, सूर्यषष्ठी (डाला छठ) व्रत 3 दिन प्रारम्भ।
26.**रवि**-ज्ञान पंचमी जैन।
27.**सोम**-सूर्यषष्ठी (डालाछठ) व्रत सायं अर्घ्य।
28.**मंगल**-डाला छठ प्रातः अर्घ्य, व्रत का पारण।
29.**बुध**-गोपाष्टमी, गो पूजन, बुधाष्टमी।
30.**गुरु**-अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी, आँवला नवमी, दुर्गा नवमी, जगद्धात्री पूजा-बंगाल।

अक्टूबर जयन्ती

1.**बुध**-श्री सिद्धिदात्री देवी दर्शन, बौद्धावतार।
2.**गुरु**-गाँधी-शास्त्री जयंती, अहिंसा दिवस, साईं बाबा पुण्यतिथि, माधवाचार्य जयंती।
3.**शुक्र**-भरतमिलाप-नाटी इमली, वाराणसी।
4.**शनि**-मु.पर्व ग्यारहवीं शरीफ।
7.**मंगल**-महर्षि वाल्मीकि जयंती, मीराबाई जयंती।
8.**बुध**-वायु सेना दिवस।
9.**गुरु**-विश्व दृष्टि दिवस, उर्स हजरत निजामुद्दीन औलिया-दिल्ली।
10.**शुक्र**-नक्कटैया चेतगंज, वाराणसी, राष्ट्रीय डाक दिवस, चरखा जयन्ती।
14.**मंगल**-श्री राधा प्राकट्योत्सव।
19.**रवि**-धन्वन्तरी प्राकट्योत्सव, श्रीकामेश्वरी देवी प्राकट्योत्सव, श्रीहनुमान प्राकट्योत्सव, मु.शबे मिराज।
21.**मंगल**-महावीर निर्वाण दिवस, पुलिस स्मृति दिवस।
24.**शुक्र**-विश्वामित्र जयंती।
30.**गुरु**-अयोध्या-मथुरा परिक्रमा।
31.**शुक्र**-सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ती, एकता दिवस।

नवम्बर व्रत त्यौहार

1.**शनि**-हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत-सबका, भीष्म पंचक प्रारम्भ।
2.**रवि**-तुलसी विवाह, चातुर्मास व्रत समाप्त।
3.**सोम**-सोमप्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत।
4.**मंगल**-श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, चौमासी चौदस-जैन।
5.**बुध**-स्नान-दान की पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, रास पूर्णिमा, त्रिपुरोत्सव, देव दीपावली, श्रीकार्तिकेय दर्शन, भीष्मपंचक समाप्त।
6.**गुरु**-विशाखा के सूर्य रात 3:55।
8.**शनि**-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 7:45।
10.**सोम**-श्रीअन्नपूर्णा देवी व्रतारम्भ 16 दिनात्मक, श्रीरामेश्वर महादेव दर्शन-पूजन।
12.**बुध**-भैरव अष्टमी व्रत, अष्टभैरव दर्शन, कालाष्टमी।
15.**शनि**-उत्पन्ना एकादशी व्रत।
16.**रवि**-वृश्चिक संक्रांति रात 1:47।
17.**सोम**-सोम प्रदोष व्रत।
18.**मंगल**-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
19.**बुध**-श्राद्ध की अमावस्या।
20.**गुरु**-स्नान-दान की अमावस्या, रुद्र व्रत पीड़िया (प्रदोष काल), अनुराधा के सूर्य दिन 8:50।
21.**शुक्र**-चन्द्रदर्शन।
22.**शनि**-मु.म. जमादि उस्सानी हि.1447।
24-**सोम**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
25.**मंगल**-द्वितीय नागपंचमी, श्रीपंचमी, श्रीराम विवाहोत्सव।
26.**बुध**-स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पा षष्ठी-महाराष्ट्र, मूलकरूपिणी षष्ठी व्रत, गुहषष्ठी।
27.**गुरु**-मित्र (सूर्य) सप्तमी व्रत।
29.**शनि**-महानन्दा नवमी, कल्पादि नवमी।

नवम्बर जयन्ती

2. **रवि**-कालीदास जयन्ती।
5.**बुध**-गुरुनानक जयंती, पुष्कर मेला-अजमेर, हरिहर क्षेत्र मेला-सोनपुर, गढ़ मुक्तेश्वर-पुष्कर मेला, महावीर-रथोत्सव जैन, भृगु आश्रम मेला ददरी-बलिया।
10.**सोम**-लोटा भंटा मेला-रामेश्वर-वाराणसी।
12.**बुध**-कालभैरव प्राकट्योत्सव।
14.**शुक्र**-बाल दिवस, पण्डित जवाहर लाल नेहरू जयन्ती।
24.**सोम**-गुरु तेग बहादुर शहीद दिवस।

दिसम्बर व्रत त्यौहार

1.**सोम**-मोक्षदा एकादशी व्रत-सबका, मौनी एकादशी-जैन।

ता.वार विवरण

2.**मंगल**-भौमप्रदोष व्रत, मत्स्य द्वादशी व्रत।
3.**बुध**-पिशाचमोचन श्राद्ध, कपर्दीश्वर महादेव दर्शन, ज्येष्ठा के सूर्य दि.12:1।
4.**गुरु**-स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा।
8.**सोम**-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रात 8:47।
12.**शुक्र**-कालाष्टमी, शुक्रास्त पश्चिम में रात 12:7।
14.**रवि**-पौष दशमी-जैन।
15.**सोम**-सफला एकादशी व्रत सबका।
16.**मंगल**-मूल-धनु संक्रांति दि.1:50, खरमास प्रारम्भ।
17.**बुध**-प्रदोष व्रत।
18.**गुरु**-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
19.**शुक्र**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, बकुल अमावस्या (उड़ीसा), कपिल धारा तीर्थ श्राद्ध।
21.**रवि**-चन्द्रदर्शन।
22.**सोम**-मु. रज्जब हि0 1447।
23.**मंगल**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
25.**गुरु**-बड़ा दिन (क्रिसमस डे)।
26.**शुक्र**-अन्नरूपा षष्ठी-बंगाल।
29.**सोम**-शाम्ब दशमी-उड़ीसा, पू.षा. के सूर्य दिन 11:41।
30.**मंगल**-पुत्रदा एकादशी व्रत-सबका, वैकुण्ठ एकादशी-द.भा.।
31.**बुध**-कूर्म द्वादशी।

दिसम्बर जयन्ती

1.**सोम**-गीता जयंती, विश्व एड्स दिवस।
3.**बुध**-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती, किसान दिवस, भोपाल गैस त्रासदी दिवस।
4.**गुरु**-श्रीदत्तात्रेय प्राकट्योत्सव, अन्तर्गृही यात्रा काशी, षोडशी त्रिपुरसुन्दरी देवी प्राकट्योत्सव, नौसेना दिवस।
6.**शनि**-डॉ. भीमराव अम्बेडकर पुण्य तिथि।
7.**रवि**-झण्डा दिवस।
10.**बुध**-मानवाधिकार दिवस।
14.**रवि**-ऊर्जा बचत दिवस।
15.**सोम**-पार्श्वनाथ जयंती।
25.**गुरु**-ईसा मसीह जयंती, पं. मदनमोहन मालवीय जयंती (अं.मत)।
26.**शुक्र**-जोर मेला पंजाब 3 दिन।
27.**शनि**-गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (प्रा.मत)।
28.**रवि**-जोर मेला समाप्त।
30.**मंगल**-तैलंग स्वामी जयंती।
31.**बुध**-नववर्ष की पूर्व सन्ध्या।

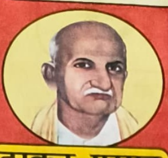

ठाकुर प्रसाद

रुपेश पंचाङ्ग

नवम्बर 11 2025 NOVEMBER

विक्रम संवत् 2082	श्रीशालिवाहन शाके 1947	फसली सन् 1433	इस्माली हिजरी सन् 1447	बंगला संवत् 1432	नेपाली संवत् 1146
कार्तिक शुक्ल 11 से मार्गशीर्ष कृष्ण 10 तक। ता. 6 से मार्गशीर्ष मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय कार्तिक 10 से अग्रहायण 9 तक। ता. 22 से अग्रहायण मास प्रारम्भ।	प्र. कतक 25 से प्र. मघर 25 तक। ता. 6 से मघर मास प्रारम्भ।	जमादि उलअव्वल 9 से जमादि उस्सानी 9 तक। ता. 22 से जमादि उस्सानी मास शुरू।	कार्तिक 15 से मार्गशीर्ष 14 तक। ता. 17 से मार्गशीर्ष मास प्रारम्भ।	कार्तिक 15 गते से मार्गशीर्ष 14 गते तक। ता.17 से मार्गशीर्ष मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			योग		
16					

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	

भद्रा-विचार

ता.1 दिन 3:30 से रात 2:57 तक।
ता.4 रात 9:33 से ता.5 दिन 8:24 तक।
ता.7 रात 1:22 से ता.8 दिन 12:13 तक।
ता.10 रा.शे. 5:21 से ता.11 सायं 5:42 तक।
ता.14 दिन 3:44 से रात 3:47 तक।
ता.18 प्रातः 7:2 से रात 7:58 तक।
ता.23 रा.शे.5:36 से ता.24 सायं 6:18 तक।
ता.27 रात 7:24 से ता.28 प्रातः 7:4 तक।
ता.30 रात 3:15 से।

तेजी-मंदी

गुड़-शक्कर, गेहूँ, चना, सोना-चाँदी, इमारती-सामान, जौ, पीतल, ताँबा, जस्ता, घी-तेल, सरसों, रूई तथा वस्त्र में तेजी रहेगी।

मूल विचार

ता.3 को रेवती दिन 1:1 से ता.5 को अश्विनी दिन 10:15 तक।
ता.11 को श्लेषा रात 12:37 से ता.13 को मघा रात 12:24 तक।
ता.21 को ज्येष्ठा दिन 1:19 से ता.23 को मूल सायं 6:1 तक।
ता.30 को रेवती रात 8:57 से।

सूर्य नक्षत्र

ता.6 को विशाखा रात 3:55 से।
ता.16 को वृश्चिक राशि रात 1:47 से।
ता.20 को अनुराधा रात 8:50 से।

पंचक विचार

मासारम्भ से ता.4 को दिन 11:45 तक।
ता.27 को दिन 10:19 से मासान्त तक।

विवाह मुहूर्त

ता.21,22,23,24,25,26,30।

वार					
रवि SUN	मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी सायं 4:10 तक; भद्रा; मु. 9 बं. 14; **30**; रा.9 ने. मार्ग. 14 गते; मीन चं. उ.भा. रात 8:57 तक	कार्तिक शुक्ल द्वादशी रात 1:26 तक; मु. 10 बं. 16; **2**; रा.11 ने. कार्तिक 16 गते; मीन चं. दिन 8:8 से, पू.भा. दिन 1:58 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी दिन 10:0 तक; मु. 17 बं. 23; **9**; रा.18 ने. कार्तिक 23 गते; मिथुन चं. आर्द्रा रात 2:26 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी रा.शे. 5:28 तक; मु. 24 बं. 30; एकादशी व्रत-वै.; **16**; वृश्चिक संक्रान्ति; रा.25 ने. कार्तिक 30 गते; कन्या चं. हस्त रात 3:44 तक	मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया सायं 4:56 तक; भद्रा; मु. 2 बं. 7; **23**; रा.2 ने. मार्ग. 7 गते; धनु चं. मूल सायं 6:1 तक
सोम MON		कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी रात 11:37 तक; मु. 11 बं. 17; **3**; प्रदोष व्रत; रा.12 ने. कार्तिक 17 गते; मीन चं. उ.भा. दिन 1:1 तक	मार्गशीर्ष कृ. पंचमी दिन 8:2 तक, षष्ठी रा.शे. 6:21 तक; भद्रा; मु. 18 बं. 24; **10**; रा.19 ने. कार्तिक 24 गते; कर्क चं. रात 7:37 से, पुनर्वसु रात 1:21 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी समस्त; मु. 25 बं. 1; **17**; प्रदोष व्रत; रा.26 ने. मार्ग. 1 गते; तुला चं. सायं 4:45 से, चित्रा रा.शे. 5:46 तक	मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी सायं 6:18 तक; भद्रा; मु. 3 बं. 8; **24**; रा.3 ने. मार्ग. 8 गते; मकर चं. रात 2:13 से, पू.षा. रात 7:51 तक
मं TUE		कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी रात 9:33 तक; भद्रा; मु. 12 बं. 18; **4**; रा.13 ने. कार्तिक 18 गते; मेष चं. दिन 11:45 से, रेवती दिन 11:45 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण सप्तमी रा.शे. 5:2 तक; भद्रा; मु. 19 बं. 25; **11**; रा.20 ने. कार्तिक 25 गते; कर्क चं. पुष्य रात 12:37 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी प्रातः 7:2 तक; भद्रा; मु. 26 बं. 2; **18**; रा.27 ने. मार्ग. 2 गते; तुला चं. स्वाती समस्त	मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी रात 7:11 तक; मु. 4 बं. 9; **25**; रा.4 ने. मार्ग. 9 गते; मकर चं. उ.षा. रात 9:15 तक
बु WED		कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा रात 7:16 तक; भद्रा; मु. 13 बं. 19; 5; पूर्णिमा; गुरु नानक जयंती; रा.14 ने. कार्तिक 19 गते; मेष चं. अश्विनी दिन 10:15 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी रात 4:6 तक; मु. 20 बं. 26; **12**; रा.21 ने. कार्तिक 26 गते; सिंह चं. रात 12:16 से, श्लेषा रात 12:16 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्दशी दिन 8:54 तक; मु. 27 बं. 3; **19**; अमावस्या; रा.28 ने. मार्ग. 3 गते; वृश्चिक चं. रात 3:39 से, स्वाती दिन 8:8 तक	मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी रात 7:33 तक; मु. 5 बं. 10; **26**; रा.5 ने. मार्ग. 10 गते; मकर चं. श्रवण रात 10:7 तक
गु THU		मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा सायं 4:55 तक; मु. 14 बं. 20; **6**; रा.15 ने. कार्तिक 20 गते; वृष चं. दिन 2:13 से, भरणी दिन 8:37 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण नवमी रात 3:42 तक; मु. 21 बं. 27; **13**; रा.22 ने. कार्तिक 27 गते; सिंह चं. मघा रात 12:24 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या दिन 11:0 तक; मु. 28 बं. 4; **20**; अमावस्या; रा.29 ने. मार्ग. 4 गते; वृश्चिक चं. विशाखा दिन 10:42 तक	मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी रात 7:24 तक; भद्रा; मु. 6 बं. 11; **27**; रा.6 ने. मार्ग. 11 गते; कुम्भ चं. दिन 10:19 से, धनिष्ठा रात 10:29 तक
शु FRI		मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया दिन 2:31 तक; भद्रा; मु. 15 बं. 21; **7**; रा.16 ने. कार्तिक 21 गते; वृष चं. कृतिका प्रातः 6:57 तक, रोहिणी रा.शे. 5:17 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी रात 3:47 तक; भद्रा; मु. 22 बं. 28; **14**; रा.23 ने. कार्तिक 28 गते; सिंह चं. पू.फा. रात 1:1 तक	मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा दिन 1:9 तक; मु. 29 बं. 5; **21**; चन्द्रदर्शन; रा.30 ने. मार्ग. 5 गते; वृश्चिक चं. अनुराधा दिन 1:19 तक	मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी सायं 6:45 तक; भद्रा; मु. 7 बं. 12; **28**; रा.7 ने. मार्ग. 12 गते; कुम्भ चं. शतभिषा रात 10:22 तक
श SAT	कार्तिक शुक्ल एकादशी रात 2:57 तक; भद्रा; मुस्लिम 9 बंगला 15; **1**; एकादशी व्रत; राष्ट्रीय 10 नेपाली कार्तिक 15 गते; कुम्भ चं. शतभिषा दिन 2:37 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण तृतीया दिन 12:13 तक; भद्रा; मु. 16 बं. 22; 8; गणेश चतुर्थी व्रत; रा.17 ने. कार्तिक 22 गते; मिथुन चं. सायं 4:32 से, मृगशिरा रात 3:46 तक	मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी रात 4:23 तक; मु. 23 बं. 29; **15**; एकादशी व्रत; रा.24 ने. कार्तिक 29 गते; कन्या चं. प्रातः 7:19 से, उ.फा. रात 2:8 तक	मार्गशीर्ष शुक्ल द्वितीया दिन 3:11 तक; मु. 1 बं. 6; **22**; रा.1 ने. मार्ग. 6 गते; धनु चं. दिन 3:48 से, ज्येष्ठा दिन 3:48 तक	मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी सायं 5:39 तक; मु. 8 बं. 13; **29**; रा.8 ने. मार्ग. 13 गते; मीन चं. दिन 3:59 से, पू.भा. रात 9:50 तक

तारीख :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
सूर्योदय :	6:28	28	29	30	30	31	31	32	33	33	34	34	35	35	36	36	37	38	38	39	39	40	40	41	41	41	42	42	43	43
सूर्यास्त :	5:32	32	31	30	30	29	29	28	27	27	26	26	25	25	24	24	23	22	22	21	21	20	20	19	19	19	18	18	17	17

व्रत-त्यौहार

1.शनि-हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत।
2.रवि-तुलसी विवाह, चातुर्मास व्रत समाप्त।
3.सोम-प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी।
4.मंगल-श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, चौमासी चौदस-जैन।
5.बुध-देव दिपावली, स्नान-दान की कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयंती।
6.गुरु-विशाखा के सूर्य रा.3:55।
8.शनि-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 7:45।
10.सोम-श्रीअन्नपूर्णा देवी व्रता. 16 दिना., श्रीरामेश्वर महादेव दर्शन-पूजन, लोटा भंटा मेला-रामेश्वर।
12.बुध-भैरव अष्टमी व्रत, काल भैरव प्राकट्योत्सव।
14.शुक्र-बाल दिवस, नेहरू जयंती।
15.शनि-उत्पन्ना एका.व्रत-सबका।
16.रवि-वृश्चिक संक्रांति रा.1:47।
17.सोम-प्रदोष व्रत।
18.मंगल-मास शिवरात्रि व्रत।
19.बुध-श्राद्ध की अमावस्या।
20.गुरु-स्नान-दान की अमावस्या, रुद्र व्रत-पीड़िया-प्रदोष काल, अनुराधा के सूर्य दिन 8:50।
21.शुक्र-चन्द्रदर्शन।
24-सोम-वैना.गणेश चतुर्थी व्रत।
25.मंगल-द्वितीय नागपंचमी, श्रीराम विवाहोत्सव।
26.बुध-स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पा षष्ठी।
27.गुरु-मित्र (सूर्य) सप्तमी व्रत।
29.शनि-महानन्दा नवमी, कल्पादि नवमी।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

मेष- संतान से सुख मिलेगा, वैवाहिक जीवन में कष्ट होगा।
वृष- पदोन्नति का योग है, स्वास्थ्य बाधा युक्त रहेगा।
मिथुन-न्यायालय से सम्बन्धित कार्य में सफलता मिलेगी, शरीर स्वस्थ्य रहेगा।
कर्क- कार्य सफल नहीं होंगे, स्त्री का स्वास्थ्य ठीक न रहने से चिंता बढ़ेगी।
सिंह- स्वास्थ्य में सुधार, यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि, आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी।
कन्या- स्त्री एवं परिवार का उत्तम सुख मिलेगा, कोई स्थिर लाभ हो सकता है।
तुला- मास अधिकांश रूप से सकारात्मक रहेगा, बाधित कार्य पूर्ण होंगे।
वृश्चिक-अथक परिश्रम से कारोबार में प्रगति होगी, स्त्री कलह से अशांति रहेगी।
धनु- शनि की ढैया कष्ट कारक है, कुछ न कुछ कष्ट देता रहेगा।
मकर- सुख सुविधाओं के साधन प्राप्त होंगे, माता-पिता का सुख मिलेगा।
कुम्भ- शत्रु विरोधी परास्त हो जायेंगे, मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा।
मीन- अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, शत्रु विरोधी खुद परास्त होंगे।

आकाशी-लक्षण

उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में वर्षा, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा व दिल्ली में कहीं बूदाँ-बाँदी का योग है। पहाड़ों पर बर्फ और मैदानी क्षेत्रों में वर्षा से सर्दी बढ़ेगी।

अक्टूबर-2025

रवि		5	12	19	26
सोम		6	13		
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु		9	16	23	30
शुक्र	3		17	24	31
शनि	4	11	18	25	

दिसम्बर-2025

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	31
गुरु	4	11	18		
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

चर्म रोग के लिए घरेलू उपचार

अखरोट

दही

नीम की पत्ती

शिमलामिर्च

विटामिन-C सन्तरा

विस्तृत रोग + दवा दिसम्बर के पीछे देखें।

कीवी

शकरकन्द

नींबू

कच्चा नमक अर्थात् शलाद या चिप्स इत्यादि में ऊपर से नमक डालकर नहीं खाना चाहिए। यह चर्मरोग व वी.पी. के लिए नुकसान देह है।

जीवनोपयोगी कुछ आवश्यक बातें

1. देवपूजा पूरब या उत्तर मुख होकर और पितृपूजा दक्षिण मुख होकर करनी चाहिये।
2. ताँबा मंगलस्वरूप, पवित्र एवं भगवान् को बहुत प्रिय है। ताँबे के पात्र में रखकर जो वस्तु भगवान् को अर्पण की जाती है, उससे भगवान् को बड़ी प्रसन्नता होती है। इसलिये भगवान् को जल आदि वस्तुएँ ताँबे के पात्र में रखकर अर्पण करनी चाहिये।
3. सदा पूर्व या दक्षिण की तरफ सिर करके सोना चाहिये। उत्तर या पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से आयु क्षीण होती है तथा शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं।
4. पूर्व की तरफ सिर करके सोने से विद्या प्राप्त होती है। दक्षिण की तरफ सिर करके सोने से धन तथा आयु की वृद्धि होती है। पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से प्रबल चिन्ता होती है। उत्तर की तरफ सिर करके सोने से हानि तथा मृत्यु होती है अर्थात् आयु क्षीण होती है।
5. बाँस या पलाश की लकड़ी पर कभी नहीं सोना चाहिये।
6. दिन में और सूर्योदय के बाद सोना आयु को क्षीण करने वाला है। प्रातःकाल और रात्रि के आरम्भ में भी नहीं सोना चाहिये।
7. भोजन सदा पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके करना चाहिये।
8. परोसे हुए अन्न की निन्दा नहीं करनी चाहिये। वह स्वादिष्ट हो या न हो, प्रेम से भोजन कर लेना चाहिये। जिस अन्न की निन्दा की जाती है, उसे राक्षस खाते हैं।
9. भोजन करते समय मौन रहना चाहिये।
10. अधिक भोजन करना आरोग्य, आयु, स्वर्ग और पुण्य का नाश करने वाला तथा लोक में निन्दा कराने वाला है। इसलिये अति भोजन का परित्याग करना चाहिये।
11. थोड़ा भोजन करने वाले को छः गुण प्राप्त होते हैं—आरोग्य, आयु, बल और सुख तो मिलते ही हैं, उसकी सन्तान सुन्दर होती है तथा 'यह बहुत खाने वाला है' ऐसा कहकर लोग उसपर आक्षेप नहीं करते।
12. खड़े होकर जल नहीं पीना चाहिये।
13. जो एक हाथ से प्रणाम करता है, उसके जीवन भर का किया हुआ पुण्य निष्फल हो जाता है। पैर हमेशा दोनों हाँथों से छूना चाहिये।
14. किसी भी प्राणी के ऊपर से लाँघकर नहीं जाना चाहिये।
15. किसी भी शुभ या अशुभ वस्तु को न तो लाँघे और न उस पर पैर ही रखे।
16. आचार्य, पिता, माता और बड़ा भाई—इनका दुःखी होकर भी कभी अपमान न करे। आचार्य परमात्मा की मूर्ति, पिता ब्रह्मा की मूर्ति, माता पृथ्वी की मूर्ति और भाई अपनी ही मूर्ति है।
17. जो स्त्रियाँ घर के बर्तनों को सुव्यवस्थित रूप से न रखकर इधर-उधर बिखेरे रहती है, सोच-समझकर काम नहीं करतीं, सदा अपने पति के प्रतिकूल ही बोलती हैं, दूसरों के घरों में घूमने-फिरने में रुचि रखती हैं और लज्जा को सर्वथा छोड़ देती हैं, उन्हें लक्ष्मी त्याग देती हैं।
18. विवाह और विवाद सदा समान व्यक्तियों से ही होना चाहिये।
19. स्त्री को चाहिये कि वह धोबिन, कुलटा, अधम और कलहप्रिय स्त्रियों को कभी अपनी सखी न बनाये।
20. स्त्रियों का अपने भाई-बन्धुओं के यहाँ अधिक दिनों तक रहना उनकी कीर्ति, शील तथा पातिव्रत्य-धर्म का नाश करने वाला होता है।
21. रात्रि में भरपेट भोजन नहीं करना चाहिये।
22. कोई अतिथि घर पर आ जाय तो उसको प्रेमभरी दृष्टि से देखे। मन से उसका हित-चिन्तन करे। मीठी वाणी बोलकर उसे सन्तुष्ट करे। जब वह जाने लगे, तब कुछ दूर तक उसके पीछे जाय और जब तक वह रहे, तब तक उसके स्वागत-सत्कार में लगा रहे—ये पाँच काम करना गृहस्थ के लिये 'पञ्चदक्षिण-यज्ञ' कहलाता है।
23. अपनी ही वाणी से अपने गुणों का वर्णन करना अपने ही हाथों अपनी हत्या करने के समान है।
24. स्वजनों के साथ विरोध, बलवान् के साथ स्पर्धा और स्त्री, बालक, वृद्ध या मूर्ख के साथ विवाद कभी नहीं करना चाहिये।
25. शत्रु के भी गुणों को ग्रहण करना चाहिये और गुरु के भी दुर्गुणों का त्याग करना चाहिये।
26. स्त्री संग, भोजन और मल-मूत्र का त्याग सदा एकान्त में करना चाहिये।
27. छोटी-छोटी बात के लिये शपथ नहीं लेनी चाहिये। व्यर्थ शपथ लेने वाला मनुष्य इहलोक और परलोक में भी नष्ट होता है।
28. कुम्हड़ा काटने या फोड़ने वाली स्त्री और दीपक बुझाने वाला पुरुष कई जन्मों तक रोगी और दरिद्र होते हैं।
29. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अथवा नीच जाति में उत्पन्न हुए पुरुष से भी यदि ज्ञान मिलता हो तो उसे श्रद्धापूर्वक ग्रहण करना चाहिये।
30. कल किया जाने वाला काम आज और सायंकाल में किया जाने वाला काम प्रातःकाल में ही पूरा कर लेना चाहिये; क्योंकि मौत यह नहीं देखती कि इसका काम अभी पूरा हुआ है या नहीं?
31. अनेक कार्य उपस्थित होने पर बुद्धिमान मनुष्य को आवश्यक कार्य पहले तथा शीघ्रता से करना चाहिये और न करने योग्य कार्य पीछे तथा देरी से करना चाहिये।
32. पत्र, पुष्प और फल को देवता पर उल्टा मुख करके नहीं चढ़ाना चाहिये। वे पत्र-पुष्पादि जिस रूप में उत्पन्न हों, उसी रूप में उन्हें देवता पर चढ़ाना चाहिये।
33. स्नान के बाद पुष्पचयन न करे; क्योंकि वे पुष्प देवता पर चढ़ाने योग्य नहीं माने गये हैं।
34. दूसरों से गाली सुनकर भी स्वयं उन्हें गाली नहीं देनी चाहिये। गाली को सहन करने वाले का रोका हुआ क्रोध ही गाली देने वाले को जला डालता है और उसके पुण्य को भी ले लेता है।
35. ये नौ बातें गोपनीय हैं, इन्हें प्रकट नहीं करना चाहिये—अपनी आयु, धन, घर का कोई भेद, मन्त्र, मैथुन, औषधि, तप, दान तथा अपमान।
36. अपनी स्त्री, भोजन और धन—इन तीनों में सन्तोष करना चाहिये; परन्तु अध्ययन (स्वाध्याय), तप (जप) और दान—इन तीनों में सन्तोष नहीं करना चाहिये।
37. मनुष्य को पाँच वर्ष तक पुत्र का प्यार से पालन करना चाहिये, दस वर्ष तक उसे अनुशासित रखना चाहिये और सोलह वर्ष की अवस्था प्राप्त होने पर उसके साथ मित्र की तरह व्यवहार करना चाहिये।
38. घर में टूटी-फूटी अथवा अग्नि से जल हुई प्रतिमा की पूजा नहीं करनी चाहिये। ऐसी मूर्ति की पूजा करने से गृहस्वामी के मन में उद्वेग या अनिष्ट होता है।
39. घर में प्रतिदिन पूजा के लिये वही प्रतिमा कल्याणदायिनी होती है, जो स्वर्ण आदि धातुओं की बनी हो तथा कम-से-कम अँगूठे के बराबर तथा अधिक-से-अधिक एक बित्ते की हो। जो टेढ़ी हो, जली हुई हो, खण्डित हो, जिसका मस्तक या आँख फूटी हुई हो अथवा जिसे चाण्डाल आदि अस्पृश्य मनुष्यों ने छू दिया हो, वैसी प्रतिमा की पूजा नहीं करनी चाहिये।
40. घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्यप्रतिमा, तीन देवी-प्रतिमा, दो गोमती-चक्र और दो शालग्राम का पूजन नहीं करना चाहिये। इनका पूजन करने से गृहस्वामी को दुःख, अशान्ति की प्राप्ति होती है।
41. विष्णु के मन्दिर की चार बार, शंकर के मन्दिर की आधी बार, देवी के मन्दिर की एक बार, सूर्य के मन्दिर की सात बार और गणेश के मन्दिर की तीन बार परिक्रमा करनी चाहिये।
42. घी का दीपक देवता के दायें भाग में और तेल का दीपक बायें भाग में रखना चाहिये।
43. कलह करने से आयु, धन, मित्र, यश तथा सुख का नाश होता है। अतः कलह कभी न करे।
44. विद्या चाहने वाले को क्षण का और धन चाहने वाले को कण का त्याग नहीं करना चाहिये, प्रत्युत क्षण-क्षण विद्या का अभ्यास और कण-कण धन का संग्रह करना चाहिये।
45. कभी भी छिपकर किसी की बातें नहीं सुननी चाहिये। दूसरों की गुप्त बातों को जानने की चेष्टा नहीं करनी चाहिये और जानने पर उन्हें छिपाना चाहिये।
46. अधिक साहस, अधिक शयन, अधिक जागरण, अधिक स्नान और अधिक भोजन न करे।
47. भगवान की आरती पंचदीप से करनी चाहिए।

निरोग रहने के दोहे

रक्तचाप बढ़ने लगे, तब मत सोचो भाय।
सौगंध राम की खाइ के, तुरंत छोड़ दो चाय॥
सुबह खाइये कुंवर सा, दोपहर यथा नरेश।
भोजन लीजै रात में, जैसे रंक सुरेश॥
घूंट-घूंट पानी पियो, रह तनाव से दूर।
एसिडिटी या मोटापा, होवें चकनाचूर॥
लौकी का रस पीजिये, चोकर युक्त पिसान।
तुलसी, गुड़, संधा नमक, हृदय रोग निदान॥
रोज मुलहठी चूसिये, कफ बाहर आ जाए।
बने सुरीला कंठ भी, सबको लगत सुहाए॥
भोजन करके खाइये, सौंफ, गुड़, अजवान।
पत्थर भी पच जाएगा, जानै सकल जहान॥
तुलसी का पत्ता करे, यदि हरदम उपयोग।
मिट जाते हैं हर उम्र में, शरीर के सारे रोग॥
जो नहावें गर्म जल से, तन मन हो कमजोर।
आँख ज्योति कमजोर हो, शक्ति घटे चहुँओर॥
ऊर्जा मिलती है बहुत, पियें गुनगुना नीर।
कब्ज खत्म हो पेट की, मिट जाए हर पीर॥
प्रातः काल पानी पियें, घूंट-घूंट कर आप।
बस दो-तीन गिलास है, हर औषधि का बाप॥
चैत्र माह में नीम की पत्ती हर दिन खावे।
ज्वर, डेंगू या मलेरिया, बारह मील भगावे॥
सौ वर्षों तक वह जिए, जो लेते नाक से सांस।
अल्पकाल जीवे वह, जो मुँह से श्वासोच्छवास॥
भोजन करके रात में, घूमें कदम हजार।
डॉक्टर, ओझा, वैद्य का लुट जाए व्यापार॥
भोजन करें धरती पर, अल्थी-पलथी मार।
चबा-चबा कर खाइये, वैद्य न झाँके द्वार॥
भोजन करके जोहिये, केवल घण्टा-डेढ़।
पानी इसके बाद पी, ये औषधि का पेड़॥
देर रात तक जागना, रोगों का जंजाल।
अपच, आँख के रोग संग, तन भी रहे निढाल॥
फल या मीठा खाइके, तुरंत न पीजै नीर।
ये सब छोटी आंत में, बनते विषधर तीर॥
एल्यूमिन के पात्र का, करता है जो उपयोग।
आमंत्रित करता सदा, वह अड़तालीस रोग॥
अलसी, तिल, नारियल, घी, सरसों का तेल।
इसका सेवन आप करें, नहीं होगा हार्ट फेल॥

* रोज पका केला खाने से शारीरिक दुर्बलतारूपी ल्यूकोरिया रोग व पुरुषों के प्रजनन शुक्राणु व कैल्शियम संबंधी रोगों को दूर करता है।
* ज्यादा से ज्यादा मीठी नीम/करी पत्ती अपने सब्जियों में डालें, सभी का स्वास्थ्य ठीक करेगा।
* ज्यादा से ज्यादा चीजें लोहे की कढ़ाई में ही बनाएँ, आयरन की कमी किसी को नहीं होगी।
* रिफाइंड तेल के बजाय केवल तिल, मूंगफली, सरसों और नारियल तेल का प्रयोग करें। रिफाइंड में बहुत केमिकल होते हैं।
* खाना खाने के बाद कुल्ला करके ही भोजन समाप्त करे, दाँत संबंधित रोग नहीं होंगे।
* लौकी, धनिया, पुदीना, शिमला मिर्च को पानी के साथ पीसकर रोज एक कप इसका रस बासी मुँह पियें इससे किडनी, फैटीलिवर, कील-मुँहासे एवं अन्य चर्म रोग की बिमारी से छुटकारा मिलेगा।

किस मास में क्या न खाएँ

चैते गुड़, वैशाखे तेल, जेठ के पंथ, अषाढ़े बेल।
सावन साग, भादो मही, कुवार करेला, कार्तिक दही॥
अगहन जीरा, पूसै धनिया, माघै मिश्री, फाल्गुन चना।
जो कोई इतने परिहरै, ता घर बैद पैर नहिं धरै॥

द्वादश ज्योतिर्लिंग यात्रा

भगवान् शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों का अपना अलग ही महत्व है, पुराणों और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन 12 स्थानों पर जो शिवलिंग मौजूद हैं उनमें ज्योति के रूप में स्वयं भगवान् शिव विराजमान हैं, यही कारण है कि इन्हें ज्योतिर्लिंग कहा जाता है, इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन मात्र से ही श्रद्धालुओं के सभी पाप दूर हो जाते हैं।

1. सोमनाथ ज्योतिर्लिंग (गुजरात)—गुजरात के सौराष्ट्र में अरब सागर के तट पर स्थित है, देश का पहला ज्योतिर्लिंग जिसे सोमनाथ के नाम से जाना जाता है, शिव पुराण के अनुसार जब चंद्रमा को प्रजापति दक्ष ने क्षय रोग का श्राप दिया था, तब इसी स्थान पर शिवजी की पूजा और तप करके चंद्रमा ने श्राप से मुक्ति पाई थी, ऐसी मान्यता है कि स्वयं चंद्रदेव ने इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना की थी।

2. मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग (आंध्र प्रदेश)—आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के किनारे श्रीशैल पर्वत पर स्थित है मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग। इसे दक्षिण का कैलाश भी कहते हैं और इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन मात्र से सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

3. महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग (मध्य प्रदेश)—मध्य प्रदेश उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर स्थित है महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग। ये एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है, जहाँ रोजाना होने वाली भस्म आरती विश्व भर में प्रसिद्ध है।

4. ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग (मध्य प्रदेश)—ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में स्थित है और नर्मदा नदी के किनारे पर्वत पर स्थित है, मान्यता है कि तीर्थ यात्री सभी तीर्थों का जल लाकर ओंकारेश्वर में अर्पित करते हैं तभी उनके सारे तीर्थ पूरे माने जाते हैं।

5. केदारनाथ ज्योतिर्लिंग (उत्तराखण्ड)—केदारनाथ ज्योतिर्लिंग उत्तराखंड में अलखनंदा और मंदाकिनी नदियों के तट पर केदार नाम की चोटी पर स्थित है, यहाँ से पूर्वी दिशा में श्री बद्री विशाल का बद्रीनाथधाम मंदिर है, मान्यता है कि भगवान केदारनाथ के दर्शन किए बिना बद्रीनाथ की यात्रा अधूरी और निष्फल है।

6. भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग (महाराष्ट्र)—भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग, महाराष्ट्र में पूणे से करीब 100 किलोमीटर दूर डाकिनी में स्थित है, यहाँ स्थित शिवलिंग काफी मोटा है, इसलिए इसे मोटेश्वर महादेव भी कहा जाता है।

7. विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग (उत्तर प्रदेश)—उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर जिसे धर्म नगरी काशी के नाम से जाना जाता है, यहाँ पर गंगा नदी के तट पर स्थित है बाबा विश्वनाथ का मंदिर। जिसे विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के नाम से जाना जाता है, ऐसी मान्यता है कि कैलाश छोड़कर भगवान् शिव ने यहीं अपना स्थाई निवास बनाया था।

8. त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग (महाराष्ट्र)—त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के नासिक से 30 किलोमीटर दूर पश्चिम में स्थित है, गोदावरी नदी के किनारे यह मंदिर काले पत्थरों से बना है, शिवपुराण में वर्णन है कि गौतम ऋषि और गोदावरी की प्रार्थना पर भगवान् शिव ने इस स्थान पर निवास करने का निश्चय किया और त्र्यंबकेश्वर नाम से विख्यात हुए।

9. वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग (झारखंड)—वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग झारखंड के देवघर में स्थित है, यहाँ के मंदिर को वैद्यनाथधाम के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि एक बार रावण ने तप के बल से शिवजी को लंका ले जाने की कोशिश की, लेकिन रास्ते में व्यवधान आ जाने से शर्त के अनुसार शिवजी यहीं स्थापित हो गए।

10. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग (गुजरात)—नागेश्वर मंदिर गुजरात में बड़ौदा क्षेत्र में गोमती-द्वारका के करीब स्थित है, धार्मिक पुराणों में भगवान् शिव को नागों का देवता बताया गया है और नागेश्वर का अर्थ होता है नागों का ईश्वर। कहते हैं कि भगवान् शिव की इच्छा अनुसार ही इस ज्योतिर्लिंग का नामकरण किया गया है।

11. रामेश्वर ज्योतिर्लिंग (तमिलनाडु)—भगवान् शिव का 11वां ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु के रामनाथम नामक स्थान में है। ऐसी मान्यता है कि रावण की लंका पर चढ़ाई से पहले भगवान् राम ने जिस शिवलिंग की स्थापना की थी, वही रामेश्वर के नाम से विश्व विख्यात हुआ।

12. घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग (महाराष्ट्र)—घृष्णेश्वर ज्योतिर्लंग महाराष्ट्र के संभाजीनगर के समीप दौलताबाद के पास स्थित है। भगवान् शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से यह अंतिम ज्योतिर्लिंग है। इस ज्योतिर्लिंग को घुश्मेश्वर के नाम से भी जाना जाता है।

ठाकुर प्रसाद

रूपेश पंचाङ्ग

दिसम्बर 12 2025 DECEMBER

विक्रम संवत् 2082	श्रीशालिवाहन शाके 1947	फसली सन् 1433	इस्लामी हिजरी सन् 1447	बंगला संवत् 1432	नेपाली संवत् 1146
मार्गशीर्ष शुक्ल 11 से पौष शुक्ल 12 तक। ता. 5 से पौष मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय अग्रहायण 10 से पौष 10 तक। ता. 22 से पौष मास प्रारम्भ।	प्र. मघर 26 से प्र. पुस 27 तक। ता. 5 से प्र. पुस आरम्भ।	जमादि उस्सानी 10 से रज्जब 10 तक। ता. 22 से रज्जब माह शुरू।	मार्गशीर्ष 15 से पौष 15 तक। ता. 17 से पौष मास प्रारम्भ।	मार्गशीर्ष 15 गते से पौष 16 गते तक। ता. 16 से पौष मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			31		
16			योग		

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	31

भद्रा-विचार

ता.1 दिन 2:21 तक।
ता.4 प्रातः 7:41 से सायं 6:30 तक।
ता.7 दिन 11:53 से रात 10:55 तक।
ता.10 रात 7:10 से ता.11 प्रातः 6:59 तक।
ता.14 दिन 8:12 से रात 8:46 तक।
ता.17 रात 2:25 से ता.18 दिन 3:31 तक।
ता.23 रात 10:43 से ता.24 दिन 10:53 तक।
ता.27 दिन 8:53 से रात 8:8 तक।
ता.30 दिन 2:20 से रात 1:13 तक।

तेजी-मंदी

धान्य-गल्ला रुई वस्त्र, रसपदार्थ, धातु, सोना-चाँदी, घी-गुड़, खाड़-जौ-चना-चावल तथा केराना तेज होगा।

पंचक विचार

ता. 1 को रात 7:44 तक।
ता.24 को सायं 5:41 से।
ता.28 को रात 3:44 तक।

रवि SUN	(पंचक विचार)	**7** पौष कृष्ण तृतीया रात 10:55 तक, भद्रा, कर्क चं. रात 3:31 से, आर्द्रा दिन 10:22 तक	**14** पौष कृष्ण दशमी रात 8:46 तक, भद्रा, तुला चं. रात 11:54 से, हस्त दिन 10:56 तक	**21** पौष शुक्ल प्रतिपदा दिन 8:21 तक, चन्द्रदर्शन, धनु चं. पू.षा. रात 3:5 तक	**28** पौष शुक्ल अष्टमी प्रातः 7:23 तक, मेष चं. रात 3:44 से, रेवती रात 3:44 तक
सोम MON	**1** मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी दिन 2:20 तक, भद्रा, एकादशी व्रत, मेष चं. रात 7:44 से, रेवती रात 7:44 तक	**8** पौष कृष्ण चतुर्थी रात 9:18 तक, गणेश चतुर्थी व्रत, कर्क चं. पुनर्वसु दिन 9:14 तक	**15** पौष कृष्ण एकादशी रात 10:22 तक, एकादशी व्रत, तुला चं. चित्रा दिन 12:51 तक	**22** पौष शुक्ल द्वितीया दिन 9:40 तक, भद्रा, मकर चं. दिन 9:28 तक, उ.षा. रात 4:36 तक	**29** पौष शुक्ल दशमी रात 3:27 तक, भद्रा, मेष चं. अश्विनी रात 2:20 तक
मंगल TUE	**2** मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी दिन 12:16 तक, प्रदोष व्रत, मेष चं. अश्विनी सायं 6:18 तक	**9** पौष कृष्ण पंचमी रात 8:1 तक, कर्क चं. पुष्य दिन 8:26 तक	**16** पौष कृष्ण द्वादशी रात 12:17 तक, धनु संक्रान्ति, तुला चं. स्वाती दिन 3:9 तक	**23** पौष शुक्ल तृतीया दिन 10:33 तक, मकर चं. श्रवण रात 5:37 तक	**30** पौष शुक्ल एकादशी रात 1:13 तक, एकादशी व्रत, वृष चं. रा.शे. 6:22 से, भरणी रात 12:46 तक
बुध WED	**3** मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी दिन 10:1 तक, वृष चं. रात 10:16 तक, भरणी सायं 4:41 तक	**10** पौष कृष्ण षष्ठी रात 7:10 तक, भद्रा, सिंह चं. प्रा. 7:58 से, श्लेषा प्रातः 7:58 तक	**17** पौष कृष्ण त्रयोदशी रात 2:35 तक, भद्रा, प्रदोष व्रत, वृश्चिक चं. दिन 11:3 से, विशाखा सायं 5:41 तक	**24** पौष शुक्ल चतुर्थी दिन 10:52 तक, कुम्भ चं. सायं 5:41 से, धनिष्ठा रा.शे. 6:5 तक	**31** पौष शुक्ल द्वादशी रात 10:51 तक, वृष चं. कृत्तिका रात 11:7 तक
गुरु THU	**4** मार्ग.शुक्ल चतुर्दशी प्रातः 7:4 तक, पूर्णिमा रा.शे. 5:18 तक, भद्रा, स्नान-दान पूर्णिमा, वृष चं. कृत्तिका दिन 3:2 तक	**11** पौष कृष्ण सप्तमी सायं 6:48 तक, भद्रा, सिंह चं. मघा प्रातः 7:58 तक	**18** पौष कृष्ण चतुर्दशी रात 4:35 तक, भद्रा, वृश्चिक चं. अनुराधा रात 8:19 तक	**25** पौष शुक्ल पंचमी दिन 10:41 तक, भद्रा, बड़ा दिन, कुम्भ चं. शतभिषा रा.शे. 6:7 तक	(मूल विचार)
शुक्र FRI	**5** पौष कृष्ण प्रतिपदा रात 3:1 तक, मिथुन चं. रात 12:35 से, रोहिणी दिन 1:22 तक	**12** पौष कृष्ण अष्टमी सायं 6:56 तक, कन्या चं. दिन 2:41 से, पू.फा. दिन 8:26 तक	**19** पौष कृष्ण अमावस्या रा.शे. 6:37 तक, अमावस्या, धनु चं. रात 10:51 से, ज्येष्ठा रात 10:51 तक	**26** पौष शुक्ल षष्ठी दिन 10:0 तक, भद्रा, मीन चं. रात 11:47 से, पू.भा. रा.शे. 5:39 तक	(सूर्य नक्षत्र)
शनि SAT	**6** पौष कृष्ण द्वितीया रात 12:51 तक, मिथुन चं. मृगशिरा दिन 11:47 तक	**13** पौष कृष्ण नवमी रात 7:38 तक, कन्या चं. उ.फा. दिन 9:27 तक	**20** पौष शुक्ल प्रतिपदा समस्त, धनु चं. मूल रात 1:9 तक	**27** पौष शुक्ल सप्तमी दिन 8:53 तक, मीन चं. उ.भा. रात 4:52 तक	(विवाह मुहूर्त)

मूल विचार

मासारम्भ से
ता.2 को अश्विनी रात 6:18 तक।
ता.9 को श्लेषा प्रातः 8:26 से ता.11 को मघा प्रातः 7:58 तक।
ता.18 को ज्येष्ठा रात 8:19 से ता.20 को मूल रात 1:9 तक।
ता.27 को रेवती रात 4:52 से ता.29 को अश्विनी रात 2:20 तक।

सूर्य नक्षत्र

ता.3 को ज्येष्ठा दिन 12:1 से।
ता.16 को मूल व धनु राशि दिन 1:50 से।
ता.29 को पू. षा. दिन 11:41 से।

विवाह मुहूर्त

ता.1,4,5,6।
आगे खरमास दोष है।

व्रत-त्यौहार

1.सोम-मोक्षदा एकादशी व्रत, मौनी एकादशी-जैन, गीता जयंती।
2.मंगल-भौम प्रदोष व्रत।
3.बुध-कपर्दीश्वर महादेव दर्शन ज्येष्ठा के सूर्य दिन 12:1।
4.गुरु-स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, श्रीदत्तात्रेय प्राकट्योत्सव, अन्तर्गृही यात्रा काशी।
8.सोम-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रात 8:47।
12.शुक्र-शुक्रास्त पश्चिम में रा.12:7।
14.रवि-पौष दशमी-जैन।
15.सोम-सफला एकादशी व्रत, पार्श्वनाथ जयंती।
16.मंगल-धनु संक्रांति दिन 1:50, खरमास प्रारम्भ।
17.बुध-प्रदोष व्रत।
18.गुरु-मास शिवरात्रि व्रत।
19.शुक्र-स्नान-श्राद्ध की अमावस्या।
21.रवि-चन्द्रदर्शन।
23.मंगल-वैना. गणेश चतुर्थी व्रत।
25.गुरु-बड़ा दिन (क्रिसमस-डे), पं. मदनमोहन मालवीय जयंती।
27.शनि-गुरु गोविन्द सिंह जयंती-प्रा.मत।
29.सोम-पू.षा. के सूर्य दिन 11:41।
30.मंगल-पुत्रदा एकादशी व्रत।
31.बुध-नववर्ष की पूर्व सन्ध्या।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

मेष- संतान की प्रगति होगी, सरकारी कर्मचारियों की व्यस्तता बढ़ेगी।
वृष- आय से व्यय ज्यादा होने से मन उदास रहेगा, व्यवसाय में परिवर्तन होगा।
मिथुन- शुभ एवं अच्छे कार्यों में रुचि बढ़ेंगी ईश्वर के प्रति आस्था में कमी आयेगी।
कर्क- न्यायालय के कार्य में पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी, पुत्रों का सहयोग नहीं मिलेगा।
सिंह- शनि की ढैया का प्रभाव रहेगा, मित्रों से वियोग, कुटुम्बीय कलह होगा।
कन्या- भूमि, भवन, वाहन के प्राप्ति का योग है, नेत्र रोग से कष्ट होगा।
तुला- स्थायी सम्पत्ति का लाभ होगा, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
वृश्चिक-घरेलू अपव्यय से परेशानी बढ़ेगी यात्रा में कष्ट सम्भव है।
धनु- नौकरी में प्रतिकूल स्थानान्तरण सम्भव है, नेत्र कष्ट की सम्भावना है।
मकर- राजकीय एवं न्यायालय सम्बन्धित कार्यों में सफलता मिलेगी।
कुम्भ- अनावश्यक भ्रमण करना पड़ेगा, शनि आप के राशि का स्वामी है।
मीन- शनि की साढ़े साती के प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानियाँ आती रहेंगी।

आकाशी-लक्षण

मौसम में अचानक गिरावट, पहाड़ों पर बर्फवारी, पूर्वी-दक्षिणी हिमांचल प्रदेश, कश्मीर, गढ़वाल, लद्दाख में भीषण वर्षा, घना कुहरा व उत्तराखण्ड शीत लहर की चपेट में रहेगा।

तारीख	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
सूर्योदय	6:43	44	44	45	45	45	45	46	46	46	46	46	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47
सूर्यास्त	5:17	16	16	15	15	15	15	14	14	14	14	14	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13

नवम्बर-2025

रवि	30	2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध			12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

विज्ञापन 2025

←विज्ञापन हेतु स्थान-10½" × 2"

पंचांग पर नाम पता छपवाकर बाँटने वाले इच्छुक कीटि, क्लब, संस्था व व्यापारिक वर्ग प्रकाशक से सम्पर्क करें पंचांग साइज 11"×17" चार रंग में छपा हुआ। मो. नं. 07233013544 0542-2392543,2392471

जनवरी-2026

रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	
मंगल		6	13	20	27
बुध		7		21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

CLEANSE THE LIVER

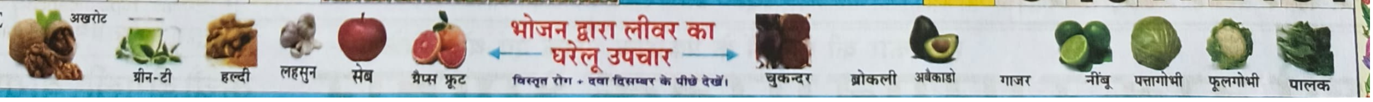

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार–

भारत का भविष्यफल सन् 2025 ई.

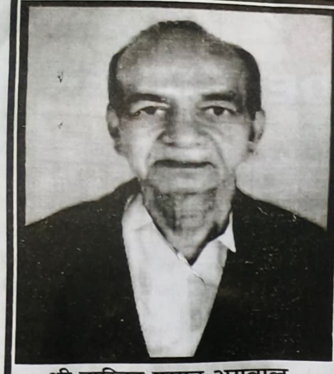

श्री द्वारिका प्रसाद अग्रवाल
पुत्र- स्व. ठाकुर प्रसाद गुप्त

भोजन द्वारा रोगों का उपचार

डाईबिटीज का घरेलू उपचार– 1. एक चम्मच मेथी या दो आम की पत्ती, आधा गिलास पानी में रात को भिंगोकर सुबह खाली पेट पीयें। **2.** दालचीनी, सेब व जामुन का सिरका, जामुन व जामुन के बीज का चूर्ण। **3. फल-** सन्तरा, अमरूद, आँवला, आडू, चकोतरा। **4. सब्जी-** करेला, नींबू, भिण्डी, प्याज, खीरा, टमाटर व अन्य हरी सब्जी खायें। **5.** चावल- ब्राउन राइस, कुट्टू का चावल व सभी छिलके वाली दालों का प्रयोग करें।

कंधा, पीठ एवं जोड़ों के दर्द का घरेलू उपचार–ये रोग विटामिन-D एवं कैल्शियम की कमी से होता है। सुबह की धूप, काली तिल, मशरूम, दही, सन्तरा, शकरकन्द, कीवी, शिमला मिर्च। काडलीवर आयल (दवा की दुकान पर मिलता है), अण्डा, मछली (सैलमन, मैक्रील, सारडीन, टूना) (कूलर एवं Ac के सामने न सोएँ, ठण्डी चीजों का सेवन न करें)।

कोलेस्ट्राल कन्ट्रोल हार्ट की बीमारी को दूर रखे– अखरोट, बादाम, अलसी (तीसी), दालचीनी, ग्रीन-टी, काली तिल, लहसुन, सेब, तरबूज, केला, सन्तरा, कीवी, अबैकाडो, गाजर, टमाटर, पत्तागोभी, प्याज, शिमला मिर्च, खीरा, लालमिर्च, हरी मटर, बीन्स ये सभी चीजें मोटाई व चिकनाई को काटती हैं। (बिस्कुट, नमकीन, कोल्डड्रिंक्स एवं तली हुई चीजों का परहेज करें।) सभी सब्जियों का कच्चा सलाद खाना ज्यादा फायदेमन्द है।

हाई-वी.पी. के लिए घरेलू उपचार– तीसी (अलसी), मेथी या अड़हुल का फूल पानी में रात को भिगोकर सुबह पीये, नारियल का पानी, दही, लहसुन, किशमिश, अमरूद, केला, तरबूज, सन्तरा, नीबू, आँवला, अबैकाडो, प्याज, टमाटर, कीवी, शकरकन्द, ब्रोकली, करैला, सहजन। (कच्चा नमक एवं तली चीजें न खाएँ। अलग से नमक भी न खाएँ।) **नोट-** धूम्रपान, शराब, पान-मसाला न खायें क्योंकि इन सबसे वी.पी. बढ़ता है।

दिमागी ताकत के लिए– अखरोट, बादाम, अनार, सफेद तिल, कद्दू का बीज, दही, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, काली तिल। (रात में बरफ व ठंढी चीजें न पीये। जिनको नींद की शिकायत हो)।

अनिद्रा के लिए– मछली, अलसी (तीसी), कद्दू का बीज, दही, शहद, बादाम।

थाइराइड के लिए– नारियल, काडलीवर आयल, (अश्वगन्धा जड़ी का प्रयोग दस दिन से ज्यादा न करें)। पत्तागोभी, हरी गोभी (ब्रोकली) कच्चा न खाएँ।

पैरालाइसिस (लकवा)– लहसुन, काली तिल, बैगन, मूली। (किसी एक्सपर्ट की राय से नियमित व्यायाम करें)।

स्त्री रोग– सन्तरा, नींबू, करौंदा, अमरख व अन्य सभी खट्टे फल तथा ठंढई-खरबूजा के बीज-100 ग्राम, तरबूजा के बीज-100 ग्राम, छोटी इलायची व गोल मिर्च स्वादानुसार, मोटी सौंफ-100 ग्राम, पोस्ता दाना-100 ग्राम, गुलाब की पत्ती-50 ग्राम।

चर्म रोगों के लिए घरेलू उपचार–ये रोग विटामिन-C की कमी से होता है। सन्तरा, शिमला मिर्च, दही, अखरोट, नीम की पत्ती, कीवी, शकर-कन्द, नींबू व सभी खट्टे फल जैसे- मुँहासे व अन्य सभी चर्म रोग में लाभदायक है। **न खाएँ-** कच्चा नमक, चाय, चाकलेट, कोल्ड्रिंक, तली चीजें, मलाई, खोवा, अजवाइन एवं मांस इत्यादि। **पानी ज्यादा पियें।**

शरीर के विकार को दूर करने वाले भोजन– सभी खट्टे फल जैसे- नीबू, संतरा इत्यादि, शैलजम, शिमला मिर्च, अखरोट, हल्दी, काली मिर्च, लहसुन, खीरा, हरी गोभी (ब्रोकली), छिलके वाली दाल, गेहूँ की दलिया।

शरीर को ठंडा रखने वाले फल एवं सब्जियाँ– नारियल, खरबूजा, तरबूजा, संतरा, नींबू, आम, कीवी, सेब, खीरा, टमाटर, पत्तागोभी, ब्रोकली, कटहल, गेहूँ के ज्वार इत्यादि।

ऊपर लिखी चीजों को नित्य भोजन में शामिल कर बदल-बदल कर लेने से रोग जल्द ही दूर हो जायेंगे।

विक्रम संवत् 2082 का आरम्भ 30 मार्च 2025, रविवार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से हो रहा है। इस वर्ष कालयुक्त नामक संवत्सर होगा। नित्य संकल्पादि विनियोग में कालयुक्त नामक संवत्सर का प्रयोग होगा। इस वर्ष राजा मंत्री दोनों रवि है। अतः केन्द्र सत्ता व राज्यों के मध्य सामन्जस्य रहेगा। जगल्लग्न के विचार से विश्व में सामरिक गतिविधियां तेज होंगी। प्रमुख राष्ट्रों की विदेश नीति प्रतिकूल होगी।

पश्चिम राष्ट्रों में युद्धादि भय होगा। यवन तथा मुस्लिम राष्ट्रों में मँहगाई से जनता को कष्ट होगा। कहीं पदत्याग तथा राजनैतिक हत्याकाण्ड की घटना घटित होगी। किसी मुस्लिम राष्ट्र के प्रधान नेता के समक्ष विषम परिस्थितियाँ प्रगट होंगी। आरोपों के साथ मानहानि होगी। लोकहित में कार्य होंगे। सरकारी कोष तथा उद्योग धन्धों में वृद्धि होगी। सूचना प्रसारण तथा प्रकाशन हेतु मास कष्टकारी है। पशुओं को रोग होंगे। ज्वरादि का प्रकोप बढ़ेगा। उत्तर पश्चिम भाग में जन उपद्रव व अग्निकांड से क्षति संभव है। विपक्षी प्रबल होंगे। धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं, चिकित्सालयों तथा सार्वजनिक उपक्रमों के संचालन में धन की कमी होगी। बन्दी सुधार गृहों में अराजकता होगी। कर्मचारियों द्वारा हड़ताल व आन्दोलन होंगे। किसी विशिष्ट व्यक्ति का निधन संभव है। राष्ट्रविरोधी षडयंत्रकारी कार्य होंगे। बजट जन अपेक्षा अनुरूप नहीं होगा। अपराधिक घटनायें बढ़ेगी। यान दुर्घटना संभव है। उत्तरी पूर्वी प्रान्तों तथा सूदूर पूर्वी प्रान्तों में कानून व्यवस्था की हानि होगी।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रगति होगी। दक्षिणी गोलार्ध के देशों में अग्निकाण्ड से क्षति होगी। कुछ राष्ट्र रोग अथवा महामारी से प्रभावित होंगे। विश्व में विनाशकारी शस्त्रों का भय होगा। उत्पादन में वृद्धि होगी। श्रमिकों तथा कर्मचारियों की समस्या का समाधान होगा। पश्चिमोत्तर भाग में राजनैतिक अस्थिरता तथा हिंसा होगी। चक्रवात का प्रकोप होगा। वाहन दुर्घटना तथा साम्प्रदायिक तनाव होंगे। अपराध तथा उपद्रवों की अधिकता होगी। मुस्लिम राष्ट्रों में मानवाधिकारों का उल्लंघन होगा। पूर्वोत्तर राज्यों में राजनैतिक उथल-पुथल, अग्निकाण्ड, बम-विस्फोट आदि से जनता को कष्ट होगा। महँगाई से जन-साधारण में असन्तोष, कहीं भयंकर भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा से जनधन की हानि होगी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कहीं भयंकर युद्ध की संभावना, कहीं भयंकर बाढ़ की स्थिति बन सकती है। किन्हीं दो देशों में तनाव से अमेरिका आदि देश राजनीतिक लाभ उठायेंगे। तूफान चक्रवात से भयंकर हानि हो सकती है। पाकिस्तान एवं किसी समृद्ध राष्ट्र नायक को भारी परीक्षा की घड़ी से निकलना पड़ेगा। चीन, जापान, रूस, तिब्बत आदि में भूकम्प, प्राकृतिक प्रकोप से धन हानि, दक्षिणी प्रान्तों में वाहन, यान दुर्घटना होगी। राहु, मंगल का षडाष्टक योग से मुस्लिम राष्ट्रों के प्रमुख शासकों को विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। विश्व व्यापार में परिवर्तन बनकर सुधार होने पर भी अनेक देशों में महँगाई, बेरोजगारी की समस्या आयेगी। वाद-विवाद व हंगामों का वातावरण बार-बार होगा। जिससे विकास में रुकावटें आयेंगी। राहु गुरु का नव पंचम योग एवं शनि मंगल का षडाष्टक योग से यूरोपीय देशों के सामने जटिल समस्यायें आयेंगी। आपसी विरोधी विचारधारा के कारण वीटो अधिकार योग करने से विवश होंगे। पाकिस्तान में आतंकवादी भस्मासुर पाक में ही बगावत का कारण बनेगा। राजनीतिक हत्या काण्ड होंगे। सेना शासन में सक्रिय रहेगी। भारत में नयी-नयी योजना बनेगी, जिससे महँगाई में कमी आयेगी। चीन, बंगलादेश, पाकिस्तान की गतिविधि पर ध्यान देना होगा। सीमाओं पर अतिक्रमण हो सकता है। भीषण दुर्घटना से जन धन की हानि होगी। अमेरिका, केनेडा, ब्रिटेन, स्पेन, इटली आदि देशों में मुद्रा अवमूल्यन के कारण आर्थिक मन्दी का वातावरण रहेगा। सूर्य राहु का षडाष्टक योग से भारत में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ संघर्ष पूर्ण होंगी। नेपाल में माओवादी व आई.एस.आई के बढ़ते सहयोग से भारत की सीमा प्रान्त प्रभावित होंगे। बाद की स्थिति भयावह हो सकती है। पूर्वी राष्ट्रों में वर्मा, भूटान, चीन, जापान में भूकम्प बार-बार होगा। उत्तरी प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाओं से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। अफगानिस्तान में सिया सुन्नी टकराव खतरा बनकर उभरेगा। वहाँ पर आतंकवादी हरकतों से हानि, भय तथा जनाक्रोश बढ़ेगा। केन्द्र स्थल व उत्तर प्रदेश, बिहार के क्षेत्रों में जनता में क्रोध की स्थिति बढ़कर तोड़फोड़, अग्नि काण्ड से हानि होगी। थोड़े समय के लिये चार ग्रहों का योग बनने से चीन, जापान, वियतनाम, रूस, तिब्बत, वर्मा आदि में भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि होगी। गुरु राहु का नव पंचम योग से छत्तीसगढ़, जम्बू काश्मीर आदि प्रान्तों में उग्रवादी ग्रुपों द्वारा भारी जन-धन की हानि होगी। बिहार में राजनीति गर्म रहेगी। अरब, ईरान, ईराक तथा पाकिस्तान राष्ट्रों में शासकों में आपसी मतान्तर बनकर विग्रह बढ़ेगा। संवेदनशील क्षेत्रों में तथा अशान्त सीमा प्रान्तों में सैन्यबल से संघर्ष होगा। कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में भयंकर युद्ध की स्थिति बनेगी। जनता स्थानान्तरण के लिये विवश होगी। मुस्लिम देश पूर्वोत्तर भारत में इस्लामीकरण की मनोवृत्ति को प्रेरित करके उपद्रव करा सकते हैं। असम, त्रिपुरा की तरफ विशेष ध्यान दें। मेघालय, मणिपुर आदि बंगला देशी बहुल प्रदेश पश्चिमोत्तर बिहार के सीमा में वातावरण अशान्त होगा। उत्तरी प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा आ सकती है। पूर्वी राष्ट्र वर्मा, भूटान, जापान में भूकम्प आ सकता है। जिससे जन जीवन अस्त व्यस्त होगा। देश में जटिल समस्याओं को उत्पन्न करेगा। ब्रिटेन, स्कॉटलैण्ड, जापान, रुस आदि में भारी परिवर्तन संभव है। यूरोप में किसी विशिष्ट प्रशासक व्यक्ति विशेष की मृत्यु व हत्या से शोक व्याप्त होगा। अग्नि काण्ड से हानि, कहीं विस्फोट व यान दुर्घटना से जन-धन की हानि का समाचार मिलेगा। इस समय फारस की खाड़ी में तनाव बढ़ सकता है।

भारत में धार्मिक विषयों पर तेजी दिखेगी। विदेशी व्यापार में प्रगति एवं घरेलु उद्योगों में प्रगति होगी। अन्तरिक्ष विज्ञान तथा तकनीकि ज्ञान का प्रसार होगा। प्रकाशन के क्षेत्र में मंदी हो सकती है। किसी अवांक्षनीय घटना का प्रभाव विदेशी संबंधों पर पड़ेगा, जिससे व्यापारिक साख पर अल्पकालीन प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। सरकार अपना कार्य दायित्व निष्ठापूर्वक करेगी। किसी प्रसिद्ध महिला राजनेता का वियोग होगा। सत्तापक्ष के समक्ष विपक्ष निर्बल होगा। किसी प्रमुख राष्ट्रीय दल में नेतृत्व परिवर्तन तथा विघटन का संकेत है। शेयर तथा सट्टा बाजार में अस्थिरता होगी। लौह, धातुओं, स्वर्ण, रजत में मंदी होगी। सर्राफा बाजार में तेजी होगी। उत्तरपूर्वी तथा दक्षिण में सैन्य संघर्ष तथा जातीसंघर्ष संभव है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्राकृतिक प्रकोप तथा भूकम्पादि से क्षति होगी। बजट में नवीन करारोपण का तथा आवास तथा स्वास्थ्य, चिकित्सा संबधी नीतियां पर विशेष प्रस्ताव होगा।

पश्चिमोत्तर भाग में चक्रवाती प्रकोप रहेगा। वातावरण में उष्णता अधिक होगी। पूर्व दक्षिण भाग के कुछ भागों में जल संकट तथा अकाल पड़ेगा। देश के मध्यभाग में वर्षा की अधिकता तथा पूर्वी भाग के कुछ क्षेत्रों शुष्कता से फसल को क्षति होगी। दक्षिण समुद्र तटीय भाग में तूफान का प्रकोप रहेगा। खरीफ की फसल का उत्पादन उत्तम रहेगा। सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न होंगे। अन्न में सस्ती रहेगी। रवी की फसल में साधारण हानि संभव है। तत्पश्चात उत्पादन संतोषप्रद रहेगा। रोग तथा कीटों से उपज को क्षति होगी। अनाज के भावों में प्रायः स्थिरता होगी।

विकसित देशों में सत्ता परिर्वतन होगा। पश्चिम में तथा पूर्वो भाग में सामाजिक व नस्लीय संघर्ष होगा। प्रमुख राष्ट्राध्यक्षों तथा संस्थानों पर आरोप प्रत्यारोप होगा। कल्याणकारी संस्थाओं तथा वित्तप्रदायी संस्थानों को धन की कमी होगी। पश्चिम भूभाग पर विशेषकर फारस के यवन राष्ट्रों मे सैन्यसंघर्व, सत्तादखल तथा स्त्रीयों तथा बच्चों के प्रति अपराध तथा उत्पीड़न की घटनायें घटित होंगी। किसी पर्यटन स्थल पर अग्निकाण्ड तथा अव्यवस्था से जनक्षति संभव है। अनैतिक आचरण तथा बाल अपराधों के प्रति जनाक्रोश होगा। पत्र-पत्रिकाओं, संचार माध्यमों पर सरकारी नियंत्रण रहेगा। पूर्वोत्तर भूभाग में मंगोल शासित राष्ट्र चीन तथा रुस में मानवाधिकार उल्लघंन तथा दमनकारी घटनायें होंगी। प्रमुख शेयर बाजारों में अल्पकालीन निवेश में उचित प्रतिफल प्राप्त नहीं होगा। सट्टा बाजार में क्षति, किसी वित्तीय अपराध का विषय प्रभावित करेगा। स्वर्ण में मंदी तथा चांदी तथा लौह पदार्थों के भावों में अल्प वृद्धि के पश्चात मंदी होगी। विलासित वस्तुओं का उत्पादन अधिक होगा। कारागृहों में अराजकता होगी। किसी संचारी रोग का प्रभाव दिखाई पड़ेगा। स्वच्छ ऊर्जा के स्रोतों का प्रसार होगा।

—सम्पादक

ग्रहण विवरण

सन् 2025 में विश्व में कुल 4 ग्रहण लग रहे हैं। जिसमें 2 सूर्यग्रहण तथा 2 चन्द्रग्रहण है। भारत में एक चन्द्रग्रहण दृश्य होगा।

1. खग्रास चन्द्र ग्रहण—दिनांक 13/14 मार्च 2025 को लगने वाला खग्रास चन्द्र ग्रहण **भारत में दृश्य नहीं होगा।** यह ग्रहण यूरोप, अधिकांश मध्य एशिया, अधिकांश पश्चिम अफ्रीका, उत्तरी व दक्षिण अमेरिका, पैसफिक क्षेत्र, अटलांटिक, आर्कटिक, अन्टार्कटिका क्षेत्र में दृश्य होगा। यूनिवर्सल समयानुसार यह ग्रहण सूर्यास्त के समय खण्डचन्द्रग्रहण के रूप में इसका प्रारंभ घं. 5:9 पर होगा तथा इसका मोक्ष घं. 8:48 पर होगा। यूनिवर्सल समयानुसार खग्रासचन्द्रग्रहण का प्रारंभ घं. 6:25 पर होगा तथा इसका मोक्ष घं. 7:31 पर होगा। यह खग्रासचन्द्रग्रहण अमेरिका, मेक्कसिको, ब्राजील, पनामा, कोलम्बिया क्षेत्रों में दृश्य होगा। ग्रहण का मध्य घं. 6:59 पर होगा। इसका ग्रासमान 1.1784 पर होगा।

2. खण्ड सूर्य ग्रहण—दिनांक 29 मार्च 2025 का खण्डसूर्यग्रहण **भारत में दृश्य नहीं होगा।** यह ग्रहण यूरोप, उत्तर व पश्चिम अफ्रीका, अटलांटिक, आर्कटिक क्षेत्र में दृश्य होगा। यूनिवर्सल समयानुसार यह ग्रहण सृदुर उत्तर पूर्व क्षेत्र में इसका प्रारंभ घं. 8:50 पर होगा तथा इसका मोक्ष घं. 12:43 पर होगा। इस ग्रहण का मध्य घं.10:47 पर होगा। इसका ग्रासमान 0.9361 पर होगा।

3. खग्रास चन्द्र ग्रहण—भाद्रपदशुक्ल 15, रविवार 7 सितम्बर 2025 यह खग्रास चन्द्र ग्रहण **सम्पूर्ण भारत दृश्य होगा।** यह भारत के अलावा यूरोप, एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका के पश्चिम भाग में, दक्षिण अमेरिका के पूर्व में, रुस, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया, अटलांटिक, पैसफिक आर्कटिक, अन्टार्कटिका आदि क्षेत्रों में दृश्य होगा। भारतीय समयानुसार चन्द्रास्त के समय आस्ट्रेलिया महाद्वीप के पश्चिम भाग में ग्रस्तास्त खण्डचन्द्रग्रहण के रूप में इसका प्रारंभ रात 9:57 से होगा तथा चन्द्रोदय के समय अफ्रीका महाद्वीप के पश्चिम भाग में खण्डचन्द्रग्रहण मोक्ष रात 1:26 पर होगा। खग्रासचन्द्रग्रहण के रूप में यह भारतीय महाद्वीप, अरब क्षेत्र, चीन, आस्ट्रेलिया, रुस, चीन, जापान में दृश्य होगा। खग्रासचन्द्रग्रहण का प्रारंभ रात 11:1 से होगा तथा मोक्ष रात 12:23पर होगा। इस ग्रहण का मध्य रात 11:42 पर होगा इसका ग्रासमान 1.362 होगा।

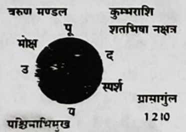

काशी	घटी	पल	घंटा मिनट	भा०मा०स० घं०मि०
स्पर्श	40	23	रा 9।57	21।57
मिल्लन	43	2	रा 11।1	2301
मध्य	44	45	रा 11।42	23।42
उन्मीलन	46	28	रा 12।23	24।23
मोक्ष	49	5	रा 1।26	25।26

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
लाभ	सुख	माननाश	मृत्यु तुल्य कष्ट	स्त्रीपीड़ा	सौख्य
तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
चिंता	व्यथा	श्री	क्षति	घात	हानि

4. खण्डससूर्यग्रहण—21 सितम्बर 2025 ई0। यह खग्राससूर्यग्रहण **भारत दृश्य नहीं है।** यह सूर्यग्रहण केवल दक्षिण गोलार्द्ध में आस्ट्रेलिया महाद्वीप के दक्षिण भाग, अटलांटिक क्षेत्र, अन्टार्कटिका क्षेत्र में यह सूर्योदय के समय दृश्य होगा। यूनिवर्सल समयानुसार खण्डसूर्यग्रहण का प्रारंभ सायं 5:29 से फिजी द्वीपसूमह के सूदूर उत्तरीपूर्वीक्षेत्र से होगा तथा अटार्कटिका क्षेत्र के सूदूर दक्षिण पूर्वीक्षेत्र में इसका मोक्ष रात 9:54 पर होगा। यूनिवर्सल समयानुसार इस ग्रहण का मध्य रात 7:42 होगा। इसका ग्रासमान 0.8550 होगा।

सूतक विचार—धर्मशास्त्र के अनुसार चन्द्रग्रहण से 9 घण्टे पूर्व तथा सूर्यग्रहण में 12 घण्टे पूर्व ग्रहण का सूतक होता है। इसमें बालक, वृद्ध और रोगी को छोड़कर अन्य लोगों को भोजन आदि नहीं करना चाहिए। **विशेष**—सूर्यास्त पश्चात इस सूर्य ग्रहण का मोक्षकाल माना जायेगा।

प्रयाग कुम्भ महापर्व

प्रयागराज में महाकुम्भ पर्व (12 वर्ष) के अन्तराल पर होता है, '**मेषराशि गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ। अमावस्या तदा योगः कुम्भाख्यः तीर्थनायकौ॥ मकरे च दिवानाथे ह्यजगे च बृहस्पतौ। कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यति दुर्लभः॥**' गुरु मेषराशि तथा सूर्य-चन्द्र के मकरराशि में होने पर ऐसा योग माघकृष्ण अमावस्या को होता है। उस समय प्रयाग में त्रिवेणी के संगम तट पर अमृत कणों की वर्षा होती है। किन्तु इस सन्दर्भ में एक अन्य श्लोक भी प्राप्त होता है। '**वृषराशि गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ। अमावस्या तदा योगः कुम्भाख्यः तीर्थनायकौ॥ मकरे च दिवानाथे वृषराशिगते गुरौ। प्रयागे कुम्भयोगो वै माघमासे विधुभये॥** इसके अनुसार वृषराशि में गुरु और मकरराशि में सूर्य-चन्द्रमा के आने पर माघकृष्ण अमावस्या को प्रयागराज में महाकुम्भ पर्व होता है।

प्रयागराज में कुम्भ के तीन प्रमुख स्नान होते हैं—

1. प्रथम स्नान **मकर संक्रान्ति** (मेष या वृष में गुरु माघ माह में होने पर) 14 जनवरी, मंगलवार 2025।
2. द्वितीय स्नान **माघकृष्ण अमावस्या** (मुख्य स्नान, **मौनी अमावस्या**) 29 जनवरी, बुधवार 2025।
3. तृतीय स्नान **माघ शुक्ल पंचमी (वसन्त पंचमी)** 3 फरवरी, सोमवार 2025।

ज्योतिषकर्ता :
पं.श्री श्रीकान्त तिवारी
सामने घाट, वाराणसी
पं. श्री विशाल उपाध्याय
भदैनी, वाराणसी
पं. श्री पुनीत मिश्र
भरत नगर कालोनी, मौजा हाल,
पंचक्रोशी मार्ग, पाण्डेयपुर, वाराणसी-7
श्री छेदीराम (ज्योतिर्विद)
भोजूबीर, सदर तहसील, वाराणसी
प्रकाशक :
रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन
कचौड़ीगली, वाराणसी-1
फोन-0542-2392543, 2392471
E-Mail : rupeshpanchang@gmail.com
मुद्रक : **भारत प्रेस**, कचौड़ीगली, वाराणसी-1

हर प्रकार की पुस्तकों के प्रकाशक, मुद्रक एवं थोक विक्रेता—
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी-1